

रामायण रामाश्वमेध ॥

आठवां काण्ड ॥

सो० बन्दौं चरण पुनीत गुण प्रतिपालन गजबदन ।
जे पूजत करि प्रीत होत परम कल्याण मय ॥
बन्दौं गुरुपद रेनु मनरञ्जन अञ्जनदृगन ।
मुदमङ्गल सुखदेनु सूझि परै रघुबर चरित ॥
बन्दौं तनय समीर ज्ञानखान रघुनाथ प्रिय ।
जासु हृदय रघुबीर बसहिं सदा शर चापधर ॥
बन्दौं अज सनकादि सनकसनातन जय बिजय ।
ऋषि परमारथ बादि जे नित गावहिं रामयश ॥
बन्दौं सिन्धु सुजान शैलसुता षटमुख सहित ।
सकलसुमङ्गलखान नन्दीपति गिरिजारमण ॥

बन्दौं रघुबर पदजलजाता । आरतिहरण परम सुखदाता ॥
पुनि लक्ष्मणयुगचरण नमामी । बीर धुरीण राम अनुगामी ॥
बन्दौं चरण भरत द्वउ भाई । शील सनेह ज्ञान अधिकाई ॥
बन्दौं तीरथराज प्रयागा । मज्जनते कोटिन अघभागा ॥
बन्दौं साधु सन्त जग जेते । करौं प्रणाम नाय शिर तेते ॥
गिरा मूक शारद श्रुति शेशा । सुर मुनि नारद सप्तऋषेशा ॥

महि पाताल अकाश समेता। भूधर विटप पयोनिधि सेता॥
बन्दौं करजोरे सब काहू। दनुजमण्डली रविशशिराहू॥
यह वर देउ धरौं पद माथा। बरणौं यश निर्मल रघुनाथा॥
दो० श्रोता वक्ता युगों युग जे प्रवीण गुणखान।
कृपाकरहु सेवकसमुझि तजिइरषा अभिमान॥
आगर जेते जीव जहाना। बरणौं सबहिं जोरियुगपाना॥
रघुबर चरित चहूंदिशि पावन। सुखदभवनशुभ मोरसुहावन॥
स्वइ रघुबीर अनूपम गाथा। कहिहौं गुरुपद रजधरि माथा॥
जोशिवमुदितउमासनभाषी। सुनतकथारुचिअतिअभिलाषी॥
बोलीं सरल सुधासम बानी। पारवती गिरिराज भवानी॥
लव कुश जन्म यथा श्रुतिगाई। नाथ कृपाकरि कहौ बुझाई॥
सुनत बचन गिरिजा त्रिपुरारी। प्रभुपदप्रीतिजानिअधिकारी॥
धन्य धन्य हिमवन्तकुमारी। तुमसमनहिंकउजगहितकारी॥
जगहित प्रश्न तुम्हार भवानी। कहौंसुनहुनिश्चयजियआनी॥
दो० सुखसागर पावन परम रघुबर चरित अनूप।
चरण सरस्वति नायशिर बरणौं मतिअनुरूप॥
करौंललित शुभचरितअरम्भा। ज्यहिसुनिमिटैमोहमददम्भा॥
एक समय शङ्कर अविनाशी। सुखमा सदन ज्ञान गुणराशी॥
योगासन रवि कामद सोहै। देखि स्वरूप चराचर मोहै॥
जगजननी तहँ शैलकुमारी। छिनछिनपतिआयसुअनुसारी॥
जो अनुशासन शङ्कर पावैं। करत सोकाज अबार न लावैं॥

नित नूतन हरिचरित अनूठे । प्रथमहिं शम्भुबचनकहमीठे ॥
गदगद कंठ होहिं बश प्रेमा । कृपानिधान शम्भु दृढ़ नेमा ॥
दशा बिलोकि मुदित गिरिजाई । बाढ़ी प्रीति चरण रघुराई ॥
प्रथमहिं ते सब चरित सुनावा । सियबनगमनसुनतदुखपावा ॥

दो० नयन नीरभर बिकल तनु जक्कमात करजोरि ।
बोलीं सम्मुख प्राणपति बचन अमीरस बोरि ॥

नाथ चरित प्रभु सिन्धुअपारा । को अस मूढ़ जो चाहै पारा ॥
प्रथमजोकहसियविपिननिकारी । सुनि सन्देह भयोउरभारी ॥
कयहि कारण प्रभु दीन सनेही । दीन्ह्यो बास विपिन बैदेही ॥
का अपराध जानकी कीन्हा । कृपासिन्धुजेहिलगिबनदीन्हा ॥
भयो शोच प्रभु शोच निवेरी । कहो बुझाय जानि म्वहिंचेरी ॥
यावत नभ विधि विष्णु पुरारी । प्रथमलीकजगअवनिकुमारी ॥
जासु दृष्टि उपजैं गुणखानी । कोटिन रमा उमा ब्रह्मानी ॥
इन्द्रबधू सुर मुनि ऋषि नारी । सदा जासु रुख रहैं निहारी ॥
त्यागन विपिनयोग नहिंसीता । महादेव कह विधि विपरीता ॥

दो० विपिनबाससुनिबिकलभइँ गिरिनन्दिनीखगेश ।
प्रभुइतिहास अनूप तब कह्यो बुझाय महेश ॥

असकछुदशा विलोकिभवानी । बोले हर प्रिय कोमल बानी ॥
अतिअपार प्रियगतिजगदीशा । कोजानै कह अस गौरीशा ॥
धरि उरधीर भरम सब खोई । सुनहु कथा तुमपूछ्यो जोई ॥
पिता बचन सुनि रघुकुलकेतू । गवने बन सिय अनुज समेतू ॥

मिलहिंविपिनऋषिकुटीअनेका। सुंदर विमल एकते एका ॥
करत मुनिन मग दण्डप्रणामा । जाहिंचलेप्रभुछबिअभिरामा ॥
देखि प्रीति ऋषि मुनिवरनारी । प्रेमविवशभइँ जनककुमारी ॥
अस अभिलाष सियाउरआनी । ऋषिन बधूसन बोलीं बानी ॥
करि पूरण पितु वचन प्रमाना । आवहिंकुशलअवधभगवाना ॥

दो० तब मैं आउब अवधसे पुजिहौं सबके पांय ।
पहिरावों भूषण वसन भोजन विविध कराय ॥

अस लालसा सिया मनमाहीं । प्रभुसनकहत मुनीश लजाहीं ॥
प्रभु सियहृदय मनोरथ जाना । बोले बिहँसि राम भगवाना ॥
जो रुचिप्रिय तुम्हरे उर होई । मांगहु बेगि देउँ बर सोई ॥
मोमनकी रुचि जानहु स्वामी । घटघट के तुम अन्तर्यामी ॥
तदपि नाथ ऐसो बर पावों । बहुरिनाथ यहि काननआवों ॥
एवमस्तु कह रघुकुलराया । दीन सुभगबर सियमनभाया ॥
अवध चलब जब अवधि सिराई । तुम्हैं बिपिन सँग लषणपठाई ॥
विधिवत पूज्यो सुरमुनि पाऊ । रहै न फिर कछु मनपाछिताऊ ॥
जब लग साध करयो बनबासू । ह्वैहै सब विधि तुम्हैं सुपासू ॥

दो० सुनिप्रभुवचन विनीतअति जनकसुता खगनाथ ।
चरण सरोरुह नाथ निज मुदित नवायो माथ ॥

अस कहि विपिन चले रघुबीरा । सीता सहित अनुज रणधीरा ॥
वन बसि चरित कीन्ह भगवाना । सो खगेश नहिं जाय बखाना ॥
सोकि सकैं अब कहि बागीशा । शारद कोटिन कोटि अहीशा ॥

कौन लेख तहँ चेरे दासू । प्रभु पद प्रीति न दृढ़ बिश्वासू ॥
बीते अवधि अवध प्रभु आये । सुनहु उमा सो चरित सुहाये ॥
आयसु पाय केकयी माता । बैठे राज्य राम सुरत्राता ॥
पुरजन आय भेंटधरि आगे । बोले बचन प्रेमरस पागे ॥
नाथ आज बड़िभाग्य हमारी । चरणकमलरजनयननिहारी ॥
सुर नर असुर नाग मुनि देवा । मिलिमिलिगयेनजान्योभेवा ॥
छं० नहिं भेव कोऊ जानमिलि प्रभु देव मुनि हरषित चले ।
तब आय ब्रह्मा कीन अस्तुति जोरि युगपानी भले ॥
अब नाथ चालिये लोकनिज बहुभांति नरलीला करी ।
मुनि देवतन की बन्दि छोरी भार सब बसुधा हरी ॥
सो० सुनि चतुरानन बैन प्रेम लपेटे रसभरे ।
बिहँसे राजिव नैन उतर दीन्ह कउ जान नहिं ॥
दो० रहे उमा हमहूं वहां देखा सकल समाज ।
प्रजा सुखी अघलेश नहिं रामचन्द्रके राज ॥
दूत चारि प्रभु लीन बुलाई । बोले बचन मधुर जलशाई ॥
देश कोश पुर कुशल भलाई । निशिदिनमोहिंसुनावहुआई ॥
आयसु पाय दूत हरषाने । निजनिज कारजगये सयाने ॥
दिनप्रति खबरिअवध पहुँचावैं । रामचरण पङ्कज शिरनावैं ॥
बीते दिवस कछू यहिभांती । परम अनन्दअवध दिनराती ॥
एकसमय दशरथ कुलनायक । सुन्दरबदनश्याम सुखदायक ॥
राजसभा शोभित रघुराजा । अनुजसहितपुरलोगसमाजा ॥

राजनीति मुनिराज सुनावें। सनिप्रभु अनुजसहितसुखपावें॥
और विविध इतिहास पुराना। कहें वशिष्ठ सुनें भगवाना॥
दो० त्यहि अवसर यकदूततहँ खबरि सुनायो आय।
कछूप्रकट कछुराखिउर देखि सभा सकुचाय॥
दूतदशा चकित प्रभु जाना। कम्पितगातअधरकुम्हिलाना॥
पूंछा निकट बुलाय सप्रीती। कहहु यथारथ नीतिअनीती॥
लाग्यो कहन दूत शिरनाई। सकल चरित रघुबरहिसुनाई॥
नाथ एक रजगुन रिसिआई। पतिगृह तजि कहुँरैनिगवांई॥
भोर भये प्रातहि उठिआई। देखत क्रोध रजक उरछाई॥
मारयो बहुविधि कहिकटुबानी। रेत्रियनिलजकलहकीखानी॥
राम समान मोहिं तैं जाने। रावणहरी नारि गृह आने॥
उनसम मैं नहिं सुनु अपकारी। जो राखौं त्वहिंबिनाविचारी॥
वे समरथ कोशल पुर राऊ। भयबशकहतनअवधसभाऊ॥
दो० बिन सब भाइन के कहे जो राखौं मैं तोहिं।
तुरत उठावें जातिते जाति कबीला मोहिं॥
दूतवचन अटपट सुनि काना। सकलसभासुनि अतिदुखमाना॥
नीच जाति नहिं कीन विचारा। जो असअनुचित बैनउचारा॥
भयउ शोचवश अवध समाजू। विधिअबकीनचहतकाआजू॥
जाना राम सभा भय पाई। बोले मधुर वचन हरषाई॥
बीती निशा याम युग भाई। शयनकरहुनिजनिजगृहजाई॥
आयसुपाय चरणशिर नाई। गये भवनसब करत बड़ाई॥

गुरुपद रेणु शीश धरि रामा । भाइनसहितगये निजधामा ॥
अनुज समेत कीन्ह ज्यवनारा । पगधारे मन्दिर स्ववनारा ॥
ज्यहि मन्दिर सोवहिं रघुराई । रचना तासु बरणि नहिंजाई ॥

छं० नहिं बनै बरणत धामशोभा चहूंदिशि सुवरणमई ।
बागीश शारदखोजि उपमा थकितह्वै बौरी भई ॥
मणिहेममुक्तालसितबहुबिधिजगमगतदेखतबनी ।
मतशेषनिगमपुराणसकुचत कौन बिधिचेरेभनी ॥

दो० ज्यहि मन्दिरस्ववनार प्रभु विविध विचित्रवितान ।
लखिरचना विधिचारमुख हृदय बहुत सकुचान ॥

पुनि सबभाइनआज्ञादीन्हा । निजनिजमहलशयनसबकीन्हा ॥
सोय राम परयङ्क सोहाई । पौढ़ीं सिया रजायसु पाई ॥
अतिसिय देखि प्रसन्नकृपाला । बोलीं मञ्जुल गिरारसाला ॥
नाथ विपिन महँ जो बरदीन्हा । अबशिनाथसो चाहौं कीन्हा ॥
आयसुहोय जाउँ बन स्वामी । सुनहु विनयमम अंतर्यामी ॥
सुनि प्रभु सीतावचन मनोहर । सजहुसाजहँसिकह्योबिहगबर ॥
भोरहोत प्रिय करहु पयाना । जायहुविपिनवचन परमाना ॥
बोलत हँसत नयन अलसाने । सोवनहेतु पीत पट ताने ॥
राम सिया सोवत यकसाथा । लखिशोभा रतिकामलजाता ॥

छं० रतिकाम होहिं सनाथ शोभा देखि सीतारामकी ।
बरणत परस्पर छबि सुहावन राम सुखमा धामकी ॥
भये भोर प्रथम विदेहतनया सखीसँग महलनगई ।

गहि चरण कौशल्या सुमित्रा केकयी आशिषलई ॥
बहुभांति सासुन दीन्ह आशिष चूमिबदननिहारहीं ।
चेरे सकलरनिवास दशरथ हेममणिगण वारहीं ॥
दो० होतप्रात रघुकुल तिलक करि सरयू अस्नान ।
तबहिं नहाय बशिष्ठ पहँ आये कृपानिधान ॥
गुरुपूजा करि विविध प्रकारा । आये गृह अवधेशकुमारा ॥
सबमातन पद नायो माथा । आशिषपाय हरषि रघुनाथा ॥
भरत लषण रिपुसूदन बीरा । आये जहँ राजित रघुबीरा ॥
कीन्ह प्रणाम जोरि युगपानी । दीन्ह अशीषराम सुखमानी ॥
बहुरि जाय मातन शिरनावा । आशिष पाय परमसुखपावा ॥
पुनि सीतापद नायो शीशा । लह्यो परमसुखपायअशीशा ॥
भोजन कीन्ह संग सब भाई । बैठे प्रभु सिंहासन जाई ॥
पुरवासी सब आय जुहारी । आदरसहित राम बैठारी ॥
आये तब बशिष्ठ मुनि ज्ञानी । करिदण्डवतमुनिहिंसनमानी ॥
दो० लगे कहन मुनिराज तब राजनीति कुलरीति ।
सुनहिं राम भाइनसहित अतिआनन्दसप्रीति ॥
सन्ध्या जानि उठे भगवाना । सरयूजाय कीन्ह अस्नाना ॥
करि नितकर्म भवन तब आये । भारतको तब बोलि पठाये ॥
आयभरत प्रभुपद शिर नाई । बैठे राम रजायसु पाई ॥
बोले रामचन्द्र युगपावन । सुधा सुरस मृदुबचनसुहावन ॥
तात कहौं तुमसन यह बानी । सिय बनगमन प्रातमैं ठानी ॥

सकहु तो तात पठै बन आवहु। भेदनयहतुमसियहिसुनावहु॥
दूतवचन सुनिकै निज काना। ताते अस प्रण अबमैं ठाना॥
सुनि प्रभु बचन भरत रणधीरा। भयोविकल लोचन बहनीरा॥
हृदय शोच मुख आव न बानी। समयदेखि कछुकह्योभवानी॥
दो० धरिधीरज बोले भरत सुनहु भानुकुलचन्द।
प्रतिउत्तर नहिं दैसकों बिनय करौं रघुनन्द॥
सियको कहा दोष प्रभु लाई। जोअसप्रणकरि मोहिंसुनाई॥
आयसु नाथ करौं शिरराखी। फिरनअवधआवौंअसभाखी॥
कह करजोरि शपथ प्रभु तोरी। मैं नहिं आउब अवधबहोरी॥
सुनि लघुभ्रात बचन रघुराई। सियपद प्रीति बहुत दृढ़पाई॥
कहिबहुचरित अनुज समुझाई। बहुरिराम रिपुदवन बुलाई॥
आय शत्रुहन बैठि निहोरी। दण्डप्रणाम कीन्ह करजोरी॥
आशिष दीन्ह निकट बैठावा। अतिसुन्दर मृदुबचनसुनावा॥
सुन शत्रुहन कीन्ह प्रणयेही। आवहु छोड़ बिपिन बैदेही॥
इतना करहु तात हरषाई। साजिविमान सियहि लैजाई॥
छं० रथसाजि सियहि चढ़ाय प्रातहि कालबन लैजाइये।
जहँसघन बन तहँराखि सीतहि तात फिरपुरआइये॥
यहिभांतिकहकरुणाअयन रिपुदवनसुनिठगिसेरहे।
कहि दास चेरे प्रेमवश गहि चरण मृदुबानीकहे॥
असकवन चूकबिचारि प्रभु जो जानकीको परिहरी।
यहसमय नहिं सियत्रसहिं बन इतनोकहो मेरोकरी॥

बरुस्त्रवहिं बालकअवधमें तबनाथ आयसुशिरधरौं।
कछुकालबीते उचितअस रघुबंशमांगि बिनतीकरौं॥
सो० यदपि कही अतिनीति रिपुसूदन भारतअनुज।
बोलेबचन सप्रीति बिहँसिराम रघुकुलतिलक॥
नहिं त्यागौं जो जनककुमारी। लेहुँ अयश शिर पातकभारी॥
होय पाप भल कहै न कोई। करहु उपाय तात अब सोई॥
जेहि न होय पाछे पछितावा। अस बिचार मोरेमन आवा॥
रघुबंशिन के कुल चलिआई। प्राणजायँ बरु बचन न जाई॥
भोरहोत सिय संग लिवाई। त्यागि बिपिनमा आवोभाई॥
प्रभुरुख लखि शोचे रिपुदमनू। जानासत्य बिपिन सियगमनू॥
अतिब्याकुलतनकी सुधिनाहीं। परेतुरित मूर्च्छितक्षितिमाहीं॥
देखि अनुजगति श्री रघुराई। सियबिछोहदुखउर अधिकाई॥
कह प्रियबचन राम रणधीरा। समुझायो रिपुसूदन बीरा॥
दो० आयसु दीन्ही जाहुगृह चले चरण शिरनाय।
पठयदूत लिय बोलितब लक्ष्मण कहँ रघुराय॥
लक्ष्मण आय चरण शिरनाई। दीन्हअशीष मुदितरघुराई॥
अति बिनीत बोले मृदुबानी। प्रभुआगे अब सुनहु भवानी॥
आयसु होय नाथ सो करहूं। बार बार पदपंकज धरहूं॥
कौनसोकाज जाहिलगिस्वामी। कीन शोचउर अन्तर्य्यामी॥
जो सेवकहि रजायसु होई। पद शिरनाय करी प्रभु सोई॥
जो न करौं आयसु रघुनाथा। तौ न धरौं धनुशायक हाथा॥

जबलग जीवरहै तन स्वामी । तबलगमोहिंजान्योअनुगामी॥
सेवक धर्म्म स्वामि सेवकाई । करियसदातनमन चितलाई ॥
जो प्रभु कहौं कपट छलराखी । ईश सजाय देहिं शिवसाखी ॥
दो० अनुजबचन सुन्दरसलिल बिगतमोह मदमान ।
सुनि हरषे रघुकुल कमल बोले बचन प्रमान ॥
तुम सबलायक शीलनिधाना । बीर धुरीण तात मैं जाना ॥
कस न नीति राखो तुम भाई । दीन सबै बिधि ईश बड़ाई ॥
अस प्रण कीन्ह सुनो मैं ताता । गवनहिंबन सियहोतप्रभाता ॥
विपिनत्यागिमिथिलेशकुमारी । आवहु तात जाउँ बलिहारी ॥
सुनत बचन रघुवंश खरारी । लक्ष्मणउर असमंजस भारी ॥
भई दशा लक्ष्मण की कैसी । पङ्ख बिहीन बिहँग गति जैसी ॥
जो सियको आवों बन त्यागी । मोहिंसमानकोअधमअभागी॥
जो न राम आयसु अनुसरहूं । कोटिनजन्मअयशशिरधरहूं॥
दोउ भांति दारुण दुखब्यापा । बरणौंको उर लषण कलापा ॥
दो० पुनि धरिधीरज लक्ष्मण हाथजोरि शिरनाय ।
बोले सम्मुख अवधपति गिरा बिनीत सुहाय ॥
यदपिनाथ अनुचितमहा त्यागन जनककुमारि ।
तदपि नाथ आयसु करब सेवक धर्म्म बिचारि ॥
उठेत्वरित तजिसकल गलाना । कह्यो सारथी साज बिमाना ॥
सिय पहँगये बिकल अतिभारी । दोउकरजोरि बिनयअनुसारी॥
मातु विपिन कर साजहु साजा । आयसुमोहिं दीन्ह रघुराजा ॥

चलहु विपिन आवहुँ पहुँचाई। सेवकउचित स्वामिसेवकाई॥
सिय समुभयो नहिं देवरबानी। सुनतबचन अतिशयहरषानी॥
बहु भोजन पकवान मिठाई। भूषण बसन गिनाय न जाई॥
होत प्रात सिय रथ बैठाई। लक्ष्मण चले राम शिरनाई॥
चलतासियाअशकुनभये भारी।तदपिलख्योनहिंजनककुमारी॥
हांक्यो रथ लक्ष्मण बलवाना। पवनथकित अतिवेग उड़ाना॥
दो० उतरि नदीतमसा त्वरित दीख गोमती आय।
नित्यक्रिया करि सियसहित पहुँचेसुरसरिजाय॥
रथ ते उतरि कीन्ह परणामा। सियसमेतलक्ष्मण बलधामा॥
भोर होत उतरे सुरसरी। सघन विपिनकी मारग धरी॥
देखिविपिनघनअतिअँधियारी। केहरि नाद करैं जहँ भारी॥
देखि बिटप बटछांह घनेरो। सियलक्ष्मणतहँ लीन्हबसेरो॥
बिन भोजन सो बासर खोई। बटतर दोउ मूरति रहे सोई॥
निशाबिगत सोवत सिय जागी।देखिबिषमवनअतिभयलागी॥
सहम सहित लक्ष्मणसों बोली। पीपरपात सरिस तन डोली॥
यहवन नहिंजहँ मुनितपकरहीं। खगमृगमुदितबैरतजिफिरहीं॥
यह वन तात भयङ्कर भारी। डरपतउर बनघनहिं निहारी॥
दो० मैं जान्यों रघुनाथ मोहिं परमपातकी जान।
गवहिं निकास्यो देशते दशरथकुल के भान॥
ताते यह वन नाथ पठाई। जहँ मोहिं बाघ सिंहधरिखाई॥
तुमहिं न दोष तात कछु लागी। मैं पापिनिसबभांतिअभागी॥

असकहिपुनिविलापकरिसीता।देखिविपिनभइअधिकसभीता॥
हा रघुनाथ कीन नहिं नीका। तज्योमोहिंदशरथकुलटीका॥
नाथ समुझि देखो मन माहीं। तुमबिन प्राण रहैं घट नाहीं॥
तुम सबलायक त्रिभुवनईशा। काहबिचारितज्योजगदीशा॥
देखि सियागति लक्ष्मणयोधा। बिधिगतिबामसमुझिपरबोधा॥
धरो धीर कह लषण सुबानी। पोंछ्योनयन नीरनिजपानी॥
तलफत बहुत बिकल बिनुबारी। सूख्यो कण्ठ विदेहकुमारी॥
लायहाथ मुख सिय जलमांगी। देखि लषण उर दायालागी॥
धरो धीर जल लावों माता। असकहि वचनचले सुरत्राता॥
॥ दो० देखी लक्ष्मण सियागति बिनजल त्यागत प्राण।
। चलेलेन जल विकलअति योजनएक प्रमाण॥
करुणा करत विविध वैदेही। सो दुख बरणिजाय अबकेही॥
परीमुरछि ब्याकुल क्षितिमाहीं। देखिदशाबनचर अकुलाहीं॥
रघुबर बिरह शूल उरब्यापी। दारुणविपतिअधिकतनकांपी॥
दुखित श्रमित गइसोय भवानी। लक्ष्मणतबजलघटभरिआनी॥
लखिमुर्च्छितक्षितिअवनिकुमारी। भेलक्ष्मणदुखकेअधिकारी॥
भसम होन हित रच्यो उपाई। नभबानी त्यहि समय सुनाई॥
गवनहु लषण अवधकी घाहीं। जियै बाल कछुसंशय नाहीं॥
सुनिनभ गिरा लषण बलधारी। चढ़ि बटडार बांधि घटवारी॥
धरिधीरज उर अनुज खरारी। जोततुरित रथअवध सिधारी॥
॥ दो० मनहींमनपदबन्दिसिय बहुबिधि कीन्हनिहोर।

मनमलीनतनक्षीणअति हांक्योरथपुरओर ॥
त्यागि सियाबन सघन अनेरी । लक्ष्मण अवध चले रथफेरी ॥
सियाबिरह अतिदीन दुखारी । भय सभीत प्रिय बन्धुखरारी ॥
चौथे दिवस अवध में आई । रघुनायकपद शीश नवाई ॥
पूछा राम सिया कुशलाई ।तजिक्यहिबनसियआयहुभाई॥
ब्रह्मावर्त्त सघन बन भारी । आयों त्यागि विदेहकुमारी ॥
नाथ विरहगइ मुरछि भवानी । तब मैं चल्योंप्रभुशारँगपानी ॥
सुनि रघुबीरहृदय दुख पावा । पुनिनिजराज्यकाजचितलावा ॥
सुनि यहचरित सकलपुरबासी । शोचप्रवश हरिलेत उसासी ॥
एककहैं नहिंविधिभलकीन्हा ।जो असबिपतिजानकिहिदीन्हा॥
छं० असबिपतिदीनजो जानकी बिनकाजरघुबरपरिहरी ।
जगसकल अपयशमोटबांधि बनायशिरअपनेधरी ॥
असकहैं पुरनरनारिमिलि दशपांचउरशोचहिंसही ।
गुरुसचिव कोउन बुझायरामहिंउचितकीबातेंकही ॥
सो० विधिअस करतबकीन्ह हरयोबुद्धिपुरलोगसब ।
कोउनमन्त्रअसदीन्ह समयनहींसियबसहिंबन॥
घेरे पुरनरनारि शोचहिं ब्याकुल जहँ सुनहिं ।
यथा मीन बिनबारि तलफैं दोषलगाय विधि ॥
कौशल्यादि मातु उर शोचू । किमिकहिसकौंकहैंविधिपोचू॥
भयो देश पुर शोक निवासू । कहैं दीन प्रभु सिय बनबासू ॥
यह इतिहास अनूपम गाई । आगे कहौं सुनहु खगराई ॥

जब लक्ष्मण आये पहुँचाई। सभयविपिन प्रभुआयसुपाई ॥
परयो बुन्दजल घट मुखमाहीं। जागी सियकहुँ कोऊनाहीं ॥
अतिब्याकुल करि रोदनभारी। हालक्ष्मण तुमसमहितकारी ॥
क्यहिअपराध मोहिं तुमत्यागे। गयो अवधलखिसोवतभागे ॥
तुमहिंदेखि कछुधीरजरह्यऊ। तुमबिनअधिकमोहिंदुखभयऊ ॥
अब क्यहिभांति धरों उरधीरा। देखिविपिनअतिगहनगँभीरा ॥
दो० यहिप्रकारअब जानकी शीशधुनहिबिलखाय।
समयविषाद न जातकहि काहू ते खगराय ॥
गमनविपिनतबसुनि खगपाला। बायससों बोले त्यहिकाला ॥
पूछों नाथ चरण शिरनाई। यह कौतुक प्रभु मोहिंसुनाई ॥
मायाकृत अवतार भवानी। नेतिनेतिकहि निगम बखानी ॥
जासुदृष्टि जग यावत माया। होहिं नाथ परिपूरण काया ॥
शारद शेष देव मुनिवृन्दा। सेवहिंचरण त्यागिछलछन्दा ॥
सो कि विदेहसुता बन योगू। सुनिकौतुकविस्मितभयेलोगू ॥
कहहु बुझाय सो बायसनाथा। कससियत्यागकीन्हरघुनाथा ॥
सुनि खगेश के बचन अनूपा। साधुसाधु कह बायस भूपा ॥
प्रश्न तुम्हार नाथ म्वहिं भाई। चाहहु सुनन राम प्रभुताई ॥
सो० कहा बचनअस काग खग आगे करजोरि कर।
चरितसुनावनलाग ज्यहिकारणप्रभुत्यागिसिय ॥
सियहि जो त्यागकीन्हरघुबीरा। सुनहु सो भेव गरुड़मतिधीरा ॥
जब प्रभु जीतिसमरदशशीशा। अवधचलनचाह्यो जगदीशा ॥

देव सबै तिहि अवसर आई। विनयविनयनिजलोकसिधाई॥
ताहिसमय दशरथ नृप आये। रामहिं देखि नयनजलछाये॥
पितहि प्रणाम कीन रघुराई। सीताअनुजसहित खगराई॥
अस अभिलाष नरेश खगेशा। मोहिं लै चलैंअवधअवधेशा॥
पितहिप्रेमवश लख्योकृपाला। समुझायो कहिवचनरसाला॥
वर्ष सहस्र राव प्रभुताई। रह्यो सो भोग करब मैं जाई॥
असकहि रामपितहिशिरनावा। दीन्हज्ञान निजधामपठावा॥
दो० सुनिअस वचनबिनीतबहु भयो ज्ञान खगराय।
प्रभुमूरति उरराखि नृप गे सुरपुर हरषाय॥
पिताराज्य के भोगहित असकौतुक प्रभु कीन।
रहैं सियाकछुदिन अनत त्यहिकारणबनदीन॥
सो० गयोशोच खगनाथ सुनिप्रभुचरित भुशुंडिमुख।
परसिचरणपर माथ नाथकृतारथकीन मोहिं॥
दो० पाछिलकथा पुनीतअति सुनहु खगेश सुजान।
ज्यहिप्रकार रोदन करैं सीता जगत भवान॥
महा विलाप करत बैदेही। शोकबिकलतनुसुधिनाहिंतेही॥
भे खगमृग बनजीव दुखारी। देखि जानकीचाकितनिहारी॥
स्रवतनयनजलदुखअधिकारी। बोलेबचन समय अनुहारी॥
तजहु शोच सुनु राजकुमारी। विधिके अङ्क सकै को टारी॥
बनदेवत धरिधरि मुनिनारी। समझावैं मृदुबैन उचारी॥
अवधते सरिसजानु बन माता। होइहैं सबबिधि मङ्गलदाता॥

काहू दोष न लाइय रानी। जगजननी तुम मातुभवानी॥
करिप्रबोध मुख धोय सयानी। कन्दमूल लाई मधु जानी॥
धरिआगे सिय पुनि समुझाई। हाथजोरिकरि बिनय खवाई॥
छं० करजोरि बिनय खवाय सीतहि बिदाह्वै गृहको गई।
लखिबिषमबन भारीभयङ्कर जानकी बिस्मितभई॥
त्यहि समय मुनिवर बालमीकि समेत चेलन बनगये।
सुनिरुदनअबलासघनबनशिषसहिततहँआवतभये॥
सो० देखा निपट मलीन बैठी तहँ रोदनकरै।
मुनिवर परम प्रबीन निकट जाय पूंछी कथा॥
देखि ऋषय बोलीं तब सीता। बानी मञ्जुल मधुर पुनीता॥
श्वशुर चक्कवै दशरथ राऊ। जनकपिताजगविदितप्रभाऊ॥
पति रघुनाथ लोकतिहुं स्वामी। कहों कहांलग अन्तर्य्यामी॥
ऋषि पँचबटि पुरलोक बिचारी। तज्यो मोहिं रघुनाथ खरारी॥
लक्ष्मण बन पहुंचाय बहोरी। गयेअवधकह जनककिशोरी॥
बालमीकि सियको पहिचानी। धीरज दीन पुराण बखानी॥
पुत्री धीरधरो उरमाहीं। भयोबामबिधि कछुनबसाहीं॥
करिप्रबोध बहु कथा सुनाई। चले सङ्ग आसनहिं लिवाई॥
सुन्दर सदन बासलै दीन्ही। सेवा बहुप्रकार मुनि कीन्ही॥
दो० यहिमिसि बीते काल बहु बिपति बिषाद बिहाय।
युगल तनय तब प्रकटभे सुदिन सुऔसरपाय॥
बालमीकि मुनि गन्त बिचारी। शुभनक्षत्र लखिभये सुखारी॥

बोललई महिसुर हरषाई । दीन दान सन्मान बड़ाई ॥
सियउर हर्ष भयो ज्यहि भांती । शारदहूते नहिं कहिजाती ॥
जस दुख सही लही सुखभारी । बदन सुभग दोउसुवन निहारी॥
त्यहि अवसर मुनि कुटी सुहाई । ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पतिछाई ॥
जो ज्यहि भाव दीन तेहि सोई । उत्सव परम जानकिय जोई ॥
कीन्ह वेद लौकिक सब रीती । बालमीकिमुनिवरअतिनीती॥
नामकरण उत्पत्ति उछाहू । कीन्हमुदितविधिवेदनिबाहू ॥

दो० भे सयान विद्यासकल बालमीकि मुनि दीन्ह ।
चारवेद षटशास्त्र को कौतुकहीं पढ़िलीन्ह ॥

बालचरित सुन्दर दोउ भ्रातू । हरषि निरखि सुखपावै मातू ॥
विद्या धनुषबाण मुनि दीन्ही । दोऊअनुजमुदितसिखिलीन्ही ॥
बीते जबै बर्ष दश चारी । भये कुमार युगल बलधारी ॥
मुनिबालक सँग खेलत फिरहीं । निपटअशंकन कालहुडरहीं ॥
फिरहिंविपिन करि बीरशृंगारा । बधैं मृगा दोउ राजकुमारा ॥
अतुलितबल प्रताप दोउभाई । सुठिसुकुमारबरणि नहिंजाई ॥
दिनप्रति करहिं अहेरबराहू । फिरहिंविपिनलखिडरहिंनकाहू ॥
निशिदिन सुखद मातुउरमाहीं । सपनेहुअवधसुरतित्यहिनाहीं॥
होतप्रात नित दोऊ भइया । करहिंप्रणाममुदितमनमइया॥

दो० मुदितअशीषहिं मातुतब जोरी सुभग निहारि ।
बारबार चूंबति बदन जाय जाय बलिहारि ॥

लव कुश जन्मउछाह भवानी । कह्यों यथामति वेदबखानी ॥

अब जो कहौं सुनो मनलाई । रामचरित सुन्दर सुखदाई ॥
जबतेप्रभु सिय विपिननिकारी । तबते निशिदिनरहतदुखारी ॥
एकबार सोवत रघुबीरा । देखा स्वप्न राम रणधीरा ॥
लङ्कापति सजि निजकटकाई । घेर्यो अवध निशानबजाई ॥
कीन महारण प्रभु के साथा । ह्वै ब्याकुल जागे रघुनाथा ॥
कछु न दीख तहँ कृपानिधाना । कीन जाय सरयू अस्नाना ॥
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आई । गहि पदअम्बुज स्वप्न सुनाई ॥
स्वप्नभेव जस मोहिं सुनाई । करो उपाय बेगि मुनिराई ॥
दो० कह्यो बिचारिमुनीशतब वचनमधुर त्यहिकाल ।
ब्रह्मबीज राकस भयो बीसभुजा दशभाल ॥
करहु यज्ञ हयमेध सुहावन । सदा युगोंयुग पावन पावन ॥
जानिशिरोमणिमखअतिभारी । करहिंअवशिनृपप्रभुदनुजारी ॥
बिन कीन्हे मख दीनदयाला । होयनक्षमितअसुरदशभाला ॥
तबप्रभुकहासुनिय मुनिनायक । करिय अरम्भयज्ञसुखदायक ॥
तब मुनिनाथ कह्यो समुझाई । श्यामकर्ण हय अमरमँगाई ॥
हेमपत्र नृपनीति लिखाई । बांधि शीशपर बाजिफिराई ॥
चार क्षोहिणी दल सँग दीजै । सेनापति रिपुसूदन कीजै ॥
जो नृप बांधे अश्व तुम्हारा । करहिं युद्ध त्यहि संग अपारा ॥
ताहि जीति मखबाजि मँगाई । चहूंदिशा यहिभांति फिराई ॥
दो० सबभूपन मदमानमहि कुशल सो यहवरबाज ।
रिपुसूदन आवहिं अवध यज्ञसिद्ध रघुराज ॥

सुनि मुनीश के बचन सप्रेमा। मखहितकीन्ह रामदृढ़नेमा॥
बेगि तुरँग सुरनाथ मँगाई। पूजा कीन्ह वेद जस गाई॥
हेमपत्र बांध्यो हय शीशा। बांचत ज्याहि कोपैंअवनीशा॥
यूथप रिपुसूदन को कीन्हा। कहि प्रभु पुनि अस आयसु दीन्हा॥
तात तुरंग करब रखवारी। सजग रहब धनु बाण सुधारी॥
जो भूपति तजि इरषा मोहा। मिलैआयत्यहिकीन्ह्योछोहा॥
अभयकरबत्यहि सभयनिहारी। करब बचन परमान हमारी॥
जो नृप हठ बश बांध तुरंगा। प्रबल युद्ध कीन्ह्यो तेहि संगा॥
समरभूमि रण सेज सुवाई। तुरग छुड़ाय चलब हरषाई॥
दो० ताहि जीति मख बाजिलै सजग करब सबकाज।
फिरयोअवधकहँप्राणप्रियअसकहिकोशलराज॥
सुनि आयसु साहब सियरौनू। पद शिरनाय चले रिपुदौनू॥
करिआगे मख हय मुनिनाथा। भोरे सुभटकीन्ह त्यहिसाथा॥
मुनिपद बन्दि चले रणधीरा। कर कमलन सोहत धनुतीरा॥
शत्रुदवन पुर बाहर जाई। बेगि सारथी बोलि पठाई॥
तुरित सारथी स्यन्दन आना। चढ़्यो बिमान बीर बलवाना॥
बीर धुरीण भरत लघुभाई। सुमिरि गजानन सैन चलाई॥
सैन अमित कोगनै मुनीशा। सकुचैं शारद गिरा फणीशा॥
चार क्षोहिणी सैन भवानी। बड़े बड़े योधा अभिमानी॥
आगे चञ्चल चपल तुरंगू। पाछे सुभट जाहिं त्यहि संगू॥
दो० त्यहि पाछे सेना सुभट भरत अनुज रणधीर।

धर बीरासन जात मग सुमिरत सिय रघुबीर ॥
सांझ समय सब बीर भट साजि साजि सीपाह ।
निज निज बारी देखि हय चलैं भोर उठिराह ॥
गिरामूक फण तब सकुचाई । जो अब कहै प्रताप बड़ाई ॥
फूटे मेरु खेह ह्वैजाहीं । टूटे बिटप परे महिमाहीं ॥
रजसों पूरि गये नदनारे । कूप तड़ाग भूरभय सारे ॥
जहँ जहँ जाय यज्ञवर बाजू । मिलहिं भूपतहँसहितसमाजू ॥
जहँजे भूपति कीन्ह लड़ाई । मार्‍यो ताहि भरत लघुभाई ॥
ताहि संहारि बाजि अगुवाई । उत्सव कहिं कछु शर्मनपाई ॥
करहिं युद्ध नहिं कालहु डरहीं । नृप मानी जीतत रणफिरहीं ॥
कहौं कहांलग तेज बखाना । रिपुसूदन रिपुसूदन जाना ॥
उदय अस्त महि मंडल माहीं । रिपुसूदन समान भटनाहीं ॥
छं० रिपुदवनसमजगकोउनभट जोआयअबसम्मुखलड़े ।
सुरअसुरजेते नागनर भयमान पद नहिं रणखड़े ॥
चहुँओर अश्व फिराय सैन समेत रिपुसूदन बली ।
यमुना उतरि सुरसरी मज्ज्यो पारउतर सैनाचली ॥
सो० चल्योतुरँग त्यहिकाल बालमीकि आश्रम गयो ।
लखि बनबाग रसाल हरितदूब लाग्योचरन ॥
दो० रहे तहां रखवार लव देखि अश्व प्रियलाग ।
उठ अकेल बांध्यो तुरँग जानि चरत मुनिबाग ॥
बाँधि तुरङ्ग पत्र लव बांचा । करों युद्ध नृप सों मन रांचा ॥

जबलगि जीव रहै तनुमाहीं। तबलग अश्व देब नृप नाहीं॥
त्यहि अवसर भटभीर समूहा। आये हय हेरत बहु जूहा॥
देखि अश्व सकुचे मनमाहीं। बालकबधबउचितकछुनाहीं॥
डाटि कुँवर हय लेहु छुड़ाई। रिपुसूदन पहँ गवनो भाई॥
सुनि अस बचन हँसे लवबीरा। करकमलन फेरत धनुतीरा॥
सुभट जबै हय छोरन लागे। लखि लव तुरत वीररस पागे॥
बोले बचन क्रोध नहिं थोरी। हटो सुभट कोउ तुरँग न छोरी॥
जो हठवश हय छोरन जाई। मारों ताहि मुनीश दुहाई॥
दो० जो छोरै यहिकाल हय बधौं ताहि त्यहिकाल।
तजौं न हय कोटिन करौ बिना युद्ध महिपाल॥
सुनि लव बचन सुभट सब माखे। क्रोधसँभारि बचन असभाखे॥
बालक समुझि न कीन्ह लड़ाई। इनतो बातन बहुत खिझाई॥
अब नहिं दोष लड़ाई कीजे। तुरँग समेत जीतिरण लीजे॥
अस कहि घेरिलियो लववीरा। मारैं अस्त्र शस्त्र पर तीरा॥
लव विलोकि योधा नियराने। धनुष चढ़ाय बाण सन्धाने॥
एक निमिष महँ सब भटमारे। बचे ते भागे जाय पुकारे॥
नाथ एक बालक मुनि वेखा। बीर शृंगार किये तनु देखा॥
वयकिशोर करणी कठिनाई। अतिसुन्दरनखशिखसुघराई॥
तिन बांध्यो हयको अति गाढ़ा। काल समान आप तहँ ठाढ़ा॥
दो० तिन बांध्यो यह यज्ञहय बहु उपाय हम कीन्ह।
युद्ध कीन्ह मारे सुभट हठवश अश्व न दीन्ह॥

जे भट रहे अश्व रखवारे। तिनहिं तुरित रणखेत सँहारे॥
अस पौरुष अबहींते पाई। समययुवाभट जियत न जाई॥
अति सुकुमार महा रणधीरा। फिरत अकेल हाथ धनुतीरा॥
सुनि रिपुदवन अचम्भव माना। चले तहां जहँ लव बलवाना॥
सैन सङ्ग घेरयो वनबागू। बढ़े आप कीन्हे रथ आगू॥
देखा जाय बाग मुनिराई। बोले सरुख भरत लघुभाई॥
काअनीति हय कीन्ह तुम्हारा। राख्यो बांधि मुनीशकुमारा॥
तुमहिं त्रास नहिं बांधत लाग्यो। कसपितुमातुअबहिंतेत्याग्यो॥
सोहत तुमहिं न अस कठिनाई। वय किशोर मृदुगात सुहाई॥

दो० मुनिवर वेष अनूप अति धरे बाण धनुहाथ।
करत अनीति फिरौविपिन खेलत बालनसाथ॥

तुमहिंन असिहठसोहतभइया। तजिहयजाहुजहांपितुमइया॥
निजकुलपुनि कुठारजनिहोहू। देखि स्वरूप शोच अतिमोहू॥
सुनि लव रिपुसूदन मृदुबानी। दीनउतरहँसि सुनहु भवानी॥
हमरेकुल युगयुग चलिआई। हठनजाय बरु सरवस जाई॥
जो भय मान तुरँगनृप देहीं। अपने जियतअयशशिरलेहीं॥
हमहिं सौंपि मुनिवर यह बागा। आपगयेकहुं ऋषिमुनियागा॥
खग मृग जे बनचर हैं नागू। सोसन चरन न पावैं बागू॥
सकुचत पवन निरखि अमराई। सुर नर असुर कौन प्रभुताई॥
सो तुम्हार हय निज बरिआई। कीन्ह निपात बाग मुनिराई॥

सो० बांचिपत्र हयभाल बाग विध्वंसत देखि शठ।

निज पौरुष महिपाल बांध्यों तुरँग न देवँअब ॥

सुनि रिपुसूदन निरभय वानी। जान्योहृदयमहाअभिमानी॥
बिन संग्राम अश्व नहिं देई। करिसंग्राम अयश को लेई॥
जो मारै म्वहिं निपट हँसाई। मैं मारौं तौ कौन बड़ाई॥
यहि मारे भल कहे न कोई। होय पाप नहिं सिंधुसमोई॥
जो तजि हयकोशलपुर जाऊं। कौनबदन रघुबरहि दिखाऊं॥
जो सकोप खोलौं बरबाजू। सम्मुखमरै समर करआजू॥
करत बिचार शत्रुहन योधा। कौनिउँ भांति न होयप्रबोधा॥
बिकल बिलोकि राम लघुभाई। गगनगिरा त्यहिसमय सुहाई॥
येन तनय मुनि ऋषय दुलारे। महाबली रण टरैं न टारे॥

दो० जनि भरमो रिपुदवन तुम येन तनय मुनिराज।
क्षत्रिय कुल बाणी सुभट सब राजनके राज॥

यतन हजार कोटिबिधि करहू। रणसम्मुख लोहा किन धरहू॥
मिलै न हय किन करहु उपाधी। असकहिगगनागिराचुपसाधी॥
सुनत भरत सानुज नभवानी। चकितरह्योनहिंजातबखानी॥
करि निश्चय तब उठे रिसाई। सब योधनसों कह्यो सुनाई॥
हम अपनी दिशि बहुत बचाई। मान न कुँवर काल नियराई॥
अवन दोष निगमागम गाई। जो जसकरै सो तस फल पाई॥
धरो जियत बहु देहु कलेशू। अब न छोट बड़करो अँदेशू॥
जो न हाथ लागै रिपुभारी। समर कठिन करि डारौमारी॥
अस कहि निज धनुबाणउठाई। लवसम्मुख बोले मुसकाई॥

दो० मैं अपनीदिशिबिनयकिय तुम मानीनहिं एक ।
पावहु आज सजायभल जस कीन्हें हठ टेक ॥
चाप चढ़ाय श्रवणलगि ताना । छांड़्योअतिकरालबहुबाना ॥
ज्वइशर रिपु लव सम्मुखआई । स्वइ लव पास नरेश पठाई ॥
निफल गये रिपुसूदन बाना । देखि प्रताप शोच उर आना ॥
तब लव ललकार्‌यो रिपुबीरा । युद्धकरहु जनिहोहु अधीरा ॥
शर चढ़ाय नाग सन्धाना । छांड़्यो शर बहु उरगसमाना ॥
अर्द्ध निमिष लव बाणप्रहारी । दुइक्षौहिणी अनीरिपु मारी ॥
पुनि लव रिपुसूदनपहँ जाई । बोले कोपि वचन मुनिराई ॥
सजगहोहु यहि समय भुवाला । असकहिछांड़्योबाणकराला॥
रिपुसूदन लव भट रणधीरा । लड़ैं परस्पर द्वउ बरबीरा ॥
छं० द्वउबीरलड़ैंप्रचारिअतुलितविविधविधिललकारहीं।
बहुतीर अस्त्र कृपाण शूल सकोप ऊपर डारहीं ॥
रणगूढ़लखिभारतअनुज ह्वैविकललवसम्मुखगहीं।
अबसजगहोहु सँभारशर रण आजुत्वहिं मारौं सही॥
सो० कहा वचन अस कोपि रिपुसूदन रणधीर भट ।
लीन्ह शरनते तोपि महि सुवायदीन्ह्यो लवहि ॥
रिपुसूदन अतिशय जब कोपे । मारि शरन नखशिखते तोपे ॥
अतिसुकुमार न योग लड़ाई । पर्‌यो वीर रणमें मुरछाई ॥
यथा वारिबिन मीन विशोकी । तथाविकलरणलवहिविलोकी॥
परमविकल शोचत मनमाहीं । रिपुसूदन आये लवपाहीं ॥

देखा निपट कुसाज कुमारा । शोभाअमित न जायनिहारा॥
भरतअनुज पुनि सैन सँभारी । बाजिचढ़ाय अवधपगधारी ॥
रहे जे लवसँग तनय मुनीशा । धायेग्राम धुनत सब शीशा ॥
सियसन कह्यो सकल उतपातू । भेज्याहिबिधिलवप्राणनिपातू॥
रथचढ़ाय लवको युवराजू । गवन्यहुभवनसहितमखबाजू॥
सो० सुनत शिशुनके बैन ब्याकुल भूतल में परी ।
भरेनीर दोउनैन शीशधुनहि करुणा करहि ॥
त्यहिअवसर कुश बनते आये । मातुचरण सादर शिरनाये ॥
देखा निपट विकल महतारी । यथामीन ब्याकुल बिनबारी ॥
जसमणिहीन भुजगअकुलाई । तसगतिजनकसुता गिरिजाई ॥
दशादेखि जननी दुखपावा । बोले बाणी सरल स्वभावा ॥
क्यहिकारण यहगति महतारी । बेगिकहौ त्वहिं आनिहमारी ॥
सुनि सुतबचनकछुक धरिधीरा । लागी कहन नैन बहनीरा ॥
आदि अन्त सब कथा सुनाई । भूतल परी बहुत मुरझाई ॥
सुनत भयो रिस कुशउर भारी । कसिनिषंगधनुबाणासिधारी ॥
जो त्रिन बधे अनुजको द्रोही । आवोंभवन सप्त मोहिं तोही ॥
दो० मातु सप्तकरि तुरित कुश संग लीन मुनिबाल ।
चले कोपकीन्हे महा जहां भीर महिपाल ॥
मुनिवर बाग गये कुश बीरा । देख्यो जात भूप रणधीरा ॥
आगे जाय सैन सब घेरयो । कहिकटुबचन नरेशहिफेरयो ॥
को तुम कौन देशके राजा । साजिसैन आये क्यहिकाजा ॥

सुठि सुकुमार मोर लघुभाई । करिमुरछितत्यहिचल्योपराई ॥
तुमहिं न त्रास प्राण निजकेरी । भीर संग बन फिरौ अहेरी ॥
जस कीन्ह्यो तस पैहौ आजू । जायहुकुशलसहितमखबाजू ॥
अस सुनि रिपुसूदन रथफेर्यो ।कुशसम्मुखत्यहिअवसरहेर्यो ॥
लवसों सुरस देखि सुघराई । बोले भरत अनुज मुसकाई ॥
छोट बदन कीन्ह्यो रिस भारी । क्षमाकरहु अपराध हमारी ॥

॥ दो० तुम्हरेअनुजहिबिबिधबिधि उचितसिखावनदीन ।
॥ कालविवशतमक्योसुभट बचनश्रवणनहिंकीन ॥

चाप चढ़ाय विशिख शरमारे । दुइ क्षोहिणी कटक संहारे ॥
मोसनआाय युद्ध पुनि कीन्ह्यो । यदपिसिखावनमैं बहुदीन्ह्यो ॥
कुल अनुहरत भयो रिसमोरे । सत्यकहौं लिखिकागदकोरे ॥
ज्यहि रिसजाय तुम्हारी आजू । करहु न बिलम सँवारहुकाजू ॥
सुनि कुश रिपुसूदन की बाता । अनुजबिलोकिजरे सबगाता ॥
बन्धुशोकत्यहिं समय बिसारी । कीन्ह्यो सिंहनाद अतिभारी ॥
बोले अति सकोप कुश जबहीं । डगमग भयो लोकतिहुँतबहीं ॥
सुनत दशौ दिगपाल सकाने ।क्षुभ्योसिन्धुजलचरअकुलाने ॥
उठ्यो धरा कुर्म कांप्यो ब्यालू । भयो शोर डरप्यो सुरपालू ॥

छं० सुरपालकम्पेकौनविधि त्यहि विष्णुशिवशङ्काभई ।
असकौनबीरसकोपअति धनुबाणकरकमलनलई ॥
रणअजरअनुपमचापकुश बलधामजबफेरनलगे ।
सुरअसुरकिन्नरनागनर डरमानत्यहिअवसरभगे ॥

सो० सुरन धरयो नहिं धीर क्रोधकृतान्त निहारिकुश।
भागे सब भट भीर रहे एक रिपुदवन रथ॥
दो० कौन बड़ाई कुशहि यह मातु सिया पितु राम।
को अस समरथ वीर जग जीति सकै संग्राम॥
कुश रिपुदवन समर गिरिजाई। महाअगम नहिं बरणिसिराई॥
कोटिन बाण शत्रुहन मारे। कुश बरबराड काटि महिडारे॥
भे बाणन ते हीन निषङ्गा। टूटे चाप अमित बहुरङ्गा॥
मींजत हाथ अधर रद चाबू। बिसरयो वीर अवधको जाबू॥
रहे सुभट जहँलग रणखेतू। मारयो तेहि रिपुदवन समेतू॥
बहुरि बाजि बांध्यो तरु जाई। ब्याकुलगयो जहां लघुभाई॥
लीन उठाय गोद बैठाई। देखि दशा दारुण दुख पाई॥
रोदन करत मोह उर व्यापा। बरणै को जस हृदय कलापा॥
समुझिसमुझिसानुजकीकरणी। अबलाइव मारत शिरधरणी॥
दो० क्षणक्षणव्याकुलदेखिगति बरणतशीलसकोच।
महि लोटत करुणाकरत कहत विधाता पोच॥
सिया सुवन रोदन सुनि भारी। वनवासी सब भये दुखारी॥
प्रकट्यो देव सघन वन आई। कहिइतिहासकुशाहिसमुझाई॥
धरो धीर दुख अनुज बिसारी। जियै बन्धु आशीष हमारी॥
सुनत देखि बन गिरा सुहाई। उठिबैठे तब लव गिरिजाई॥
मिले परस्पर दोऊ भैया। हर्षित चल्यो जहां रहि मैया॥
हाथसों हाथ जोरि दोउ भाई। गये भवन आनँद अधिकाई॥

देखत मातु त्वरित उठिधाई। लीनसुवनदोउ कण्ठलगाई॥
मिलि द्वउ कुवँर गोद में लीन्हीं। याचकबोलिनिछावरिकीन्हीं॥
शुचि भोजन पकवान मिठाई। हर्ष सहितदोउतनयजिमाई॥
दो० है प्रसन्नमनहर्षि अति देखि सुरस ज्यवनार।
लागे भोजन करन तब प्रमुदित दोउ सुकुमार॥
कहि सिय तव बलिजाउँ मैं हे सुत शोभागेह।
भयो उपद्रव बाग मुनि मो मन अतिसन्देह॥
मम संदेह निवारहु ताता। कहोभयोज्यहिविधिउतपाता॥
मातुवचनसुनि लवअतिपावन। प्रथमहिं ते सबलगे सुनावन॥
ज्यहिबिधिआय सुभटकटकाई। घेरयोविपिन चहूंदिशिआई॥
एक तुरँग तेहि संग पराई। आयचरयो मुनिवर अमराई॥
हेमपत्र हय शीश बिलोकी। बांचिताहि रिसगयो न रोकी॥
बांध्यों तुरँग मातु बरिआई। तासु खोज सैना बहु आई॥
तासों कीन युद्ध अतिभारी। करि संग्राम सुभट सबमारी॥
त्यहि पाछे सैनापति आयो। म्वहिंलघुदेखिबहुतसमुझायो॥
कीन्ह्योकठिनपरनमहिपाला। मुरछितकियोमोहिंत्यहिकाला॥
दो० असकहिपुनिचुपसाधिलव चरणकमलशिरनाय।
शयनकीन पर्य्यंकपर बोले कुश मुनिराय॥
त्यहि अवसर मैं बनते आयों। तवगति देखि बहुत दुखपायों॥
तुमसों पूंछि सक्यों नहिं माता। मुनि बालकन कही सबबाता॥
त्वरित लीन धनु बाण उठाई। गयों बाग जहँ भट समुदाई॥

नहिं तहँ सुभट न दीख नरेशू । नहिं लव सानुज भयो अँदेशू ॥
गयों दूरि कछु बिपिन मँझाई । देख्यों चली जात कटकाई ॥
फेर्यों कहि कटु बचन सरोखा । सुनत बचन आये अतिचोखा ॥
रथ शोभित स्वइ राजकुमारा । करिसंग्राम अनुज जिनमारा ॥
देखि मोहिं लवके अनुहारी । रह्यो चकित बहुबार निहारी ॥
पुनि लवको रथ ऊपर देखी । भयो नरेशहि शोच बिशेखी ॥

दो० करिप्रतीत तब हृदय निज जानिमोहिं लवभ्रात ।
रथहांक्यो आयो निकट कह्यो बचन अस मात ॥

रे बालक त्वहिं त्रास न आई । जो अब म्वहिं कटुबैन सुनाई ॥
बयकिशोर सुन्दर तनु गोरा । कहसि बचन जनु माहुरघोरा ॥
लघु बिचारि मैं बहुत सँभारी । सह्यों कुँवर कटु बैन तुम्हारी ॥
जस तुव बन्धु प्राण हठ दीन्ही । तस तोहूं खल चाहसकीन्ही ॥
ह्वैहौ क्षणमहँ काल हवाले । अबलग पर्यो न काहू पाले ॥
जाहु कुशल तजि मोहतरंगा । हठबश होहु न दीपपतंगा ॥
आयसु दीन न मैं कटकाई । लागि दया, बालक सुघराई ॥
सो तुम बहुत प्रचार्यो मोहीं । मोर पराक्रम बिदित न तोहीं ॥
सवँरहु जो कोइ होय सहाई । कहौं स्वभाव न करौं बड़ाई ॥

दो० सुनि नरेशके बचनमृदु मातुहँस्यों त्यहिकाल ।
हँसतविलोक्यो मोहिंजब बोल्यो बचनकराल ॥

यह लड़का वश काल निदाना । मारो घेरि न पावै जाना ॥
सुनि आयसु महिपाल सकोही । मारनलगे सुभट सब मोही ॥

मैं अकेल सेना नृप भारी । विकलभयों त्यहिक्षण महतारी ॥
बाणनमारि छेद तनदीन्ही । चहुँदिशि आयघेरि म्वहिंलीन्ही ॥
मैं देख्यों तब नयन उघारी । लीन्ह्यों घेरि सुभट बलधारी ॥
धरि धीरज मुनि सुमिरिप्रतापू । छांड़्यों बाणखैंचि तब चापू ॥
मार्‌यों नृपहि सहित कटकाई । बहुरि बाजि बांध्यों तरुजाई ॥
बाजि बांधि सानुजपहँ आयों । देखि दशा दारुण दुख पायों ॥
सोवत महि शरसेज निहारी । शिरधुनि रोदन कीन पुकारी ॥
दो० त्यहिअवसर बनदेवता मम बिलाप सुनि कान ।
आये धीरज दीन म्वहिं कथा अनेक बखान ॥
धरो धीर सुनि वचन हमारी । जाहु वेगि जहँ मातु तुम्हारी ॥
जियै बन्धु लघु मैं वर दीन्हा । असकहिगमनभवननिजकीन्हा॥
सुनत गिरा बनदेवत माता । तजिमुरछा जाग्योलवभ्राता ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता । देखि अनुज भे शीतलगाता ॥
देखाजाय बहुरि रणखेतू । पर्‌यो न लखिकोउबीरसचेतू ॥
मुनिवर सुतनसों यह समुझाई । रह्योसजग हयभागि न जाई ॥
बागमुनीश तुरँग महिपाला । जुगवतरह्यो सजग सबकाला ॥
सकल अनुग्रह मातु तुम्हारी । आय कुशल पदकञ्जनिहारी ॥
सुनि सुतबचन अशीषत माता । गई निशाबड़ि सोवहु ताता ॥
दो० लागे सोवन मुदित मन आयसु जननी पाय ।
जागे होत प्रभात पुनि बन्दि चरण शिरनाय ॥
करि अस्नान गङ्ग दोउ भाई । आय मुदित मातहि शिरनाई ॥

भोजन करहिं संग यक थारी । लै आज्ञा बनओर सिधारी ॥
बधैं पुनीत वराह कुरंगू । आवहिं भवन भ्रात द्वौ संगू ॥
यह इतिहास अनूठ खगेशू । पारबतीसन कह्यो महेशू ॥
सोइ जाबाल पराग नहाई । भरद्वाज मुनिवरप्रति गाई ॥
अतिविचित्र महिमा भगवाना । आगम निगमपुराणबखाना ॥
जब रिपुदमन सहित सब बीरा । परे मुरछि रणमहँ रणधीरा ॥
भागे सुभट कछुक बिन मारे । ते कौशलपुर जाय पुकारे ॥

दो० गये सुभट ते अवधपुर अतिब्याकुल तनछीन ।
जाय पुकारे मुनि प्रभू बचन सहीहै दीन ॥

वहां राम उर शोच अपारा । नहिंआये प्रियप्राणअधारा ॥
मखशाला जहँ ऋषय समाजू । ऋषिन मध्य रघुवीर विराजू ॥
चारिउ षट् दशआठ पुराना । मुनि वक्ता श्रोता भगवाना ॥
चहुँदिशि विप्र वेदध्वनि करहीं । मागध सुयश वंश उच्चरहीं ॥
वन्दीगण याचक गुणगायक । अस्तुतिकरतठाढ़ रघुनायक ॥
चतुरानन पंचानन देवा । चले यानचढ़ि प्रभुकी सेवा ॥
इन्द्रसमाज देव मुनि बृन्दा । आये जुरि जहँ रघुकुलचन्दा ॥
मुदित अशीष जोरि कर देहीं । वदनविलोकिपरमसुखलेहीं ॥
निज निज थल बैठे सब जाई । शक्ति समेत महाछवि छाई ॥

दो० भरतलषण दशरथ सचिव अनुजनसुवनसमेत ।
जोरि पाणि ठाढ़े सकल सम्मुख कृपानिकेत ॥

प्रभुरुखनिरखि काजअनुसरहीं । सम्मुखते भूल्यो नहिं टरहीं ॥

तौनी समय सुभट तहँ जाई। रिपुसूदनकी खबरि सुनाई॥
सुनतकृपानिधिअचरजमाना। विधिगतिप्रबलहृदयअनुमाना॥
सुभट बुलाय अवधपति बूझे। कहु केहि देश शत्रुहन जूझे॥
नाय शीश पद बचन बहोरी। लाग्योकहन दोऊकरजोरी॥
देश देश सब तुरग फिराई। कोउ न भयो सम्मुख रघुराई॥
आगे ह्वै पूजा हय करहीं। रिपुसूदनके सम्मुख धरहीं॥
करहिंअभय त्यहि अंगलगाई। साधुस्वभाव भरतलघुभाई॥
कोउ न सुभटसम्मुख रणकीना। मिलेआय सब परम अधीना॥

छं० सबमिले परमअधीन जहँजहँ बाजिरिपुसूदन गयो।
हियहारि कांपे सैनलखि करजोरि शिरनावतभयो॥
यहिभांतिअस्तुतिकरहिं पूजहिंअश्वभटरिपुदवनको।
राखैं सुवस्तुमँगाय आगेचलैं पदगहि भवन को॥

सो० यहिप्रकार सब देश फिरि आयो रिपुदमन भट।
चले अवध अवधेश संग अनी चतुरंगिनी॥

दो० फिर्‌यो तुरग जब अवधकहँ आयो गंगातीर।
सुभट क्षोहिणी चारि दल त्यहि पाछे रघुवीर॥

महासघन बन तहँ रघुराई। दिवसहुजहँ मिष राति सुहाई॥
गयो तुरग त्यहि बन रघुराई। पहुँचो जहँ मुनिवर अमराई॥
मुनिवर बाग चरै जब लागा। बांध्यो हय रखवारनबागा॥
सजगभये हय पाय अनेरा। घेरे ठाढ़ चहूँ दिशि हेरा॥
सुभट बिकल नहिं देख्यो बाजू। कहैं सहमि बड़भयो अकाजू॥

खोजत फिरैं अन्त नहिं पावैं । हेरिहेरि चहुँदिशिफिरिआवैं ॥
धँसे महाबन तब अकुलाई । लख्योअश्वमुनिवरफुलवाई ॥
जाय तहां हय छोरनलागे । रखवारे भट देखत भागे ॥
तेहिमा एक कुँवर तन गोरा । रोंक्योभटकहिबचन कठोरा ॥
दो० बयकिशोरनखशिखसुघरसुखमाशीलनिधान ।
हटके भट सबकाल त्यहि करतल फेरत बान ॥
शोभा मुख शतकोटि दिनेशा । काकपक्ष धारे मुनिवेशा ॥
सौ सौ कोटि कामरति वारी । अंग अंग जैये बलिहारी ॥
मुनिवर बेष कुमार नरेशा । प्रभुअनुहारि विशेष सुरेशा ॥
सुनि भट बचन रमापति देवा । कहा सैन कोउ लखै न भेवा ॥
पुनि करजोरि कहन सो लागा । ठिठुकरहे भट गये न बागा ॥
माखे वचन सुनत सब बीरा । सजगभये गहिगहि धनुतीरा ॥
कोउ कह मारहु लेहु छुड़ाई । कोउकहजियतधरहुयहिभाई॥
असअभिलाष सुभट उरमाहीं । चरितरामखगबूझि न जाहीं ॥
रिसवश एकबाण तिन मारा । परेमुरछि रण सुभट अपारा ॥
दो० द्वितियवाण छांड़्यो जबै भागे भट रणधीर ।
जायपुकारे ते सभय जहँ रिपुसूदन बीर ॥
पहुँचो रथसम्मुख जब आई । देखि कुमार परम सुखपाई ॥
लखिशोभा रथ कामलजौनू । शिथिलगात मनभे रिपुदौनू ॥
हृदयसराहत कुँवर लुनाई । बोले रिपुसूदन मुसकाई ॥
कोतुम वेष मुनीश ऋषेशा । की क्षत्रीकुल तनय नरेशा ॥

बनमाला छापा शुचि टीका। देखिस्वरूपलाग अतिनीका ॥
प्रेमफांस लीन्हे बन फिरहू। मोहतजिवभयशङ्क न करहू ॥
सो छलबल हमसों अबकीना। कीन बाजि अपने आधीना ॥
छांड़हु तुरग छोड़ि लरिकाई। अबहीं ते नहिं सोह लड़ाई ॥
दो० सुनि रिपुसूदन के वचन तिनहँसि उत्तर दीन्ह।
मृदुल मनोहर बयनकहि अश्वहिचाहहुलीन्ह ॥
करहु कोटि हयहेतु उपाई। नहिं पावहु बिनकिये लड़ाई ॥
छलतजि सकलकुटिलताकाजू। सम्मुख समरकरहु जो राजू ॥
जाको अश्व देइ करतारा। लेइ सो आजु महीपकुमारा ॥
होत परस्पर बाद बिवादू। बढ़चोअधिकदुहुँदिशिसंवादू॥
तब रिपुघन विचारि रघुराई। बिनसंग्राम अश्व नहिंपाई ॥
बोलिसुभट सब आज्ञा दीन्ही। आपन धनुषबाण करलीन्ही॥
लाग्यो होन समर रघुनाथा। चलेबाणद्वौदिशि यकसाथा ॥
देखि पराक्रम तासु अपारा। मन रिपुसूदन कीन्ह बिचारा॥
श्रवणप्रयन्त शरासन ताना। मारचो कठिन तासु उरबाना ॥
दो० लागतशर मुरछित भयो उठचो सँभारि बहोरि।
सैनसहित रिपुसूदनहिं बाणन डारचो झोरि॥
मारि सुभट सब धरणि सुवाई। परे सकल शरसेज बिछाई ॥
जहँलग भट रिपुसूदन साथा। पलमहँ सब मारे रघुनाथा ॥
कीन्हबिकलरिपुघन अतिकोपे। शरनमारि लीन्ह्यो रथतोपे ॥
तब रिपुसूदन अतिशय करषे। धनुषचढ़ाय बाणबहु बरषे ॥

मुरछित कीन्ह कठिनशरमारी । बाजिसहिततबअवधसिधारी ॥
योजन एक निकसि रथ आवा । पाछे कुँवर और यकधावा ॥
ललकारयो तिन हाथ उठाई । फिरहु सुभट कहँ जाहु पराई ॥
सरुष बचनसुनि भट सकुचाने । फिरे त्वरित रिपुदमनरिसाने ॥
कटकसहित आये अतिचोखा । जहां बीर वह ठाढ़ सरोखा ॥

दो० तानि शरासन कानलग त्वरित सिधारे बान ।
भयो न शङ्का तासु उर बीर धीर बलवान ॥

भयो परस्पर बचन सक्रोधा । दुहुँदिशि तमकिउठे द्वौयोधा ॥
इतउत चले उरगसम बाना । समरहोन लाग्यो भगवाना ॥
रिपुसूदन सुरपति सम बांके । कुसुमसमान लगैं शर ताके ॥
बहु छलबलकरि हारयो बीरा । तब तिन हत्यो मांझउर तीरा ॥
लागत शर मुरछित महिगिरेऊ । कहुँ निषंग कहुँ शारँगपरेऊ ॥
गिने सुभट बाचे बिन मारे । आये भागि ते अवध बिचारे ॥
जस आयसु प्रभु राउर होई । करहिं वेगि रघुनायक सोई ॥
सही बचन सुनि सुभट सयाने । रघुकुलतिलकरामपछिताने ॥
सब समाज मखके सुन बानी । बड़अचरजहिरदयअनुमानी ॥

दो० कृपासिन्धु वश शोच तब भरतहि तुरत बुलाइ ।
तात जाव जहँ भयो रण देखहु अनुजहि जाय ॥

तुरग समेत जीति रिपु आनो । इतना कहा तात तुम मानो ॥
को अस बीर कीन्ह रणभारी । मारयो रिपुसूदनहिं प्रचारी ॥
सुनत शोच उर भयो अपारा । कस वे जिन रिपुसूदन मारा ॥

जो अधीन है देहिं तुरंगा। कियो न तातसमर त्यहिसंगा॥
जो बलकरिपौरुष दिखरावहिं। सन्मुखतात तुम्हारे आवहिं॥
करिसंग्राम जीति रणमाहीं। हयसमेत आनो म्वहिंपाहीं॥
सुनि मृदुगिरा भरतशिरनावा। तुरत समरकर साज मँगावा॥
गज रथ साजि सारथी लावा। ध्वज पताक बहुतुवनसुहावा॥
सो० नाय रामपदशीश भरतगमन कीन्हे तुरत।
कहभुशुंडि खगईश संग क्षोहिणी चारिदल॥
भे सवार गजबदन मनाई। को कहि सकै भरत प्रभुताई॥
संग भूरिभट बरणि न जाई। देखत बनै सुनहु गिरिजाई॥
पवनसरिस रथ बेगि चलाई। भयो जहां रण पहुंचे जाई॥
देखा भट घायल रणखेतू। परे सकल रिपुदमन समेतू॥
अनुजविलोकि बहुतदुखमाना। धरिधीरज बोले बलवाना॥
खोज करहु बैरी बनमाहीं। सुनतमोहिंकहुंभाजि न जाहीं॥
भरतबचन सुनि सुभटसमूहा। खोजनचलेसमिटि करिहूहा॥
त्यहिअवसर मुनिबालकवृन्दा। गये देखनमुनिबाग अनन्दा॥
तहँ अवलोकि प्रबल कटकाई। चले भागि टेरत दोउ भाई॥
दो० जायपुकारे सुवनसब रहे जहां दोउ भ्रात।
लीन्हे अतिभटभूप कोउ घेरिलीन्ह बनपात॥
सुनि कुशलव सेना सब आई। तुरत उठे दोउ भट हर्षाई॥
कसि पटपीततुवन कटिलाई। लीन शरासन हाथ उठाई॥
सियपद बन्दि सुमिरिमुनिराई। सिंहठवनि गवने दोउभाई॥

जिमि केहरि नग नाग समाजू । लवहि देखि जिमि झपटै बाजू ॥
तस दोउ वीर सुनत कटकाई । गये बाग मन बिलम न लाई ॥
देखा तुरग बाग मुनिराऊ । ठाढ़ भये तहँ नहिं भयकाऊ ॥
हेरत विपिन सुभट तहँ आई । दीख तुरग दोउ बीर सुहाई ॥
शोभा देखि सुभट अनुरागे । भरि भरि नयन निहारन लागे ॥
करहिं परस्पर सकल बड़ाई । धनि विधि ज्यहि अस रूप बनाई ॥
दो० असशोभा नहिं दीख कहुं जहँ लगि विधि व्यवहार ।
सुन्दरता तिहुंलोक सब इन्हैं दीनि करतार ॥
रूप सराहि सराहि भवानी । बोले सुभट समय अनुमानी ॥
तुम बालक मुनि तप अधिकारी । यह अनुचित धनु बाण सँवारी ॥
सरवरि तुम राजन कर करहू । वश अज्ञान तो शर कर धरहू ॥
बाढ़्यो गर्व बांधि धनु भाथा । फिरौ निशङ्क कुँवर दोउ साथा ॥
कहत बहुरि अस नीति बखानी । कीजै वैर आप सम जानी ॥
कहँ वे अवधईश सुखरासी । कहँ तुम बालक मुनि बनबासी ॥
भल न कीन्ह हयको अपनाई । जीत्यो समर भरत लघु भाई ॥
त्यहि समान नहिं भारत जानो । बीरधुरीण सत्य करि मानो ॥
बिनश्रम तोहिं मारि क्षणमाहीं । छोरि तुरङ्ग अवध लै जाहीं ॥
दो० एकवीर पुनि भक्त दृढ़ शोभा शील नदीश ।
बहुरि अनुज रघुवंशमणि जिन मार्‍यो दशशीश ॥
मानो जो सिख कुँवर हमारी । सब विधि है तुम्हरी हितकारी ॥
तुरग समेत चलो हरषाई । मिलो सो कहैं अनुज रघुराई ॥

शारद कोटि कोटि अहिराई । महिमा भरत कहत सकुचाई ॥
अति कोमल चित भरतनरेशू । करैं क्षमालखि कुवँर ऋषेशू ॥
रिपुसूदन को बैर बिसारी । फिरैंअवध लै बाजि सुखारी ॥
कीन्हें समर पार नहिंपाऊ । घरबैठे भावे सो गाऊ ॥
भरत समान वीर जगमाहीं । नहिंदेखा कहुं सुनियतनाहीं ॥
सन्मुख जासु काल शिरनाई । ताहि समर जीतब तुमभाई ॥
त्यागहु हठ इरषा अभिमाना । भरत धर्मधुर भट बलवाना ॥
दो० तासों जीतब समर तुम सजि भूषण संग्राम ।
अबलग सूझ न दूध मुख बोलत बाणी बाम ॥
और बचन तुम सुनो हमारे । सजगहोहु सुनु ऋषयकुमारे ॥
हमहिं भरतआयसु असदीन्हा । खोजिचोरहयचाहियलीन्हा ॥
जहां मिलैं धरि बांधौ आजू । यतन समेत सवाँरो काजू ॥
कीन चहैं निज ईश रजाई । खाई जासु तासु यशगाई ॥
बय किशोर मृदु मंजुल गाता । देखि तुम्हैंनहिं कियउतपाता ॥
कीननकान जो हमसिखदीन्हीं । अबपैहौ भल आपन कीन्हीं ॥
असकहि सुभट सरूष है आये । लैकृपाण तब सन्मुख धाये ॥
कुश लव देखि सुभट रिपुभारी । गदा शूल तोमर करधारी ॥
पाछे राखि लवहि कुशबीरा । चापचढ़ाय संयुत करितीरा ॥
छं० गहितीर संयुत चापखींचि बिलोकि रिपुसेनामहा ।
छोड़्योकठिननाराचहँसि मानोप्रबल मारुतबहा ॥
लवनिमेष प्रमाण मा सब बीर रण घायल भये ।

॥ कहदास चेरे बहुरि कुशलव बाग मुनिनायक गये ॥
॥ दो० बचे सुभट दुइचार जे ते भागे गौं पाय।
॥ गये पुकारत भरतजहँ ब्याकुल बचन सुनाय ॥
नाथ सुभट जे आयसु पाई। खोजन लागे हय बन जाई॥
मिला न चोर न घोड़ मुनीशा। फिरे सुभट ब्याकुल जगदीशा॥
मध्यबिपिन यक मुनि अमराई। बांधा तुरग दीख तहँ जाई॥
बालक दुइ तहँ कृपानिधाना। खड़े सजगशर साजिकमाना॥
जानि चोर हय भटकह बानी। रेरे शठ तुव आयु तुलानी॥
तिन न कीनकछु हृदय अँदेशा। निपट निरंकुश तनय ऋषेशा॥
सब प्रकार हारयो समुझाई। तदपि न त्याग कीन लड़काई॥
भये क्रोध वश सुभट गोसाईं। सन्मुख युद्ध कीन वहि ठाईं॥
छिनमा सब योधा संहारे। तेजपुंज दोउ ऋषय कुमारे॥
छं० दोउ तेजपुंज कुमार ऋषि सुखधाम शोभा को कहै।
मृदुगात सुन्दर बयकिशोर अनङ्गलखि सकुचैंसभै॥
शिरजटा मूंज जनेउकुंडल कान अद्भुत सोहई।
अस कौनजीव सचेत जगमें जो न देखत मोहई॥
धनुबाणसुन्दरमानकुलकरि तुवनअतिशोभितभले।
अवनाथदेखिबिचित्रशोभा सकुचनिजलोकहिचले॥
दो० सकल सुभट रण खेत में परे मुरछि तजिप्रान।
खड़ेसुभटदोउसमरमहँ हृदय न कछु अभिमान॥
भरत सुन्यो सेना सब जूझे। कर बिषाद योधन सों बूझे॥

चढ़िरथ तुरत अबार न लाई । चले तहां जहँ मुनि अमराई ॥
सुमिरत प्रभुपद बारम्बारा । करत विविधविधि पंथबिचारा ॥
पहुंचे जहां भयो संग्रामा । भरतधर्मधुर बुधिबलधामा ॥
विपिन गँभीर महा अँधियारी । भूमिशयन सब सैन निहारी ॥
बड़े बड़े मुखिया सेनापति । सुरदुर्लभपावन जिनकी गति ॥
सकै न रण सरबर करि सोऊ । अतिबलवान ऋषयसुत दोऊ ॥
जानि न जाय चरित करतारा । गूढ़ असूझ अबूझ अपारा ॥
बोलत रण पग परत न आगे । धीरजहूके धीरज भागे ॥
सो० धीरज धरहु मुनीश सहित कटक आगूगयो ।
देख्यो सुवन मुनीश घेरे अश्वहि ठाढ़ सब ॥
त्यागि बाग रथ बाजि मँगावा । सुमिरिरामशिवउमा मनावा ॥
चढ़्यो अश्व धरिधीरज गाढ़े । गये जहां मुनि शिशु सबठाढ़े ॥
आवत देखि तुरग असवारा । भागे सकल ऋषीशकुमारा ॥
कुश लव पांव न पाछे डारा । खड़े बन्धु दोउकरें बिचारा ॥
जो भट मरे प्रथम रणमाहीं । तासु सहाय और कोउ आहीं ॥
जो नृप यह करजोर सुरीती । मांगे अश्व देहिं सुन नीती ॥
जो कछु बल प्रभाव दिखरावैं । तो सजाय अपनी यह पावैं ॥
असकहि बीर दोउ बलधामा । खड़े बाग छबि कोटिनकामा ॥
तबलग जाय भरत नियराने । पाणि सरोज बाण धनुताने ॥
दो० ताजनमारे अश्वके परचिउठा जिमि आग ।
खाई नांघत बागको नहीं बार कछु लाग ॥

मध्य बाग लखि अश्वसवारा । बढ़ि आगे तब कुश ललकारा ॥
अबसे जो पग आगे धरहू । यमपुरगमन सहितहय करहू ॥
जब सरोष बोले कुशबीरा । रोंक्यो बाग भरत रणधीरा ॥
सावधान ह्वै भरत भवानी । बोले अति कठोर कटुबानी ॥
रे हयचोर कुपथ मनराता । जसमुखअहै कहसिकिनबाता ॥
छोटेबदनकहसिकटुबानी । क्यहिबलविपिनफिरसिअभिमानी ॥
गुण अवगुण तुव करौं न काना । जस बैरी तस बालक जाना ॥
बचन कहत नहिं शंका तोहीं । कहै कठोर बचन बहु मोहीं ॥
सो सुनि मोहिं क्रोधनहिं सपने । जाहुकुमार कुशल घर अपने ॥

दो० अबलौं क्रोध न कीन मैं सुनो बीर बलवान ।
केहरिकेर स्वभावनहिं बधिशृगाल खर श्वान ॥

असकहि भरत मौन ह्वै रहे । कुश मुसुकाय बहुरि कुछकहे ॥
सो सुनि भरत अधिकरिसमानी । बधों न तोहिं सुवन मुनिजानी ॥
ममता मोह तुरग तजि भागो । अति सुकुमार बीररस त्यागो ॥
शिशु बिचारि मैं बहुत सँभारा । निपटकालवशभयसिकुमारा ॥
तोहिं निपात मखतुरग समेता । जाउँ अवध जहँ कृपानिकेता ॥
यद्यपि असबिचार मनमोरे । करों न सांच बिलोकत तोरे ॥
कुशलव हँसे सुनत रिपुबानी । मिला नरेश हमैं यह ज्ञानी ॥
जो उपदेश न गुरुन बतावा । सोहम आजु भूपसन पावा ॥
बैर बिसारि लीनहय चाहा । सोगति यहां अगम नरनाहा ॥

दो० आनो बोलिसहायकिमि विधिहरिहर अमरेश ।

। जबलग तनपर शीशहै मिलै न अश्व नरेश ॥

असकहि सजगभयेदोउभइया । सुमिरि मुनीपदपंकजमइया ॥
चाप चढ़ाय हाथमें कीन्हा । भाथाबांधि बिषमशरलीन्हा॥
पाछे तुरग राखिभे ठाढ़े । महाबली हथियारन गाढ़े ॥
युद्ध बिरुद्ध देखि दोउ बीरा । सहमे भरतभूप रणधीरा ॥
लगे बिचार करन अवनीशा । येन सुवन ऋषिराज मुनीशा ॥
अवशि राजबंशी हैं दोऊ । असशोभा नहिं जगमें कोऊ॥
मुनिवर वेष बसैं बनमाहीं । छबिनिधानलखिकामलजाहीं ॥
रिपुसूदन मद भंजनहारा । नहिं कोउ बीर सकल संसारा ॥
तेजपुंज अतिशय दिखराई । मनहुं संग सैना समुदाई ॥

॥ सो० बिन कीन्हे संग्राम हाथ न लागै तुरँग मख ।
॥ असबिचारिबलधाम कोपि लीन्हधनुबाणकर ॥

भुजा उठाय पुकारे योधा । आये जहँ तहँ सैन सक्रोधा ॥
कुश विलोकि रिपु सैनसमूहा । आये चहुँदिशि युत्थनजूहा ॥
लवहि सौंपि मुरचा भटभारी । सम्मुख राजन आप सिधारी ॥
कुश अरु भरत दोऊ बलधामा । लड़ैं प्रचारि भूमि संग्रामा ॥
दुहुंदिशि चलैं बाण अतितीछे । भूल्यो कोउ पगधरै न पीछे ॥
शरनभये तन झांझर दोऊ । तदपि न हटैं बीररण कोऊ ॥
धनुषबाण डारचो इकसाथा । भिरे दोऊ कृपाण लैहाथा ॥
सुनहु खगेश काकपति कहहीं । दोउ अघाय बलशरतररहहीं ॥
जूझे सुभट रहे जे संगा । परे भूमि रणशोणित अंगा ॥

छं० परेभूमि शोणित अंग भट बहु रुधिरके नारे बहे ।
डरपे सुरासुर देखिरण गये भाग नहिं कोउथिररहे ॥
बहुगिद्ध श्वान शृगाल केहरि मुदित भोजनपायकै ।
बैताल भूत पिशाच योगिनि पियेंरुधिर अघायकै ॥
कटकटहिंएकहिंएकघोरकठोरकहिभयदिखावहीं ।
नाचैं बजावैं तालगति रणराग सुन्दर गावहीं ॥
संग्राममहि दोउवीर कोपे तमकि धनुशायकगहा ।
भयेबिकल जीवसचेतसबनहिं धीर त्यहिऔसररहा ॥

सो० समर भरत कुशबीर देखा सुना न असकहूं ।
भरद्वाज मुनि धीर सुनो कह्यो जाबालि अस ॥

वहां सुभट सब लव संहारे । बहे अनेक रुधिर नद नारे ॥
तबलव अनुजओरत्यहिकाला । दै ललकार लड़ै महिपाला ॥
बड़ी भीर कुश ऊपर जाना । शरसन्धान चल्यो बलवाना ॥
दूरहिसे बोले लव बीरा । आये पुनि जहँ कुश रणधीरा ॥
दीख अनुज कहँ पाछे ठाढ़ा । लागे लड़ै अधिक बलबाढ़ा ॥
बाण प्रहार भूपरथ तोपी । समरअजरदोउअतिशयकोपी ॥
उमा भरत सम बीर न कोऊ । सकै न आज जीत रणसोऊ ॥
जबहिं कोपि कुश छाँड़्यो बाना । चुभ्योभरततनब्यालसमाना ॥
लागत बाण भयो उरपीरा । परेमुरछि स्यन्दन बरबीरा ॥

दो० देखि दशा भागे सुभट बचे जे जीवत खेत ।
जाय पुकारे ते सभी जहँ प्रभु लषण समेत ॥

शोणितअंग त्रासउर भारी। जायअवधपुर कीन्ह पुकारी॥
मुरछितभरतसचिव सुनिकाना। भयोविकलनहिंजायवखाना॥
पुनि धरिधीर तुरितचलिआयो। भरतदशा रघुबरहि सुनायो॥
सकलसमाज सहित रघुराई। सचिववचनसुनि रहे अरगाई॥
बिकलभई सुनिसुनि सबमाता। कहा बिरंचि कीन्ह उतपाता॥
पुरवासी सब अतिअकुलाने। सुनेहु जोजहांतहांविलखाने॥
पुरजन शोच शोचवश जानी। गुरुबशिष्ठ बोले मृदुबानी॥
तुम सर्वज्ञ ईश रघुराया। तुमहिं न सपनेहुव्यापीमाया॥
धरहुधीर असकह्यो मुनीशा। कीजेकाज यज्ञ अवधेशा॥
सो० सुनहु मुनीश सुजान धरोधीर करुणा अयन।
बिधिगतिलखि बलवान समुझिबुलाये अनुजलघु॥
लक्ष्मण कहँप्रभु तुरित बुलाई। हृदयलगाय निकट बैठाई॥
बोले सरल मनोहर बानी। दीनदयाल सुनहुमुनिज्ञानी॥
साजिसैन यहिअवसर जाई। देखो कहँ जूझे दोउ भाई॥
रिपुसूदन भारत रिपु पाई। हतरणखेत अश्वमख लाई॥
जो निजजान्यो कुवँरऋपीशा। कियो नरणातिनसंगफणीशा॥
जो क्षत्रीकर वेष छिपाये। फिरैं विपिन मुनिभेष बनाये॥
करब समर नहिं करब अबारी। आन्यहु वेगतुरँग बलिहारी॥
सुनिलक्ष्मण आयसु अवधेशा। चले नाय पदपङ्कज शीशा॥
लीन सैन चतुरङ्ग भवानी। जे सपनेहुंरणहारि न मानी॥
दो० पहिरि विविधिसन्नाहसब शूल शक्तिलै हाथ।

सम्मुख श्रीरघुनाथके सादर नावहिं माथ ॥
तब लक्ष्मण बोले कर जोरी । बाणी मधुर सुधारस बोरी ॥
जो करिकपट भूपसुत कोऊ । करहिं ठगी बनमें बसिदोऊ ॥
तो बध करब न भेष बिचारों । तुरँगसमत निकेत सिधारों ॥
जो मुनीशसुत आहैं दोऊ । तो जस आयसु साहबहोऊ ॥
तस मैं करों जाय बनमाहीं । अनुचितकहिनसकोंप्रभुपाहीं ॥
सुनिरघुनाथ विनय लघुभ्राता । बोले विहँसिमधुर मृदुबाता ॥
सुनो तात तुम परम बिबेकी । कस न कहो परमारथ टेकी ॥
सोई करव मिलै जेहि बाजू । आनभांति सबहोइअकाजू ॥
गहि पदकंज मंजु रघुराई । लक्ष्मणचल्यो सभाशिरनाई ॥

दो० सुमिरिशिवाशिवचढ़्योरथ सम्मुखसैनचलाय ।
बारंबार सँभारि उर पदपङ्कज रघुराय ॥

चली कटक लक्ष्मण खगनाहू । सेना प्रबल त्रासनहिं काहू ॥
सुभटन भार धराकुर्म कांपू । मेरु चूरभे हय गज टापू ॥
करहिं कोलाहल भटमगजाता । आगे यान रामलघुभ्राता ॥
निकट विपिन रिपुआये जबहीं । बोले बचन लषणअसतबहीं ॥
है सब मौन फिरहु बनजाई । लेहु खोज हयरिपुदोउभाई ॥
देख्यो जहां न बोल्यो भाई । शब्दआय मोहिंकह्योसुनाई ॥
तब मैं विपिन घेरि चहुँ ओरा । सहजै बांधिलेउँ हयचोरा ॥
असकहि कीन्ह बिदा सबबीरा । बीरधुरीण लषण रणधीरा ॥
सुभट जबहिं बन पैठन लागे । कसमसात पगपरै न आगे ॥

छं० पगपरै न आगे सुभटके लखि सघन बन भारी महा।
यकएक बीरधुरीण समरथ धीर नहिं कोऊ रहा॥
निजनाथ काज बिचारि जिय पर तेज बनबैठीसही।
तेहिसमय सैनाबिकलता नहिं जात कछुमोसोंकही॥
सो० जानि रामको काज तापर आयसु लक्षिमन।
खोजनलागे बाज जहँ तहँ बनमें पैठि सब॥
दो० सकल विपिन यकओरते चले सुभट सुधिलेत।
कहूं न पायो अन्त हय दोऊ कुवँर समेत॥
हेरत विपिन फिरत कटकाई। कहूं खोज मखबाजि न पाई॥
ठाढ़ परस्पर सब पछिताहीं। रामरामकहि कहँ अबजाहीं॥
जो बिन खोज तुरँग अबजाई। कौनबदनलक्ष्मणहिंदिखाई॥
नहिंसुधिभोजनअरुजलपाना। फिरहिंविपिनसबयथाअयाना॥
तेहिमा एकसुभट बिलगाई। गयो जहां बनटेढ़ सुहाई॥
तहां देखि सुन्दर मुनिबागा। तरुरसाल नवपल्लवलागा॥
सुरपति बाग न पटतर आवा। तुरँगसमेत चोरहय पावा॥
चल्यो तुरत लक्ष्मणके पासा। जानिविपिनहयचोरनिवासा॥
मिले सकलभटसुभट निहारी। पूंछनलागे खबरि सुखारी॥
दो० मुदितभये सुधिपाय हय सहितचोर बनमांझ।
सीधचले लक्ष्मण जहां गयो दिवस भै सांझ॥
लक्ष्मण आय चरण शिरनाई। सुधि मखबाजिकह्योहरपाई॥
महाटेढ़बन नाथ सुहाई। भानुप्रताप न सपनेहु जाई॥

देखा तहँ यक मुनि फुलवारी। बाजिसहित दोउचोरनिहारी॥
पन्थनगजरथ हयरथ शेखा। पातपात सबबन हम देखा॥
सत्यबचन सुनि सुभट अनन्ता। सजगकह्यो भटबोलितुरन्ता॥
निजस्यन्दन साहनी पुकारी। चढ़े तुरँग लक्ष्मण बलधारी॥
चतुरङ्गिणी अनी समुदाई। कछुआगे कछुपाछे जाई॥
करि आगे सो सुभट भवानी। जिनबनशोधिअश्वसुधिआनी॥
कसमसात भट मारग जाहीं। भ्रमबशचौंक देखिपरछाहीं॥
छं० चौंकैं सुभट बन पातखड़कत पाँवनहिं आगे परैं।
जे पायअधजीवनविपिन क्षणचलैंक्षणफनफनकरैं॥
अकुलाय भट पछिताय तहँवाँ देव इष्ट मनावहीं।
चेरे लषण सेनासहित पुरचलैं तहँ फिर आवहीं॥
सो० भयबशभे सबबीर देखि बिपिन हास्यो हिये।
लक्ष्मणसे रणधीर काको आनि गिनाइये॥
दो० शारदूलके नादसुनि जहँ तहँ सुभट डेराहिं।
मारगमें कसमसभई बिना जीव सब जाहिं॥
खड़खड़ाहिं शूकर सुनि चालू। पिहँकैं गज ठहुकैं कपिभालू॥
केहरिनाद चहूं दिशि होई। महासघनवन जाय न जोई॥
कांपे उर लक्ष्मण रणधीरा। अमितशत्रु जसहोय अधीरा॥
सम्भित तजी बीरता भारी। जनुठगजीहलीन्हज्योंमारी॥
रहा न तेज न दृढ़ परकाशा। तजी सबन जीवनकी आशा॥
घेरिलीन चारो दिशि बागा। बाद बिनोद होन पुनिलागा॥

लवको राखि अश्व रखवारी । कुश सम्मुखह्वै नृपललकारी ॥
को तुम कहो कहांते आवो । बाहर रहो न बाग मँझावो ॥

दो० असकहि चापचढ़ायकुश बोलेबचन सकोपि ।
कसीचारि बढ़ि तुरँगसे भेठाढ़े पदरोपि ॥

ललकारे बाजै असवारा । को तुम यहां कहां पगधारा ॥
बैरि जानि ताते कटकाई । अति निशंक आवें फुलवाई ॥
देखि भीर सेना सँग भारी । मैंजाना कहुँ अन्त सिधारी ॥
सो अरुझे तुम हमसन आई । कहां कुशल नृपकहो सुनाई ॥
फरक रहो जनि पैठोबागा । हमहिंतुमहिं अबलागीलागा ॥
अससुनि लषण रोंकिहयराखा । योधनसों अपने असभाखा ॥
रहोठाढ़ जहँ तहँ सब वीरा । रिपुबललखिजनिहोहुअधीरा ॥
जो आपुहि हय देहिं मँगाई । तौन उचित सँगकरियलड़ाई ॥
जो कछु बलपौरुष लखिपाई । तो बांधो हय लेहु छुड़ाई ॥

दो० रामअनुज बानी बिमल सुनि हरषे सबबीर ।
सजे समर हथियार भट खड़े बागके तीर ॥

कह्योलषण सुनि ऋषयकुमारा । कस बांध्यो तुम अश्वहमारा ॥
तुरँग बांधि करि पौरुषभारी । भारत रिपुसूदन रणमारी ॥
कौन मोह बाजैपर तोहीं । मूरख कटुक बचन कहे मोहीं ॥
में पुनिनीति समुझिमनमाहीं । अबलग क्रोध कीनउरनाहीं ॥
अबहूं कुशल तुरँग मोहिं दीजै । मुदितपयानभवननिजकीजै ॥
देखि वेष मुनिवर दोउ बीरा । राख्यो रोंकि सुभटरणधीरा ॥

सो तुम नहिं मुनिबालक दोऊ। शोभा अमित भूप सुतकोऊ॥
तुमसन निडर कहां मुनिजाये। असरण तेज कहां उन पाये॥
कछु अपराध कीन्ह तुम भारी। सो विचारिपितु दीननिकारी॥
दो० धनुष बाण बांधे फिरौ ऋषि मुनि भेष बनाय।
करहुविपिनबसिदिवसनिशिमोहविवशअन्याय॥
अप्रिय वचन लषणकछु भाखे। सोसुनिअधिककुँवरदोउमाखे॥
भे सरोष दोउ बन्धु विशेखी। बोले वचन भूप दिशि देखी॥
कहत वचन लघु शोभा नाहीं। देखो नृप विचारिमन माहीं॥
सो नहिं शोच हमैं कछु राजा। जोतुमकहहुतुमहिंसबछाजा॥
करहु बिलम कस रचहुउपाई। मारि हमैं हय लेहु छुड़ाई॥
जग अस बीर कहां सुनु राजा। हमको जीति जाय लै बाजा॥
ब्रह्म विष्णु शङ्कर से गाढ़े। सो सम्मुखरण होहिं न ठाढ़े॥
तहां कौन पुरुषारथ आना। जाहुकुशलभूपति बलवाना॥
जो पै मरण समर जियठानी। होहुसजगनृपसुनि ममबानी॥
सो० असकहि दोउरणधीर धनुषचढ़ायसिधारिशर।
जहां अनुज रघुबीर पहुंचे सम्मुख जाय तब॥
लछिमन देखि सरुप दोउबीरा। चाप बाण कटिकसे तुणीरा॥
काल समान ठाढ़ दोउ आगे। मानों जीव चहत लै भागे॥
यदपि अनन्त महा भटमानी। तदपि न धीरज रहा भवानी॥
कछु धीरज धरि आप सँभारी। बोले वचन समय अनुहारी॥
हमहिं तुमहिं कत सोह लड़ाई। अबहुँ कुशल हय देहुमँगाई॥

सुनत वचन तमकेउ दोउ भाई । रेमहीप त्वहिं लाज न आई ॥
जबलग जीव रहै घट माहीं । तबलग अश्व देब नृप नाहीं ॥
हाथ जोरि पदत्राण निकारी । सम्मुख बिनती करहुहमारी ॥
जो कदापि हमरे जिय आवै । तो कहुँ तुरंग भूप तैं पावै ॥
दो० ऐसे अनुचित बचन बहु कहा जबै दोउ बीर ।
भयो क्रोध सुनि लषणके बोले गिरा गँभीर ॥
रे बालकहु अबूझ अयाना । लखिस्वरूपमुखबचनसयाना ॥
मैं त्वहिं मुनिवर तनय बिचारी । अबलग बहुतै क्रोध सँभारी ॥
अब न तजौंशठतोहिंयहिकाला । मारि भूमिरण करौंबिहाला ॥
शत्रु मोहिं कोशलपुर भूपा । अजितअनामयअगुणअरूपा ॥
देखत तोहिं लेउँ मख घोड़ा । जाउँअवधशठ सुनुप्रणमोरा ॥
हम क्षत्री क्षत्री सन लड़हीं । द्विजमुनिवरऋषितापसडरहीं ॥
सो तुम नहिं मुनिबालक दोऊ । रूप छिपाय भूप कुल कोऊ ॥
इतना कहत लषण रणधीरा । सजगभये दृग पुलकशरीरा ॥
मुख अनुहार देखि अवधेशा । लागे करन बिचार फणीशा ॥
दो० कहां तनय अस ढीठ मुनि रहैं ठाढ़ शरजोर ।
छाया रघुबर बदनकी देख कहत मन मोर ॥
यहि बन बसत कहूं बैदेही । सुवन प्रताप बली ये तेही ॥
असकहि प्रभुआयसु अनुमाना । सुभटबुलाय कह्यो बलवाना ॥
जियत धरहु दूनों कहँजाई । बांधि कुवँर हय लेहु छुड़ाई ॥
अससुनि सुभटचले त्यहिओरा । करि मृगनाद महाअतिघोरा ॥

लीन घेरि चहुँदिशि मुनिबागू । अति सभीत पगपरै न आगू ॥
कुश बिलोकि सेना रिपु आई । विहँसि शरासन तुरत चढ़ाई ॥
शत शत बाण जोरि यकसाथा । मार्यो सुभटन उर भुज माथा ॥
लवनि प्रमाण सुभट सबछीजे । देखिदशालछिमन तबखीजे ॥
तुरँग त्यागि उतरे रणधीरा । लीन सकोप हाथ धनुतीरा ॥
दो० अति सकोपकहि वचनकटु छांड़े विशिखप्रचंड ।
कुश बलवंत सो बाण नृप काटिकीन्ह शतखंड ॥
लछिमन देखि प्रताप सकाने । आपते सरिस बीर दोउजाने ॥
दूसर बाण कोपि पुनि मारा ।लवकुशविहँसिकाटिमहिडारा॥
होहिं निफल इमिबाणभवानी । जिमिपाखण्डीकीहितहानी ॥
कुशविलोकि भूपतिरिसिआना । आपनधनुषश्रवणलगिताना॥
नृप ऊपर बरषा शर कीन्ही ।समरसिखावनबहुविधिदीन्ही॥
उत लव सुभट जे भूपति सङ्गा । मारिशरनकियेशोणितअंगा॥
कहुंभुज मुण्ड कहूं अब रुण्डा । धरणिगिरहिंधुनिहोयप्रचंडा॥
बहुत गिरैं बहु उठैं सँभारी । चिघरैं बीर नादकरि भारी ॥
बनगिरि खोह नदी नद नारे । शोणित से पूरण भये सारे ॥
छं० सारे नदी नद नार कन्दर खोह शोणितसों भरे ।
कहुं कतहुं वार न पार सूझै सुभट सब घायलपरे ॥
अधिकारआमिषरुधिरलखिबनजीवसबआयेतहां ।
भरिउदरखायअघाय जहँतहँ फिरेघरजाकर जहां ॥
सो० लवनि एक परमान सकल वीर महिमें पर्यो ॥

चले जहां प्रियप्रान कुशरणधीर बड़ो अनुज ॥
लव तहँ आय अनुजपद बन्दे । मिलिसप्रेमदोउबन्धुअनन्दे ॥
शोभित धनुष बाण युगहाथा । घेर्‌यो आय अनुजरघुनाथा ॥
मार्‌यो बाण बज्र ह्वै लागे । उचकिउचकि घोड़े रथभागे ॥
घायलभये घोड़े रथ टूटे । मातलिमरे पताका टूटे ॥
विरथभये लक्ष्मण खगराई । बूझि न जाय राम प्रभुताई ॥
कहँ लछिमन कहँ वे दोउवीरा । कहँअगस्त्यकहँ सिंधुगँभीरा ॥
प्रभुसमरत्थ तिहूं यश गावा । असकहियाज्ञवल्क्यशिरनावा ॥
तब सम्मुखह्वै कुश ललकारा । उठहुसँभरि महिपालकुमारा ॥
दूसर रथ मांगो युवराजा । साजहु सबभूषणरणसाजा ॥

छं० संग्रामसाज बनाय भूपति सजगह्वै अबआइये ।
जाको बिधाता तुरँग दे सो आज रणकर पाइये ॥
यहिभांति बारहिंबार जब ललकार कुश बाणीकहे ।
सकुचे लषणलखि रिपु बली करि चिंतवनठाढ़ेरहे ॥

सो० रहा न धीर खगेश वीरधुरीण अनन्त अस ।
कौतुक रमा रमेश कहा काग जानैं कवन ॥

असकहिकुशलछिमनअनुमाना । बिनमारे मारा तेहिजाना ॥
कछुक सुभटमारे लव बाचे । फिरे ते कालशीशजेहिनाचे ॥
कुश सम्मुख आये नियराई । मारि शरनतेहिधरणिसुवाई ॥
गिरिजासन असकह्यो महेशू । दुइक्षौहिणी सुभट सँगशेशू ॥
ते लछिमन सारथी समेता । अबलग बाचि रहे रणखेता ॥

तब सारथी अपररथ आनी । बहुरि चढ़े रथ लषणभवानी ॥
सो अब होन चहत बिनप्राना । जब कोपैं दोउ भटबलवाना ॥
प्रभुकारज लखि जो तनुजाई । सबप्रकार मोहिं नेकभलाई ॥
अस उर मन्त्रदृढ़ाय भवानी । लषणचले शरशारँगतानी ॥
दो० जबै लषण चढ़ि अपररथ गये जहां दोउबीर ।
उत्तर प्रतिउत्तर भयो बोले दोउ रणधीर ॥
मारु परस्पर होय भवानी । दोउरणधीर बीरअभिमानी ॥
बाणचले दुहुँदिशि अतितीछे । छेदि अंग निकसे है पीछे ॥
पहर दुइक यहिभांति भवानी । दोउबीरन रणशङ्कर ठानी ॥
दोउघायल तन शोणित अङ्गा । रुधिरप्रवाह बहै सब अङ्गा ॥
कुशजान्यो भूपति रणकोपा । मारिशरन तेहिक्षणरथतोपा ॥
जोइ जोइ शर लछिमनबलवाना । घावकरतकुश अङ्गसमाना ॥
सोइसोइ बाण काटि पटपोंछा । बहुत गहिर बहुलागेओछा ॥
यदपिघाव कुश झंझर देहा । तदपि न कुशमनकछुसंदेहा ॥
खींचिशरासन शर सन्धाना । बोले गरजि महाबलवाना ॥
दो० सजगहोहु महिपाल अब बहुतप्रचारे मोहिं ।
शपथ मोहिंमुनिपदकमल आजुबधौंरणतोहिं ॥
असकहि छांड़े विशिखकराला । लागे तन लक्ष्मणहै काला ॥
लागे बाणहृदय अतिकारी । जूझेरण लक्ष्मणबलधारी ॥
मुरछि विलोकि भूप रणधीरा । निकट गये कुशलवदोउबीरा ॥
देखा निपट कुसाज महीपा । अन्तष्करण बुझानी दीपा ॥

तब दोउ बन्धु पूजि रणखम्बा। कीनगवनगृहजहँसियअम्बा॥
देखा जाय अपय फुलवारी। पात पात चहुँओर निहारी॥
बांधा देख तुरँग मख घोड़ा। भवनचले हियहर्ष न थोड़ा॥
आय मातुपद बन्दि सुखारी। पाय अशीष भयो सुखभारी॥
घायलसुवन विलोकि भवानी। जनकसुता तब रोदन ठानी॥

छं० जबरोदनठानीसियाभवानीविकलभयेबनजीवसुनी।
धरि विप्रस्वरूपा महाअनूपा आये सब बनदेवतनी॥
धीरजधरअम्बा हेजगदम्बा सुखीरहैं दोउपुत्रसही।
बहुविधिसमुझाईकथासुनाईगयेभवनअसबातकही॥

सो० प्रसनदेव निजमान अमित देख सियतनयकुल।
करत बचनपरमान सदासर्व अतिसुखी तुम॥

इतना कहि बनदेव सिधाई। भै सियशुद्ध सुवन उरलाई॥
चूमिचाटि अतिआदर हेतू। पूंछन लागि कथा रणखेतू॥
जोइजोइ सिय पूंछा इतिहासू। सोइसोइ कह्यो न हर्षहिरासू॥
देखि क्षुधित सिय दोऊ बारे। दीन मलीन न जाहिं निहारे॥
सूखेबदन लाट मुख लागी। कांपतदेह भूखकी आगी॥
तुरत उठी लीन्हे करथारी। धरि पकवान लाय महतारी॥
लागे जेवन दोऊ भैया। मुदित पियारकरै सियमैया॥
सुखी भये करि भोजन नाना। नींदविवशकछुदृगअलसाना॥
सूते पलँग तुरित दोउ भाई। भई सुखीसिय शोचविहाई॥

दो० यामएक निशि रहीजब तबै उठे दोउ भ्रात।

गावें यश रघुनाथ शुचि जो मन शब्दसुहात॥
सो० सुनिमुनि शुभइतिहास गूढ़ महायह चरितबर।
शम्भु उमा कैलास कहा कागसन विहगतब॥
आगे चरित सुनो गिरिजाई। अतिअगूढ़नहिं गायसिराई॥
यज्ञसभा बैठे रघुराई। भीर बड़ीऋषिमुनिसमुदाई॥
राजनीति अरु वेद पुराना। कहैं बशिष्ठ करैं सबकाना॥
सुन्दरजप कर भाग सवाँरैं। पढ़िपढ़िमन्त्रअनलमहँडारैं॥
तहँ प्रभुकह असबचन सप्रीती। आयनलषणबहुतादिनबीती॥
तेहिअवसर नभते भै बाणी। जूझेरण लक्ष्मणहम जानी॥
योधासंग बचे नहिं कोऊ। मुरछिपरे मारे उन दोऊ॥
एक न बचे सुभट समुदाई। जो यह खबरिअवधपहुँचाई॥
अजर अमर रण वे दोउ बारे। सुभट न तिहुँपुर जीतनहारे॥
सो० बानी सुनत अकाश त्राहि त्राहि कहि लोगसब।
शोचे प्रभु सुखराश उमा दशा सुनि अनुजलघु॥
गुरुसमीप जोरे दोउ हाथा। बोले मधुरवचन रघुनाथा॥
नाथ कहिय जस होय उपाई। करों सोई परमान रजाई॥
शोचविकललखिकोशलराया। मुनिनायकविधिवतसमुझाया॥
नहिं विषादकर अवसर आजू। धीरज धरहु भूपाशिरताजू॥
सैनसवाँरि गवन बन कीजै। कहँ जूझे भाइन सुधि लीजै॥
लखिआयसु मुनिवर रघुराई। सचिव सुमन्त समीपबुलाई॥
मखआरम्भ पूजि हय छाड़े। कीनसुभटतेहिसँग अतिगाढ़े॥

सोहय अबलग फिस्यो न ताता। खेतरहे सँग तीनहुँ भ्राता॥
जाउँ तहां गुरु आयसु दीना। साजहु सैन सचिव परबीना॥
दो० लवनि एक परमान मोहिं बीते कल्प समान।
करियबिलम्ब न तात कछु कीजै वचनप्रमान॥
सुनत सचिव रघुनाथ सुबानी।गहिपदविविधभांतिसन्मानी॥
आयसु नाथ शीशपर लीन्हा।उचितबिनयचाहौंकछुकीन्हा॥
जो आयसु पावों रघुराई। तौ कछु कहौंचरणशिरनाई॥
सचिवविनय सुनि रघुकुलकेता। बोले बचन विवेकसमेता॥
कहहु तात जो मन अनुमाना। जानौंतुमकहँ तात समाना॥
सुनि मृदुगूढ़गिरा भगवाना। सचिवसुमन्तचरणलपटाना॥
नाथभयो ममउर दुखभारी। सेवकआछत आपुसिधारी॥
आयसु होय जाउँ रघुनाथा। जूझेअनुज जहां हयसाथा॥
जस आज्ञा देइय मोहिं स्वामी। सोई करब चरणअनुगामी॥
सो० सचिवबचन सुनिराम बारबार आदर कियो।
तुम सब पूरणकाम रहहु अवधअस रामकहि॥
मैं अब जाउँ वहां सुन ताता। देखौं जाय दशा सबभ्राता॥
को अस वीर भयो जगभारी। जो रणखेत अनुजसबमारी॥
देखहुँ कौन द्वीप सों आयो। जो बनमें असरारिमचायो॥
जो मुनितनय तो कीन कुचाली। जोपै भूप तोप्रणप्रतिपाली॥
देखिसचिव रुख दीनदयाला। तुरतगया जहँहयगजशाला॥
साजहु तुरग मतँग अतिभारी। रथसुखपाल विमान सवारी॥

फिरे दूत कोशलपुर खोरी । भे भट सजगहरष नहिंथोरी ॥
साजि समर हथियार भवानी । भे यकठौर न जायबखानी ॥
दो० तब सुमन्त पदकमलप्रभु गहे जोरियुगपानि ।
भई तयारी सैनप्रभु असकहि बिबिध बखानि ॥
नित्यक्रिया करि तब रघुराई । पूजिमहेश मुदित शिरनाई ॥
गजरथ चढ़ि रघुनाथ मुनीशा । बोलिसुमन्तकह्यो अवधेशा ॥
राखब रुख मुनिनायक केरी । जो मुनिकहैं सोकरब न बेरी ॥
करि आगे सब सुभट भवानी । हांक्योरथ मातुलरुखजानी ॥
चले साथ अङ्गद हनुबीरा । जाम्बवन्त योधा रणधीरा ॥
चलत राम बहुशकुन सुहाई । को कहिसकै बीर समुदाई ॥
आश्रम बालमीकि नियराई । देखि गेढ़बन सुभट डेराई ॥
धाय खातजिमि कालकराला । ठोकैं केहरि विविधविशाला ॥
देखि विपिन नहिं धीरज होई । यहबन कहोजायकिमिकोई ॥
सो० लखि बन महागँभीर परै न आगे पाउँ कोउ ।
कृपासिंधु रघुबीर बोलि सुभट असबचन कह ॥
धीरजधरि पैठो बनमाहीं । बनचरलोग न कोउसमुहाहीं ॥
खोजहु तुरग डरहुजनि काहू । भयतजिसकलविपिनमहँजाहू ॥
पावो खोज जहां मखबाजू । आनहुबेगि न होय अकाजू ॥
सुनि आयसु जहँ तहँ कटकाई । कीन प्रवेशत्वरित बनजाई ॥
खोजनलागे तुरग मुनीशा । योधामहँ भटसँग अवधेशा ॥
नदी खोह गिरिकन्दर भारी । पातपात बनसकल निहारी ॥

पगपग शोधत सुभट सयाने। जाहिं चले बनसघन समाने ॥
फिरहिं सुभट बनमें सबधावा। खोज तुरग काहू नहिं पावा ॥
सुनि मुनिवर व्याकुल कटकाई। देख्यो फिरत एक अमराई ॥

दो० तहां बाजि मख देख तिन खड़े सुवन दुइचार।
बोले सुभट बिनीत तब मुनिबालकन निहार ॥

सो० सुनहु तनय मुनिराय सुन्दर बाजि अनूपअति।
कहि नरेशसों जाय लीन्हेहु मांगि तुरंग यह ॥

सुनि यहबचन तुरँगरखवारे। उठे सकोपि नयन अरुणारे ॥
बोल्यो उचित सुनो यह भीरा। तुम केहि हेतु फिरो बनबीरा ॥
निजभुजबल हम लीन तुरंगा। मारे अमित अनी चतुरंगा ॥
सो तुम कहत कि गाय बजाई। कोउ नरेशहि लीन रिझाई ॥
अस सन्देह तो लेहु लड़ाई। ईश देय सो लेय बड़ाई ॥
बचन परस्पर सुन सुन गाढ़े। रहे दोउकुँवर उमा कहुँ ठाढ़े ॥
धाये साजि शरासन बाना। परमधीर दोऊ बलवाना ॥
भीर देखि मुनिवर फुलवाई। आये सीध तहां दोउभाई ॥
रखवारेनकी सङ्कट देखी। उठेतमकिदोउकुँवरबिशेखी ॥

छं० भा क्रोध दोउ रणधीर मुनिवर चापशर कर सोहई।
नखशिखअनेकमयङ्कशोभा कामरतिलखिमोहई॥
बोले सकोप बिलोकि योधा तुरित सम्मुख जायकै।
अस कौन कीन्ह अनीत मूढ़हु बाग घेरेहु आयकै ॥
तजिबागजाहुपरायजहँ तहँ जो भलाअपनाचहहु।

नहिं होहु सकल पतंग दीपक जो इहां ठाढ़े रहहु ॥
असकहिबहुरिकुशधनुचढ़ाये बिषमशरजोरतभये ।
सिमिटेसुभटलखिअतुलबल मुनिबागतजिबाहरगये॥
सो० त्यागि सुभट मुनिबाग खड़े भये मैदान लखि ।
बचन बाणसम लाग कछुक गये निजनाथपहँ ॥
नाय शीश प्रभुचरण भवानी । कथासकल मखअश्वबखानी॥
नाथ बिपिनमहँ बाग मुनीशा । बांधा तुरँग तहां जगदीशा ॥
सुवन घने ऋषि मुनिवर देवा । हाथोंहाथकरैं हय सेवा ॥
घेरा बाग जहां मखघोरा । रखवारन तब कीन्ह्यो शोरा ॥
त्यहि अवसर दुइ कुँवर अनोखे । शोर सुनत कतहूं अतिचोखे॥
रूपराशि सुठि अंग सुहाई । बिधिअसछबिनहिंसकैबनाई॥
उपमा नहिं त्रिभुवनमा कोऊ । जस सुन्दर मुनिबालकदोऊ ॥
कर शर बिषम तूणि कटिबांधे । मैनचाप शोभितअतिकांधे ॥
देखत छोट महाबलधामा । जीतिसकै को करिसंग्रामा ॥
दो० बय किशोर सुखमासदन कोटि कामछबि लाज ।
सिंहनादलौं शब्दकर आप तहां मखबाज ॥
ताके भय सब सुभट डराई । भे बाहर तजि मुनिफुलवाई ॥
समिट ठाढ़भे लखि मैदानू । भयोक्रोध जनु प्रबलकृशानू ॥
होन चहत संग्राम अपारा । प्रभु आयसुजसहोयतुम्हारा ॥
बोले तब कृपालु रघुराई । मिलै तुरँग सो करहु उपाई ॥
इतनाकहि कटिकस्यो निषंगा । लीन्ह्यो हाथ कठिनशारंगा ॥

शीश नाय महिदेव मुनेशा । चढ़े तुरँग तिहुँलोक नरेशा ॥
विपिन प्रवेश कीन सियरवनू । साथ ऋषभ अंगद सुतपवनू ॥
मुरछित वीर परे रणमाहीं । पगभर पंथ मिलै कहुं नाहीं ॥
भरत लषण रिपुदमन समेतू । सुभटसहित रणपरे अचेतू ॥

सो० उमासुनोचितलाय याज्ञवल्क्ययहशुभचरित ।
भरद्वाजप्रति गाय वायसनाथ खगेशते ॥

सुनि रघुवर इतिहास अनूपा । सुनहु सुताहेमञ्चल भूपा ॥
हरनशोक संशय तम भारी । अरुचितचाव बढ़ावनहारी ॥
व्यापकब्रह्म चराचर स्वामी । सुरनर असुर जासु अनुगामी ॥
अविगत अविनाशी निष्कामा । स्वइमम इष्टउमा सियरामा ॥
असकहि कामधेनु शिरनावा । देखिदशा गिरिजा सुखपावा ॥
लागे बहुरि कहन वृषकेतू । ज्यहिविधि रामगये रणखेतू ॥
दशाअनुज अवलोकिभवानी । लखिरघुवीर अचम्भवमानी ॥
बोली बोल समीरकुमारा । विधिगतितात न जायविचारा ॥
कहँ रिपुदमन सुभट रणधीरा । कहँ वे मुनिकिशोर दोउबीरा ॥

सो० वयकिशोर दोउबार कहँ रिपुसूदन अजरभट ।
अचरज पवनकुमार कहै कवन बूझै कवन ॥

दो० उमा करत नर यों चरित धरे मनुष्य कृपाल ।
निरखिदशारिपुदमनभटभयेविकलत्याहिकाल ॥

आगे चले राम रणधीरा । मुरछित विपिनदेखिसबबीरा ॥
कोउ कहरैं कोउ मांगैं बारी । कोउ घुमरैं कोउ उठैं सँभारी ॥

धरुधरु मारु पुकारैं कोऊ । कोउ उसकैं मूँदे दृग दोऊ ॥
देखा जाय भरत गति आगे । परेमुरछि रथपर शर लागे ॥
भरे अन्वशर चाप निषङ्गा । बाणनते बेधे सब अङ्गा ॥
बीर धुरीण भरत जगलीका । साधु सभा सुर मुनिमहँटीका ॥
ते अवगतिकर सुवन मुनीशा । सोवत समरभूमिधरिशीशा ॥
देखी कस वे ऋषय कुमारे । जो अगणित सेना रण मारे ॥
लखि करतूति तासु मन शोचू । कहत तात उर होत सकोचू ॥
सो० कहां भरत रणधीर कहँ वे युगल किशोरमुनि ।
समुभत तनयसमीर ज्ञानिहु होत बिमोहबश ॥
असकहि राम चले मुनिराया । जाकोसपन्यहुमोह न माया ॥
नरअनुहार चरितकर सोई । पोषणभरण बिश्वकर जोई ॥
चला तुरग आयो मुनि तहँवां । मुरछितलषणपरेरणजहँवां ॥
जबरघुकुलमणिअनुजनिहारी । नयनस्रवतजल रामखरारी ॥
सुभट समेत समरमहँ सोई । शरन पूरतन जाय न जोई ॥
जे अनन्त घननादहि मारी । ते दोउ मुनिबालकन सँहारी ॥
असअनरथविधिकहँनहिंशोभा । चरितबिलोकिमोरमनक्षोभा ॥
कहतवचन भरभर जल नयना । सुनहुमुनीश रामसुखअयना ॥
सो० यथा मीन जलहीन परे जाल तलफै परी ।
लक्ष्मण तथा मलीन यदपि उमा गाढ़े सुभट ॥
दो० देखि विपिन संग्राम महि शीलसिंधु सुखधाम ।
बड़े वड़े मुखिया सुभट जूझे करि संग्राम ॥

ऐसे वचन कहत रघुबीरा । जायँचले बनघनहिं गँभीरा ॥
चौंकत तुरगानिरखि गजअरणी । महाविकटपगधरत न धरणी ॥
सुनिसुनि रोदन खेत अपारा । रहै ठिठुकि हयटरै न टारा ॥
पिछरत लौटहि डहर निहारी । यदपि ताड़ना देहिं खरारी ॥
बहत रुधिर घावनते कैसे । घनमें प्रभा भानुकी जैसे ॥
गेरु पनार नील गिरि जैसे । त्यहिमें उदय धनुषछवि तैसे ॥
बहे अमित शोणितके नारे । कोल करार न जाहिं निहारे ॥
कोल बराबर लोथनकेरी । ऊँचकरार मतंगज हेरी ॥
बिन पग अश्व भये तहँ कैसे । मक्र ग्राह जलनदमें जैसे ॥

छं० बहे चर्म कच्छसमान शोणित धारमें कवि को गिनै ।
गजशुण्डमुण्डौ सूससम उतरान बहु देखत बनै ॥
करडारि सांग निषंगशायक विपिनगति उनकीभई ।
बहुमुण्ड तोमर बिरन कर नहिं जात चेरेसों कही ॥
भटसुभट मनहुँ जहाज सुंदर कहनको सबखलभले ।
बहु जिन्स भूत पिशाच योगिनि बैठि त्यहिपारैचले ॥
बिकराल बदनपसारि आमिष खानको गरजहिंतहां ।
खर गिद्ध श्वान शृगाल गालबजाय कह जेते जहां ॥
नहिं बरणिजात जमात मोपै विविध महि उररोंकहूं ।
प्रभुचरितसिन्धुअपार खग मैं पार कौनीविधिलहूं ॥

सो० सुनु खगेश कह काग रामचरित संशयहरण ।
जाहिनीक नहिंलाग त्यहिसमानकोअधमनर ॥

दो० असकहि पुनिदोउ नायशिर प्रभुपद बारम्बार ।
फिर भुशुण्डि लागे कहन प्रभुइतिहास उदार ॥

जब प्रभु जाय बाग नियराने । भूप कोउ लव आवत जाने ॥
तुरित उठाय लीन धनु बाना । रोंके राह बोलि बलवाना ॥
भूप भला जो आपन चहहू । तो आगे अब पांव न धरहू ॥
असकहि चाप चढ़ाय भवानी । चले तुरित लव शर संधानी ॥
सुनि लव बचन उमा रघुराई । रहे मौन कछु कहत न आई ॥
निरखिस्वरूपथकितभे लोचन । कृपासिंधु प्रणतारतमोचन ॥
धनि विरंचि जिन रूपसँवारी । असशोभानहिंकतहुँनिहारी ॥
त्यहिअवसर कुश बनते आये । विपिन भीरसुनि आतुरधाये ॥
देखि भीर भूपति कटकाई । धरि उर धीर चले हरषाई ॥

दो० पहुँचे कुश बरबंड तहँ जहां ठाढ़ लवबीर ।
होत बतकही भूपसन लिये सजग धनु तीर ॥

जब लव अनुजहिआवतजाना । भे बलअधिकसुताहिमवाना ॥
दोउभ्राता मुनिवर फुलवारी । सजगभये धनुबाण सिधारी ॥
शोभा देखि कामरति लाजै । कोटिमयंकबदनछबि छाजै ॥
दुसरो कुवँर बिलोकि कृपाला । भये मुदितकहिवचनरसाला ॥
जनु विधि सबआपनि चतुराई । इन्हैं सवांरि विश्व दिखराई ॥
शोभासिन्धु मनोहर जोरी । अतिसुकुमार बैससुठि थोरी ॥
लखिनखशिखशोभादोउबीरा । मोहे प्रेम विवश रघुबीरा ॥
त्यहिअवसर प्रभुगति खगराई । शारद शेष सकैं नहिं गाई ॥

महिमा कहत थके श्रुतिचारी। तहां कौन मर्याद हमारी॥
छं० मर्याद कौन हमार तहँ जहँ भेद वेद न पावई।
शेषकितनिगमपुराणकहिकहि अपरगतिकोगावई॥
ब्रह्माण्डप्रति विधि विष्णु हर जो रचै और सँहारई।
स्वइराम पूरणकाम खग दोउबीर चकित निहारई॥
सो० जानिसुवन बलवान बयकिशोर करणी कठिन।
बिहँसिकह्यो भगवान काके तुम बालक दोऊ॥
कहो मातु पितु नाम क्यहिकारण बनमें बसहु।
कौन तुरग सों काम बांधि जाहि जूझत फिरो॥
यदपिकीन लड़काय तदपि सिखावन देहुँ मैं।
अबहूं देहु मँगाय तुरगपाय हम जाहिं फिर॥
सुनिकुश लव दोउभाय बाणी राजन मधुरसम।
बोले तब मुसकाय कहाकाम पितु मातुसन॥
जाहि बिरञ्चि देय हय आजू। सो करि समर जायलै राजू॥
जब अस बचन कहा दोउबीरा। हृदय बिचार कीन रघुबीरा॥
मुनिवरतनय कहां अस होई। जो असनीति राखउर सोई॥
ये कोउ भूपसुवन बलधारी। जासुतेज नहिंजाय निहारी॥
अस सुनि प्रभुबोले खगराई। हमअपनेदिशिकहिसमुझाई॥
जो निज कीन्हचहहु संग्रामा। तो रण करहु आय बलधामा॥
भूप बचन सुनि दोऊ बीरा। आयेजहँ कृपालु रणधीरा॥
सुभट बुलाय कह्यो रघुनाथा। युद्धकरो सम्मुख दोउ साथा॥

दुइ दुइ बीर कटक ते जाहू। समरकरहु जनि उर कदराहू॥
दो॰ सुनखगेश रघुनाथ जब बचन कह्यो भटबोल।
॥ तमके दोउबलवान तब क्रोध देखि महिडोल॥
तबलवकुश निजहृदयबिचारी। समरकरीतजिमुनिफुलवारी॥
ज्यहि मुनिबाग खीस नहिंहोई। कीजे काज उचित अबसोई॥
मुनिबालकन कह्यो समुझाई। रहहु सजग देखत अमराई॥
तुमकहँ नहिं कौनौ डर भाई। मैं देखौं भूपति कटकाई॥
असकहि धनुषबाण करलीन्हा। सम्मुखभूप गमन तबकीन्हा॥
दुहुँ दिशि ते भे क्रोध अपारा। लागे लड़ै सुभट बरियारा॥
बहु छल बल पौरुष भटकरहीं। समरअजिरमुरछितह्वै परहीं॥
यहिप्रकार मुनि होय लड़ाई। रथ शोभित देखैं रघुराई॥
जे भट होइँ कटक ते न्यारे। ते न फिरैं लै प्राण बिचारे॥
दो॰ या बिधि जूझे सुभट सब करिपौरुष खगनाथ।
॥ गिने सुभट बाचेकछू भरद्वाज प्रभु साथ॥
असकौतुकलखि राम सुजाना। लागेकहन बोलि हनुमाना॥
कुवँर दोउ अतिशय बलधारी। क्षण में सकलसुभटरणमारी॥
मनकछुहरष बिषाद न आने। खड़े सहज दोउ बीर सयाने॥
देखत लघु दोउ कालसमाना। जायनसकहिंनिकटबलवाना॥
मैं सबबिधि अनरथ के खेतू। अस उत्पातभयो ज्यहिहेतू॥
मखहय कारण तीनों भाई। सुभटसहित जूझे बन आई॥
सेनापति कोशलपुर जेते। प्राणतजे यहिकानन तेते॥

जाउँ अवध फिरि तो बड़लाजू । आयबना सबमरण समाजू ॥
कहत बचन लोचन जलढरके । कुसमय देखि ताहिप्रभुहरके ॥
॥ दो० ऐसोबिधि बिलखाय मन कीन्ह शोच रघुबीर ।
सुन समीरसुत ऋक्षपति भरे नयनपुट नीर ॥
लवकुश देखि भूप भय मानी । जाय निकटबोले असबानी ॥
सुनहु नरेश बिलम कस करहू । कीफिरिजाहु किसम्मुखलरहू॥
सुनत दूधमुख माहुर बानी । फिरे सुभटसब माखिभवानी ॥
लागे समर करै यकबारा । मारहिंबिबिध शस्त्र हथियारा ॥
कुश बिलोकि सेनारिपुमाखे । अनुजहिबोलिवचनअसभाखे॥
तुम मारहु भूपति कटकाई । मैं देखों नरेश प्रभुताई ॥
अस समुझाय अनुज कुशबीरा । आपु चले जहँ रथ रघुबीरा ॥
आये जब प्रभु यान समीपा । कहिदुर्बचन सुनाय महीपा ॥
राजन समरकरहु किन आई । की रणते अब जाहु पराई ॥
॥ दो० असकहिपरचारयोप्रभुहि त्रिशिखबाणधरिचाप ।
॥ लखिखींचत शारङ्ग कुश उठे देव सब कांप ॥
त्रासवान सुर ऋषय मुनीशा । बिधिहरिहरपद नायो शीशा ॥
नाथ कौन कारण यह देखी । कहो बुझाय कृपालु विशेखी ॥
काके प्रभु बालक ये दोऊ । प्रबलप्रचण्डनजगअसकोऊ ॥
जाके समरसेन रघुनाथा । विकलपुकारत यथा अनाथा ॥
वयकिशोर मृदुगात सुहाई । रूपदेखि बहुकाम लजाई ॥
ते पुनि कीन्हसमर अतिभारी । दल दशचारि क्षौहिणी मारी ॥

उरसन्देह नाथ लखि होई । बेगि बुझाय कहो प्रभु सोई ॥
तब बिरंचि प्रभुकथा रसाला । कहिसमुझायसुरनतेहिकाला ॥
परम कौतुकी कोशल भूपा । अलखअखण्डअनामअरूपा ॥
छं० निष्काम नाम निरूप सो प्रभु प्रकट है अवधेशके ।
मखराखिविश्वामित्रमुनि प्रणसिद्धकियमिथिलेशके ॥
स्वइब्रह्मअजयअरूप आविगत देहधारि लीलाकरी ।
नहिं जानकोउ अजानसब लखिचरितभवसागरतरी ॥
सुखधामरामनमामिअसकहि चारमुख अस्तुतिकियो ।
बैराटरूप लखाय देवन आप परिपूरण भयो ॥
दो० जबहिं जीति लङ्केशरण आये पुर श्रीराम ।
गर्वबढ़्यो सबअनुजके कहिविधिगे निजधाम ॥
त्यहिकारण कौतुक कियो कृपासिंधु रघुराज ।
गर्वनिवार्‌यो अनुज सब सुन अस भारद्वाज ॥
तब प्रभु देख बलीरिपु आछे । कटिमें रुचिर काछनी काछे ॥
करसरोज धनुबाण विराजे । कोटिनभानुज्योतिछबिछाजे ॥
निपट निरंकुश युगल कुमारा । बिन संख्या योधा रणमारा ॥
मोहिं यहँ आय समरके काजा । जो न लड़ों तो होयअकाजा ॥
असविचारि प्रभु शोचे भाई । निजउरसंत्र समर ठहराई ॥
भयो क्रोध गिरिराजकुमारी । सजगभये रथ राम खरारी ॥
धनुप चढ़ाय विषम शर जोरे । बोले बचन सुधारस बोरे ॥
मैं अबलगि त्वहिं बाल बिचारी । कीन क्षमा सब चूक तुम्हारी ॥

यदपि अनीति महा तुम कीन्हीं । तदपि न मैं एको चितदीन्हीं ॥

दो० सजगहोहु रणखेतमें कहौं बचन परमान ।
रिसबश शर जोरतभये खींच चाप लग कान ॥

कुशविलोकि कोप्योयुवराजा । लिय धनुबाण समरकेकाजा ॥
सुमिरि मातुपद बारम्बारा । भयो क्रोध खगराजअपारा ॥
विशिखबाण छांड़े तेहिकाला । चले तुरत जहँ अवधभुवाला ॥
आवत देखि विषमशर भारी । प्रभुकौतुकी काटि महिडारी ॥
ज्वइज्वइ बाण गये कुशप्रेरे । स्वइस्वइशरनमारि प्रभुफेरे ॥
देखि प्रताप नरेश अपारा । सुवनसिया निजहृदयबिचारा ॥
यहकोउ भूप महा बलवाना । जासु समीप जायनहिं बाना ॥
हृदयकोप बरषा शर कीन्हे । तुरतविमान तोपिप्रभुलीन्हे ॥
दण्डएक प्रभुयान भवानी । पर्यो न देखिसुरनभयमानी ॥

छं० नहिंपर्योदेखिबिमानप्रभु यकदण्डअसकौतुकभयो ।
है परमबिकल पुकारि देवन धीर नहिं काहुइ रह्यो ॥
अवलोकिचरितअपारप्रभु नरनागमुनिशोचहिंखड़े ।
ब्रह्मादि विष्णुगणेश सुरपतिदेव सब वाहन चढ़े ॥
प्रभुदेखि रिपुपरतापबल हँसिचापशायककरलई ।
सबबाण बाणनकाटिअपने निमिषमहँ रजसमकई ॥
असचरित करिप्रभु शायकन पुनिआयतरकसमें भरे ।
रथनिरखिशोभितअवधपति सुरसुमनकीबरषाकरे ॥

सो० देखि प्रतापमहीप अस्तुति नभते करत सुर ।

॥ छं० बोले जाय समीप परमक्रोधकरि बीर कुश ॥

कहि बहुवचन बहुरि शर मारा। सोउशर रामकाटि महिडारा ॥
अमित निषङ्गशरनबिनकीन्हें। बाणनखण्डिडारिमहिदीन्हें ॥
ज्वइज्वइलव शरमार खगेशा। स्वइस्वइकाटिदीन्हअवधेशा॥
यहि प्रकार तहँ होय लड़ाई। देखोंठाढ़ सुनहु गिरिजाई ॥
तब लव एकबाण अतिभारी। अतिसकोप प्रभुऊपर मारी ॥
बाचे अब कोशल रघुराई। ध्वजा पताका काटिगिराई ॥
परमनिडरलखिप्रभु मुसकाने। चापचढ़ाय श्रवणलग ताने ॥
छोड़ेबाण अमित तेहिकाला। कहिकहि सुन्दरबचनरसाला॥
मारनयोग सुवन दोउ नाहीं। भयदेखायआवहुमोहिंपाहीं ॥

॥ सो० प्रभुआयसु धरिशीश चले चापतजिबाणसब।
कीनकहा निजईश लीनघेरिचहुंदिशिरिपुहिं ॥

लवहिंघेरि बहुत्रास देखावें। प्रभुरुखपाय पासनहिंआवें ॥
ऐसीभांति सुनो मुनिराई। घेरेहु लवहिबाण रघुराई ॥
लीनछाय बाणन रणखेतू। सूझि न परै कतहुँ खगकेतू ॥
भयोविकलत्यहिक्षणलवबीरा। बोले रिपुसम्मुख मतिधीरा ॥
होहुसजग भूपति यहिकाला। मारिविषमशर करोंबिहाला ॥
छांड्यो अतिकराल बहुबाना। चल्योसोसम्मुखश्रीभगवाना॥
तेजवन्त शरविषम बिलोका। प्रभु निजबाणप्रेरि तेहिरोका ॥
भे बाणनते विविध लड़ाई। रघुबरशर तेहि मारिगिराई ॥
लखिप्रभुतालव अवधभुआरा। बनै न कछुउर करतबिचारा ॥

सो० बनै न करतविचार समुझि भूप बलवानअति।
छिनछिन होतखभार बरणि न जायखगेशगति॥
दो० उमा सुभटसब मारिकुश मुदितपूजि रणखेत।
अनुजपास गवने तुरत परम अनन्द समेत॥

देखि लवहिं कुश संकट भारी। चले सजग धनुबाण सवांरी॥
जाय देखिगति अनुज दुखारी। घेरेचहुँदिशि बाण निहारी॥
तमकि सकोप तूणि शरखींचे। फूंकि सुधारि चाप गहिखींचे॥
छांड़्यो बाण कोपि कुशबीरा। फिरे उमा प्रभुके सबतीरा॥
प्रविशे शर निषंग सब आई। देखि प्रताप हँसे रघुराई॥
पूंछा कुश अनुजहि मृदुबानी। सकलकथालव तुरत बखानी॥
सुनि रिसभेकुश सुनहु भवानी। चले सकोप बाणधनु तानी॥
मारों भूपहि असप्रण ठाना। सम्मुखआय कह्योबलवाना॥
सजगहोहु महिपाल सकोही। तजों न आजशसमुनिमोही॥

दो० कहिकहि कोटिकबचनकटु उमा करैको कान।
छांड़े बाण प्रचण्डअति सम्मुख श्री भगवान॥

प्रभु जाना कोपे दोउ भाई। सुमिरिशिवाशिवचापचढ़ाई॥
चले दुहूँदिशि बाण कराला। महातेज बड़वानल ज्वाला॥
उत दोउबन्धु इतै रघुराई। समरभूमि खग होइ लड़ाई॥
कोउ काहू से मरै न मारा। युद्धकरैं करिक्रोध अपारा॥
बीते बहुतदिवस यहि भांती। चलैं बाण तीक्षण दिनराती॥
टूटेचाप अमित मुनि ज्ञानी। झरे तीर तरकस नभ बानी॥

दोउदिशिते नभ बाणन छाई । शशिअरु भानु न परैलखाई ॥
अस संग्राम विलोकि खगेशा । डगीधरणिव्याकुलभयेशेशा ॥
सुरनर असुर सिद्ध मुनिझारी । भे सबजीव सचेत दुखारी ॥
छं० सबभेसचेत अचेत तबनहिं धीरमन काहू धरा ।
दश चार पुरके मध्यमें नभ घोरडर सब सुनिपरा ॥
रघुनाथ अरु दोउ तनयसिय संग्रामबहुदिनसेमची ।
काहिदास चेरे कहैं सब अस होय जो विधना रची ॥
सो० जानि न जाय खगेश गूढ़चरित रघुवंशमणि ।
कहि न सकहिंश्रुतिशेश गिरा शारदा मूकभइ ॥
दो० सो मैं कौनीभांति खग कहि समुझावों तोहिं ।
प्रभुलीला अवगाहनद पार न सूझै मोहिं ॥
असकहिकाकभुशुण्डिमुनीशा।बारबार प्रभुपद धरिशीशा ॥
लाग्यो कहन खगेश सुनाई । पिता पुत्र जसकरहिं लड़ाई ॥
ऋक्षनाथ अङ्गद हनुमाना । प्रभु समीप ठाढ़े बलवाना ॥
देखि महारण करहिं बिचारा । परम सभीत न जाहि निहारा॥
तबहिं चितै बोले सुरत्राता । ठाढ़रहो धरि धीरज ताता ॥
कुसमय देखि बिषाद न कीजे । ईश रजाय शीशपर लीजे ॥
करमप्रधान समुझि मनमाहीं । धीरधरहु कछु संशयनाहीं ॥
इतना कहि प्रभु यानचलावा । देखि वीर दोउ विस्मयपावा ॥
रिपु बलवान देखि दोउभाई । अतिशयकोपिबाणझरिलाई ॥
दो० प्रभु कौतुकी बिलोकि तब क्रोधवंत दोउ बीर ।

कीन्ह चरित अनुहारनर कृपासिन्धु रघुबीर ॥
सुनहु खगेश बखानहिं योगू । पावइँ मोह सुनत सबलोगू ॥
मनुज देहधरि कीरति काजा । कीनचहहिं प्रभु सो खगराजा ॥
देखि कुँवर दोउ सिय अनुहारी । उमा राम अस हृदय बिचारी ॥
यहां बास कहुँ जनककुमारी । तासु तनय दोऊ बलधारी ॥
इनसों युद्धकिये भलनाहीं । है हित हानि अयश जगमाहीं ॥
असबिचारि प्रभु सुनु उरगारी । धनुषबाण करसों महिडारी ॥
बन्धुशोक ब्याप्यो उरभारी । परे बिकल रथपर दनुजारी ॥
जामवन्त अङ्गद हनुबीरा । देखिचरित प्रभुभये अधीरा ॥
निरखिबन्धुदोउमुनि त्यहिकाला । मुरछित रथदेखे महिपाला ॥

दो० धाये हरष समेत दोउ देख्यो आय समीप ।
गिस्यो बाण धनुहाथसों ब्याकुल पस्यो महीप ॥

जाय निकट बहुभांति जगावा । अङ्ग सचेत नेकनहिं पावा ॥
है निरभय तब दोउ रणधीरा । छीनलीन पटभूषण वीरा ॥
करसुन्दर शिर मुकुट अनूपा । लीन छड़ाय तुरँग रथ भूपा ॥
अस कौतुक लखि बालिकुमारा । सम्मुख आय तुरत ललकारा ॥
लवकुश देखि महाभटभारी । भे रिसबश गिरिराजकुमारी ॥
बाणन बेधिलई कपिदेही । बांदर सो जनु हैगयो सेही ॥
मारि कपिहि रणभूमि सुवाई । गवने भवन मुदित दोउभाई ॥
बांधि ऋक्षपति सुवन समीरा । चले अश्वचढ़ि दोउरणधीरा ॥
पहुँचे सदन अनुज दोउसाथा । जाय मातुपद नायो माथा ॥

दो० बिनयकीन दोउचरणगहि मातादीन अशीश ।
रहहु चिरंजिविबन्धुदोउ जबलग महिअजईश ॥
आशिष पाय मुदित दोउभाई । भूप लूट सब मात दिखाई ॥
मुकुट अनूप अमोल निहारी । मुन्दरिनिरखिशोचभइभारी ॥
यह मुन्दरि कोशलपुर भूपा । मुकुटशीशप्रभुअधिकअनूपा॥
सो कौनीबिधि बिधिइन पाई । इतनाकहि पुनि बाहर आई ॥
देखि ऋक्षपति पवनकुमारा । लागी रोदन करै अपारा ॥
परीविकलमहि सुधिनहिं तेही । करतविलाप विविध बैदेही ॥
सुवन नहीं ये जनम्यो काला । अवधनरेश बंश सबघाला ॥
देखि दशामाता दोउ भाई । परेचरण मुखबचन न आई ॥
रोदन करत बिदेह कुमारी । छूटे केश न देह सँभारी ॥
छं०नहिं देहकी सुधिरहा कछु ब्याकुलमहाकरुणा करै ।
दोउहाथ छातीमारि पुनिपुनि मुरछि भूतल में परै ॥
तेहिसमयासियगतिदेखिखगपतिजातनहिंकबिसोंकही।
बिनबैनके लोचन बिलोकत मीन बिन पानी रही ॥
दो० छतटूटत करुणा करत नेक न देह सँभार ।
लखिनिजपति भूषणबसन बाढ़तशोच अपार ॥
तेहिक्षणजाय निकटहनुमाना । पदशिरनाय कह्यो बलवाना ॥
मातु धीरधरु कुसमय जानी । मिटैनबिधिकरलिखाभवानी ॥
मैं सब चरित सुनावों माता । ज्यहिकारणअस सबउत्पाता ॥
दशरथ कुलवन्दन रघुराई । यज्ञ अरम्भ कीन हरषाई ॥

त्यहिलगि अश्वसुरेश मँगावा । पूजि तुरँग चहुँ चक्रफिरावा ॥
रहे साथ रिपुसूदन बीरा । फिरेजीतिचहुंदिशिरणधीरा ॥
तबलगि हय यहिकानन आवा । मुनिवर बाग चरत इनपावा ॥
सो हय बांध्यो तनय तुम्हारे । करिरण रिपुसूदनको मारे ॥
तासुखोज भारत पुनि आये । कटक समेत सोउ मुरछाये ॥
दो० आये फिर सानुज लषण लैसँग सुभट अपार ।
मुरछित कीन्हों समर करि ताहू तनय तुम्हार ॥
प्रभुकहि लषणगये नहिं आये । यज्ञसभा मुनिवरहि सुनाये ॥
गगनगिरा त्यहिक्षण यहमाता । जूझे रण लक्ष्मण सुरत्राता ॥
सुनि नभगिरा कृपाल भवानी । भये शोचबश शारँगपानी ॥
चले तुरत गुरु आयसु पाई । देखा आय दशा निजभाई ॥
कुसमय देखि धरयो उरधीरा । लागे युद्ध करन रघुबीरा ॥
सो चरित्र सुनु जनककुमारी । भे मुरछित रथ रामखरारी ॥
तनय तुम्हार निकट तब जाई । पटभूषण सब लीन छड़ाई ॥
सेवक सहित भालुकुल जाता । लाये बांधि भवन दोउभ्राता ॥
बिन जाने असअनरथ भयऊ । कथा समस्त पवनसुत कह्यऊ ॥
सो० धीरज धरहु सँभारि परिहरि रिस दोउ सुवनसन ।
मातु सकैको टारि होनहार सबसे कठिन ॥
कीश बचन सुनि नयनउघारी । चितैचहूंदिशिसुवन निहारी ॥
देखि मातु तेहिक्षण दोउ भाई । महाबिकल ह्वै पद शिरनाई ॥
बोले बचन बिगत अभिमाना । करनलगे दोउबहुबिधिगाना ॥

मातु वृथा जो बचन सुनावैं । पापदहैं बालक बधपावैं ॥
तुमहूं कबहुं न कहि समुझावा । बिनजाने कस दोष लगावा ॥
गिरैं सुपन्थ सुबुधि जलजाता । जो हम जानिकीन रणमाता ॥
सो बधद्विज मारेकर दोषा । देहिंहमहिं विधिकरिबहुरोषा ॥
विधिहरिहर पदपङ्कज आनी । कीनकुचालजोजानिभवानी ॥
जो कछु कहीसो शिरपर लीना । बड़अपराध मातुहम कीना ॥

दो० ऐसीविधिकहिबचनदोउ करहिं विविधविध आन ।
तदपि न होय प्रतोष सिय लगहिंबचनजनु बान ॥

पति देवर गुण शील बखानी । शीशधुनहिं सियसुनहुभवानी॥
तेहि औसरकर दुसह विषादू । कहि न जाय अतिआरतनादू ॥
बालमीकि मुनिवर विज्ञानी । निज आश्रमचरित्रसब जानी ॥
बलिसों मांगिविदा मुनिराई । सुधा कमण्डलु लीनभराई ॥
शोचविवश मुनिराज सिधाई । कछुकदिवस महँआश्रमपाई ॥
देखासियाहिदुखितअतिदीना। जिमिअहिपातिमणिखोयमलीना
पूंछा मुनि सब शिषन बुलाई । काके चलत सिया दुखपाई ॥
ते सबकारण मुनिहि सुनाई । आदिहु से सबकहिसमुझाई ॥
सुनत महामुनि भयो दुखारी । लीन सुवन दोउसियाहँकारी ॥

दो० अतिमलीनमन बन्धुदोउबालमीकि रुखपाय ।
कीन दण्डवत आयतब बैठे पद शिर नाय ॥

मुनिदोउअनुजलायउर लीन्हे । आशिरबादविविधविधिदीन्हे॥
तजहुशोच उरधीरज आनहु । काल कर्म्मबश ईश्वरजानहु ॥

जाय बहुरि सियको समुझाई। बहु इतिहास पुराण सुनाई॥
माहिते सिय उठाय बैठाई। जलमँगाय विधुबदन धोवाई॥
कछु धीरज आन्यहु वैदेही। सुमिरि रामपद परमसनेही॥
तब बोले मुनिराज सुबानी। सुनहु सियानिश्चयउरआनी॥
तो पति अजरअमर निष्कामी। पारब्रह्म ईश्वर उरयामी॥
ताहि को सकै समर रण जीती। कहैं पुराण वेद अस नीती॥
संशयअस न करिय उरकाऊ। तुम जानहु रघुवीर सुभाऊ॥
छं० जानहुप्रभावस्वभावप्रभु केहिहेतु असकरुणा करहु।
करिछोह सुवनबुलाय कण्ठलगाय उरधीरज धरहु॥
यहिभांति बारम्बार मुनि सियज्ञान उपदेशत भये।
पुनि बोललीन्ह कुमारदोउ शिष संगलै प्रभुपहँगये॥
दो० पहुँचे मुनिवर भूमिरण सियासुवन दोउ संग।
सोवतरथ पर दीख तहँ रघुकुल कमल पतंग॥
सो० बिनय कीन करजोर बारबार पदकंज प्रभु।
मुनिवर प्रीति न थोर लागे तब स्तुति करन॥
अस्तुति कीन महामुनिज्ञानी। मथिसब वेद पुराणन छानी॥
मुनि जो अस्तुति कीनभवानी। सगमनिगमनहिंजायबखानी॥
सुनत बिनय रघुनायक जागे। उठे हरषि मुनिवर पद लागे॥
मुनिहुलीनप्रभुको उरलाई। लखिनखशिखछबि नयनजुड़ाई॥
पूँछि कुशल मुनिवर मृदुबानी। तुम्हरीकृपाकुशलमुनिज्ञानी॥
भ्रातासहित सुभट यहि देशू। जूझे करि संग्राम मुनेशू॥

को मुनिराज कुँवर वै दोऊ। जेहिसमान जगबीर न कोऊ॥
इन्द्रजीत लोनासुर मारे। ताहि समर दोउ कुँवरसँहारे॥
कहो मुनीश सुवन दोउ काके। पर्यो मुरछि लागे शर जाके॥
सो० कहोनाथ समुझाय केहि नरेशके कुँवर दोउ।
सुनि मुनिवरमुसकाय जोरिपाणि लागेकहन॥
जब आज्ञा लक्ष्मण प्रभु पाई। त्यागिसियहिवनअवधसिधाई॥
टेढ़ विपिन अवलोकि कुमारी। कीन्हकलाप विलापपुकारी॥
तेहि अवसर मैं शिषन समेता। फिरत रह्यो वन कृपानिकेता॥
देख्यों जाय बैठि तरुछाहीं। व्याकुलअधिकदेहसुधिनाहीं॥
धीरजदीन ताहि समुझाई। सकलचरित तिनमोहिंसुनाई॥
जाना मैं तब जनककिशोरी। लैआयों आश्रमहिं बहोरी॥
कछुदिनगये कुँवर दोउ जाई। भई मुदित सुधिअवधभुलाई॥
पूँछि लगन शुभघड़ी सुहाई। चूड़ाकरण उछाह कराई॥
यज्ञोपवीत भली बिधि कीना। बिबिधदान महिदेवनदीना॥
दो० बैठे पुनि विद्यापढ़न ममनिकेत दोउ साथ।
अल्पदिवसमहँ लीन पढ़ि सबविद्या रघुनाथ॥
बहुरि धनुषविद्या सबसीखी। मैं पुनि दीन प्रेमदृढ़ दीखी॥
भये कुँवर बल बुद्धि निधाना। फिरहिंविपिनलीन्हेधनुबाना॥
तेहिअवसर बलि मोहिंबुलायो। मख्यकरनहितन्योतिपठायो॥
निजवाटिका सौंपि दोउ भाई। गयोंपताल सुनहु रघुराई॥
समयपाय विधि बात बिगारा। होनीहोय को रोकनहारा॥

तजो सो कोह आजु रघुराई । मिलहुकुँवरदोउकएठलगाई ॥
सुनिमृदुपुञ्ज वचनमुनिधीरा । मिल्योतनयदोउहँसिरघुवीरा ॥
अतिआदर समीप बैठारे । बारबार दोउसुवन निहारे ॥
प्रभुके निकट तनय दोउ सोहैं । देखत नभवासी सब मोहैं ॥
छं० मोहेनभवासी शिवकैलासी विधिहरसुरपति देवसबे ।
कहिमङ्गलमूलावरषहिंफूलाशङ्खनिशानवजायचले ॥
निरखतसुखपावैंसेवालावैंनभमहिलौंध्वनिछायरही ।
कहिगवननिकेताशक्तिसमेताअतिआनँदनहिंजायकही ॥
दो० या बिधिदेवन रामकहँ सुवन समेत निहार ।
मांगिबिदा गवने भवन अश्वविमान प्रचार ॥
तब मुनिसों बोले भगवाना । तुम मुनीश सर्वज्ञ सुजाना ॥
अब सो यतन करिय मुनिराई । जेहिप्रकार कोशलपुर जाई ॥
मुरछा अनुज सुभट समुदाई । जाते जाय सो करिय उपाई ॥
सुनिप्रभुबचन कह्यो मुनिनाथा । दीजे रथ आपन रघुनाथा ॥
बलिके सभा चरित सब जाना । जानिसुकाज सुधा मैं आना ॥
चढ़िरथ नभऊपर प्रभु जाई । बरपिसुधा भट देउँ जियाई ॥
दीन तुरत रथ राम खरारी । तेहिचढ़िनभमुनिपन्थसिधारी ॥
सुधा वारि मुनि वरषन लागे । बुन्दपरत योधा सब जागे ॥
जागे रिपुसूदन भै चेतू । भारत लक्ष्मण सैन समेतू ॥
दो० गै मुरछा जागे सुभट जिमि मदगत मतवार ।
साजि बसन हथियार सब भये अश्व असवार ॥

भरत लषण रिपुसूदन बीरा। भूषण बसन सजे रणधीरा॥
कसि तरकस धनुबाण उठाई। चढ़िचढ़िरथ निजदेवमनाई॥
लियोताकि मुनिनायक बागू। चतुरङ्गिणी सुभट करिआगू॥
देख्योजाय बाग मुनिराई। नहिंतहँतुरँग न रिपुदोउभाई॥
तौने समय दूत रघुराई। पहुँचेजाय जहां दोउ भाई॥
शीशनाय बोले करजोरी। मधुरबचनगिरिराजकिशोरी॥
चलिय नाथ रघुनाथ बुलाई। बाणीसुनत परमसुख पाई॥
बालमीकिमुनि आश्रम तीरा। कछुदिनते आये रघुबीरा॥
दूत बचन सुनि तीनौ भाई। हांक्योरथ कछुविलमनलाई॥

छं० हांके विमान प्रचारिघोड़े पवन ते आतुर चले।
ज़रबफ्तकी तम्बूकनातैं तनी हैं झलकैं भले॥
बहु शामियाने बादला मुकैशकी झालर सजी।
खींचीतनावी रेशमी दिनरात तहँ नौबत बजी॥
अगणित मतंग गयन्दपर बहुतासकी झूलैं परी।
बहुबाजि पवनसमान ऊपर जान रतननसों जरी॥
असकहत फिरत नकीबखग बीरो तयारीकीजिये।
महराजके सबअनुजआवत जाय आगे लीजिये॥
डेवढ़ी कसामस चोबदारा मणिजड़ित आसालिये।
कोउ भूप मिलै न जानपावै बिना कछुरिशवत दिये॥
बहुबीर भटसुर आज ये जहँ आपप्रभुकोशलधनी।
मसनन्दतकिया लागतहँ सुन्दरमुशज्जरकी तनी॥

बहु चौघड़े औ पानदान गुलाबपास धरे जहां।
सुन्दर गढ़नके अतरदान अनेक मुनि देखे तहां॥
दो० काहूते नहिं जातकहि जस कछु बनी समाज।
देश देशके भूप सब बैठे तहँ खगराज॥
बहु आसेबरदार मुनीशा। खड़े तहां जहँ प्रभु जगदीशा॥
बालमीकि दोउ कुवँर समेता। शोभित तहँ जहँ कृपानिकेता॥
तेहि अवसर प्रभुके सब भाई। कीन प्रवेश उमा तहँ आई॥
दूतन प्रभुपहँ जाय सुनाई। कह प्रभु आनहु बेगि बुलाई॥
जब प्रभु अनुजन आवत देखी। सहित सभा सब उठे बिशेखी॥
प्रथमहिं भरत दण्डवत कीन्हा। करगहिलायहृदयप्रभुलीन्हा॥
पुनिलक्ष्मणप्रभुपदधरिशीशा। भुज पसारि भेंटे अवधेशा॥
पाछे रिपुसूदन शिरनावा। प्रेम समेत राम उरलावा॥
पूंछत कुशल निकट बैठारी। गई सकल श्रम भये सुखारी॥
दो० प्रभु आज्ञाते अनुज सब बैठि दण्डवत कीन।
बहुरिमिलेप्रभुतनयदोउ हरषितआशिषदीन॥
तब प्रभु मुनि आगेभे ठाढ़े। पुलकि शरीर नयनजलबाढ़े॥
मोपर नाथ कीन तुम दाया। जनमउऋणनहिंमैंमुनिराया॥
रौरे नाथ अनुग्रह कीजै। अवधचलियसियसोंशिषदीजै॥
पूरणयज्ञ नहीं बिन तीया। इतना नाथ हमैं करनीया॥
अस कहि प्रभु सुखपाल मँगाई। बालमीकि मुनि संग पठाई॥
लै सुखपाल मुनीश सिधाई। तेहि पाछे रिपुदमन बुलाई॥

जाहु बेगि मुनिवर पहँ भाई। आनहु जनकसुता समुझाई॥
आयसुपाय भरत लघुभ्राता। चले सियापहँ हरषितगाता॥
जाय शत्रुहन पद शिरनाई। आशिषदीन्ह लीन्हउरलाई॥
दो० कुशलपूंछि बैठायढिग अतिआदर सियमात।
पूंछनलागीं कुशलप्रभु लषण भरत दोउभ्रात॥
मातु आज सब कुशलहमारी। चरणसरोजबिलोकितुम्हारी॥
तब मुनिवर मृदुबचन सुनाई। सुनोसिया असकह रघुराई॥
जेहिबिधि अवधचलैचह जाई। सोइ उपदेश देव मुनिराई॥
सुनि प्रभुबचन सुता सुखपायों। तोहित बचनहारि मैं आयों॥
कर प्रतिपाल बचन अब मोरा। होय सुयश तिहुँपुरअतितोरा॥
रिपुसूदनहुं लिवावन आये। चरणपरे अबलों शिरनाये॥
जिमि २ मुनिवरकह गिरिजाई। तिमि २ अवनिसुतासकुचाई॥
शोचत हृदय विदेह कुमारी। पति गुरुआयसु सकैकोटारी॥
जाउँ अवध तौ सबबिधि हानी। जो न जाउँ कोपैं मुनिज्ञानी॥
दो० दुहूँभांति सङ्कट सिया बनै रहत नहिं जात।
बन्दिचरण मुनिनाथके बोलीं अतिमृदुगात॥
तुम तो नाथ नीकिशिष दीन्ही। सबहिप्रकार मोरहितचीन्ही॥
मैं तजिलाज कहों मुनि आजू। अबनहिंअवधमोरकछुकाजू॥
बिनअपराध तजा मोहिंस्वामी। तुमहिंबिदितसबअन्तर्यामी॥
तापर मोहिं कहत प्रभु जाना। यहसबमोरअभाग न आना॥
आयसुनाथ शीशपरलीन्हा। जोकछुकहियसोचाहियकीन्हा॥

मुनिवर सुनि सीता प्रियबानी। रहे सकुचि तेहिसमयभवानी॥
तजिसकोच पुनि कह्यो मुनेशू। सुन पुत्री तव पितु मिथिलेशू॥
अस ईर्षा सपनेहुँ नहिं आनी। पतिब्रतधर्म पुराण बखानी॥
यद्यपि पति सब औगुणखानी। तेहिको उचित देव करिजानी॥
सो॰ असबिचारिउरआनि करहुआज जो मैं कहहुँ।
कीजैशिष सुखमानि सबप्रकार तुमकहँसुखद॥
धर्म्मनीति इतिहास सुनाई। सियागमन सुखपाल मँगाई॥
तुरत कहारन लीन उठाई। चले जहां राजत रघुराई॥
मुनि रिपुसूदन पाछे जाहीं। परिहरिशोच हरष मनमाहीं॥
जहँ राजत प्रभु अवध नरेशू। गे रिपुसूदन सहित मुनेशू॥
भरत अनुज प्रभुपद शिरनाई। मुनिवर आशिषबचन सुनाई॥
मुनिहिं दण्डवत करि रघुराई। रिपुसूदनहिं लीन उरलाई॥
सियआगमन कह्यो मुनिराजू। सुनिहरषे तिहुँपुर शिरताजू॥
करिअस्तुतिपुनिकह सियरौनू। आयसु होय करों पुरगौनू॥
भली नाथ कहि मुनिमतिधीरा। तुरित पयानकीन रघुबीरा॥
दो॰ बहुरिनिशान बजायबहु चलन साज सबसाज।
बाहनचढ़ि भटभीर मुनि चले जहां रघुराज॥
गजराजन पर कसी अमारी। बाजिन पर रचिजीन सवाँरी॥
कोतल तुरँग अमित को लेखे। लाजैं हय रथ सूरज देखे॥
बृषभ ऊंट बाहन सँग जेते। बस्तु अनेक भरे सब तेते॥
नित्यक्रिया करि पूजि पुरारी। प्रभु निजभूषण बसनसवाँरी॥

पुनि पटभूषण विविध मँगाई । अनुजनसुवन बोलि पहिराई ॥
बांधि तुणीर सुनहु मुनिराया । लीन हाथ धनुशर रघुराया ॥
अस्तुति बालमीकिमुनि कीन्हे । निजरथमुनिनायककहँदीन्हे ॥
तीनों अनुज कुवँर दोउ साथा । चढ़े बाजिपर मुनि रघुनाथा ॥
गणपति गौरि मनाय खरारी । करिआगे सब सैन हँकारी ॥
दो० तेहि औसर करुणायतन देखि सजग कटकाय ।
चले अवधपुर बिहँगपति शम्भु चरण शिरनाय ॥
आगे कीन तुरग मख आछे । सियसुखपालजाय तेहिपाछे ॥
तेहि पाछे मुनिवर रथ जाई । चले साथ सेवक रघुराई ॥
तेहि पाछे कुश लव दोउभाई । छबिनिधानकछुबरणिनजाई ॥
हयसवार पर चढ़ बहु साथे । धनुषबाण शोभित दोउ हाथे ॥
तेहि पाछे गज तीनों अनुजा । भरतलषणरिपुसूदनगिरिजा ॥
तुरग सवार बाग मुरकाये । जाहिंचलेकरिवरहिं मिलाये ॥
सुभट अमित आगे कछु पाछे । सजि हथियार काछनी काछे ॥
तेहि पाछे गिरिवर रघुबीरा । बैठि खवासी सुवन समीरा ॥
शोभित हाथ छत्रवत भाना । चामरविविध न जाय बखाना ॥
दो० यहि विधि राजाराम मुनि भ्राता सुवन समेत ।
भये पार तमसा उतर शोभा सींव निकेत ॥
बोलि दूत दुइ अवध पठाई । आयसु पाय चले शिरनाई ॥
प्रथमहिं गुरु बशिष्ठ पहँ आई । गहिपद मुनि प्रभु कुशलसुनाई ॥
आवतकुशल अवधपति नाथा । सीता अनुज सुवन दोउ साथा ॥

सुनि मुनिवर दूतन प्रियबानी । हरषे ऋषिन समेत भवानी ॥
वहुरि दूत गये राज दुवारे । जायतहां नृप सचिव निहारे ॥
शीश नाय मृदुबैन सुनाई । नाथ कुशल आये रघुराई ॥
सुनत सुमन्त उठ्यो हरषाई । मृतकशरीर प्राण जनु आई ॥
गयो तुरित जहँ प्रभु महतारी । समाचार सब कह्यो सुखारी ॥
सियासहित दोउशिशुसबभ्राता । लै मखवाजि फिरे सुरत्राता ॥

दो० बचनसुनत उच्छाहमय सुनहरषीं सब मात ।
बोलिबिप्र याचकनगर दान दीन बहुभांत ॥

समाचार पुरबासिन पावा । घरघर मङ्गल बाज बधावा ॥
सुघर प्रचारिक बेगि बुलाई । बहुरचना गृहद्वार बनाई ॥
राजद्वार की शोभा जैसी । कहँ मतिमोरि कहूं अब तैसी ॥
गजमुक्ता की चौक पुराई । कञ्चनकलश अनूप सोहाई ॥
दधि अक्षत रोचन मिष्ठाना । पान फूल पूगीफल नाना ॥
कौशल्यादि राम महतारी । मुदित आरती थारसवाँरी ॥
मणिगण हेम निछावरि हेतू । लिये सखीसब प्रेम समेतू ॥
जब प्रभु आय नगर नियराने । आगे जाय सचिव सनमाने ॥
चरणबन्दि सादर सुरत्राता । बैठ्यो अनुजसहितदोउभ्राता ॥

दो० कीन सचिव पुनि दण्डवत बालमीकि मुनिदेख ।
सियपदबन्दि सुखेनअति धन्यभाग्य निजलेख ॥

तब प्रभु हरषि अवधपुर आई । आगे बाग निशान सुहाई ॥
हयगजके डङ्का मुनि बाजे । सुनिरवमधुर मेघघन लाजे ॥

गलिन भीर हयमत्त गयन्दा । मग पावैं नहिं पदचर वृन्दा ॥
नर नारी चढ़ धाय अटारी । निरखैं छबि प्रभु होइँ सुखारी ॥
लखि सुखपाल बिदेहकुमारी । युवतिन हृदय भयो सुख भारी ॥
देखि तनय सुन्दर सिय दोऊ । जेहि शोभा उपमा नहिं कोऊ ॥
भरत लषण रिपुसूदन देखी । पुरबासी सुख लह्यो विशेखी ॥
उतसव परम देखि अनुरागे । मणिगण हेम लुटावन लागे ॥
दिव्य सुखद सब पुर नर नारी । भूपदुवार आय दनुजारी ॥
दो० पुरबासिन कहँ देत सुख रविकुल कमल पतङ्ग ।
सेन सहित आये उमा शोभा कोटि अनङ्ग ॥
सिय सुखपाल सुनो उरगारी । जाय कहारन द्वार उतारी ॥
सखिन संग मन्दिर सिय आईं । पति देवर मातहिं शिरनाईं ॥
सासु सबी सियको उरलाई । बदन अनूप निरखि सुखपाई ॥
तब मुनि प्रभु सब अनुज समेता । तजि बाहन कियगौन निकेता ॥
कौशल्यादि मातु हरषाईं । करहिं आरती मंगल गाईं ॥
वारहिं मणिगण विविध प्रकारा । जो जेहि भाव सो दीन्ह अपारा ॥
तेहि अवसर पुरग्राम उछाहू । बरणि न जाय सुनहु खगनाहू ॥
दोउ सिय सुवन राम महतारी । हृदय लगाय गोद बैठारी ॥
विविध दान महिदेवन दीन्हें । याचक सकल अयाचक कीन्हें ॥
सो० ताहि समय रघुनाथ चरणसरोरुह मातु सब ।
सादर नायो माथ मातहिं आशिष दीन्ह तब ॥
गुरुकर पदुम गहे रघुराई । बारबार मुनिवर उरलाई ॥

जहँलग ऋषय मुनीशसमाजू । दण्डप्रणाम कीन रघुराजू ॥
भरत लषण रिपुसूदन जाईं । कुशलवसहितचरणशिरनाईं॥
आशिरबाद यथारुचि जेही । दीन हरषि मुनिनायक तेही ॥
पूंछेहु मुनि प्रभुकुशल बहोरी । कहप्रभु नाथ अनुग्रह तोरी ॥
देखि प्रीति बहु शील सनेहू । ऋषिनसहितमुनिभयोविदेहू ॥
अतिसुकुमार गात दोउ बारे । पितुभ्रातहिकेहिबिधिरणमारे॥
बहुरि बिचारि राम प्रभुताई । सुतन विलोकि रहे मुनिराई ॥
बारबार प्रभुसुयश बखानी । सकुचि राम बोले मृदुबानी ॥
दो० यज्ञकाजहित नाथ अब जसमोहिं आयसु होय ।
उठिप्रभात करुणायतन करों शीशधरि सोय ॥
सुनिप्रभुवचनहरषिमुनिनायक । लागेकहन सुनो रघुनायक ॥
भूप अमितकुल हते तुम्हारे । तुमसम और न नयन निहारे ॥
हम प्रोहित रविकुल भगवाना । मिलेनकोउतुमसमयजमाना॥
यह न बड़ाई तहां तुम्हारी । दीनदयालु भक्तहितकारी ॥
मुनिवशिष्ठ रघुवीर बड़ाई । करत बदनपर सबहि सुनाई ॥
प्रभुकह सकुचकृपामुनिकीन्ही । सकलबड़ाई आपुहि दीन्ही ॥
मैं सेवक सबभांति तुम्हारा । परमधर्म्म यह नाथ हमारा ॥
मुनि रघुबीर गूढ़ ब्योहारा । को समरथ जग करै बिचारा ॥
सुनहु राम असकह मुनिराजा । भोरहिकीजै मखका काजा ॥
दो० भलेनाथ कहिनायशिर प्रभु मुनि आयसु पाय ।
राजद्वार गवने तुरत निशा दण्डयुग आय ॥

गईं निशा युगदण्ड मुनेशा । राजद्वार आये अवधेशा ॥
सचिव आय सादर शिरनाई । प्रेम पुलक बोले रघुराई ॥
गुरु पितु मातु अनुग्रह ताता । आयोंकुशलसहितसबभ्राता ॥
सुनि प्रभु बचन सचिव हरषाई । कहि जैजीव चरण शिरनाई ॥
कहहु बचन अति नीति सुहाई । तुम समान तुमहीं रघुराई ॥
सेवक विनय नाथ सुनिलीजै । महल जाय भोजन कछु कीजै ॥
सुनि यह बचन भवन प्रभु आये । दासी दास तुरत जललाये ॥
भ्राता सुतन बोलि रघुनाथा । उठे करन भोजन यक साथा ॥
षटरस व्यञ्जन भरि भरि थारी । सादर परसि दीन महतारी ॥

दो० लागे जेवन राम तब अनुजन सुवन समेत ।
जोइ भोजन प्रभु चाहते सोइ कौशल्या देत ॥

करिभोजन गिरिजा रघुराई । कीन्ह्योशयनमहलनिजजाई ॥
अनुजहि सुवनहि बोलि सप्रीती । सोवहु तात निशा बहुबीती ॥
आयसु पाय चरण शिरनाई । निज निज भवन गये सबभाई ॥
राममातु पहँ गये दोउभाई । सुन्दर पलँग बिछाय सोवाई ॥
सिया सासु अनुशासन पाई । गईं जहां राजित रघुराई ॥
करि बहुभांति चरण सेवकाई । सोई सिय प्रभु आयसु पाई ॥
सोवत सिय सुखसेज विलोकी । देखिकला विधु निजरथ रोकी ॥
आपते अधिक देखि सियशोभा । बहुमयङ्क हिरदय अतिक्षोभा ॥
शोभा कोटि कामरति थोरी । नहिंउपमाछबिजनककिशोरी ॥

दो० रति समेत लाज्यो मदन रजनीपति सकुचाय ।

सियमुखशोभा सुरस लखि जहँतहँरहेलजाय ॥
प्रातसमय रघुनायक जागे। बन्दीजन गुण गावन लागे ॥
भोरहिं सिय उठ प्रीतम पासू। गई महल जहँ सोवत सासू ॥
कौशल्या पद चापन लागी। परसतहाथ सासु तब जागी ॥
पदशिर नाय विदेह कुमारी। आशिषदीन्ह राम महतारी ॥
निशाविगत जागे दोउ भाई। पितु मातहि सादर शिरनाई ॥
निजमातहिप्रणामपुनिकीन्हा। देखिसुवन सियआशिषदीन्हा॥
तब रघुनाथ मातपहँ जाई। चरणबन्दि बैठे मुनिराई ॥
माता दीन अशीष सुखारी। सुन हरषे रघुवंश खरारी ॥
तातचरण बन्द्यो दोउ भ्राता। प्रभु सकुचेविलोकिढिगमाता॥
दो० तेहिअवसर भारतलषण रिपुसूदन मुनिआय।
बन्दिरामपद मातपद सियपद शीश नवाय ॥
तब अनुजनविलोकि दोउभाई। दण्डप्रणाम कीन शिरनाई ॥
अनुजन सुवन समेत मुनेशा। मज्जनकरन चले अवधेशा ॥
नित्यक्रिया करि सरयूतीरा। गुरुसमीप आये रघुवीरा ॥
गुरुहि प्रणाम कीन शिर नाई। दई अशीष हरषि मुनिराई ॥
अवनिसुता कहँ बेगि बुलाई। कीजैकाज समय रघुराई ॥
गिरिजा प्रभु गुरु आयसु पाई। रिपुसूदनहिं कह्यो समुझाई॥
जाहु बेगि मातापहँ भाई। सादर जनकसुतहि लैआई ॥
गे रिपुघन कौशल्या पाहीं। गहिपद कह्योहरषमनमाहीं ॥
मातु सियहि मुनिनाथ बुलाई। सुनि रघुनाथजननि हरषाई ॥

सो० सादर सियअन्हवाय भूषण बसन अनूपसजि।
युवतिन संगपठाय चलीं सिया पदसासु गहि॥
मख समाज सिय जब पगधारी। रूप राशि नहिं जाय निहारी॥
नख शिख भूषण बसन बिराजें। नूपुर शब्द मधुर ध्वनिबाजें॥
ऋषिनदेखि सिय कीनप्रणामा। जानिशिरोमणितेहिसुखधामा॥
जाय सिया गुरुपद शिरनाई। दीन अशीष हरषि मुनिराई॥
कुशर साथरी मुनिन मँगाई। कलश समीप मुनीश बिछाई॥
गांठिजोरि मुनिवर बैठारी। राम सियहिसन श्रीशदुलारी॥
प्रथमहिं गुरु अभिषेक मुनेशू। पुनिसबऋषिमुनिकीनखगेशू॥
वेदनध्वनि त्यहिसमय सुहाई। नभते सुरन सुमन झरिलाई॥
बरणत छबि सियराम भवानी। शारद शेषहु मति सकुचानी॥
छं० सकुचात मति श्रुति शेष शारद अपरकी गिनतीकई।
ब्रह्मादिशिव सनकादिअस छबिदेखि मतिचकृतभई॥
अविगत अभेद अपार अगम न पार लखि काहूपरै।
सो नीच निपट अयान चेरे कौन विधि वरणनकरै॥
दो० जनक मातुपितु राम सिय शोभा शील निधान।
सो केहिविधि वरणनकरौं सुनहु सुताहिमवान॥
श्यामल गौर मनोहर जोरी। भुवनचतुर्दश की छबिथोरी॥
पूजा सकल मुनीश कराई। तुरँग यज्ञ तेहि समय मँगाई॥
कर मन्त्रवत अश्व अन्हवाई। पूजा कीन वेद जस गाई॥
ऋषिन तहां मुनि आयसुपाई। मखहयहत्यो अबारन लाई॥

घृत कपूर पय केर मिलाई । अति पुनीत शाकल्य बनाई ॥
ऋषिमुनिवर कोविद मख जेते । करहिं वेदध्वनि सादर तेते ॥
देवनसहित समाज सुरेशा । ऋषि अट्ठासीसहस खगेशा ॥
बिधिहरिहर सुनिअवधउछाहू । यज्ञसभा आये खगनाहू ॥
जस बिधान मख वेदन गाई । तस प्रभुकीन सुनो खगराई ॥

दो० घृत कपूर हयमांस यव रुचि शाकल्य खगेश ।
करतहोम रघुकुलतिलक शोभितसभा ऋषेश ॥

भयो होम बहुदिवस भवानी । बसुधा अनलतेज अकुलानी ॥
जहँलगमहि अकाश औकासू । धूमहोम सब कीन निवासू ॥
भानुतेज शशि शीतलताई । परयो न लखिकाहूगिरिजाई ॥
ज्वाला होम प्रचण्ड बखानी । नभपाई आहुति हरषानी ॥
जयजयकार रह्यो मख छाई । नभते सुरदुन्दुभी बजाई ॥
पूरण आहुति कीन कृपाला । बोले मुनि तब बचनरसाला ॥
यज्ञदान यहि अवसरकीजै । शुभआशिषऋषिमुनिद्विजलीजै ॥
प्रभुआयसुलखि सचिवसुजाना । अमितगयन्दतुरँगसजियाना ॥
भूषण बसन हेम मणि हीरा । प्रभुपहँराखिसचिवमतिधीरा ॥

दो० आयसुपाय बशिष्ठमुनि सुनो उमा चितलाय ।
दीन दान रघुबंशमणि याचक बिप्र बुलाय ॥

काहू हय काहू गजराजा । काहू रथ भूषण खगराजा ॥
जो जेहिभाव दीन स्वइदाना । रंकहि कीन्ह्यो राव समाना ॥
याचक बहुविधि कीरति गावैं । भूसुर आशिष बचनसुनावैं ॥

अवनिकुमारि दीन जो दाना। सोखगपति नहिंजायबखाना॥
सुनहुरामकह मुनि तेहिकाला। कीजै पैकरमा मखशाला॥
सुनिप्रभु गुरु मृदुगिरा सुहाई। सिय समेत परदक्षिण लाई॥
बहुरिकीनऋषिमुनिहिप्रणामा। सीता सहित राम सुखधामा॥
पुनि प्रभु गुरु वशिष्ठ पहँजाई। सीतासहित चरण शिरनाई॥
दै आशिष असकह मुनिराई। अग्नि बिनय कीजै रघुराई॥
दो० भलीनाथकहिअवधपति सियसमेत खगपाल।
जायकीन अस्तुतिअमित जहां होमकीज्वाल॥
प्रभुहि निहोरत नेह निहारी। ज्वालराह मखबाजिनिकारी॥
दीन तुरँग प्रभु लीन सुखारी। जयध्वनिछायो तिहुँउरगारी॥
तब प्रभु तुरँग सुरेशहि दीना। पदशिरनायबिनयतिनकीना॥
करि बहुभांति बिनय सुरराजू। गयोलोकतजि सहितसमाजू॥
बिदाकीन प्रभु ऋषिन बुलाई। करि सन्मान सुनहु खगराई॥
निजनिजभवनगवनसब कीन्हें। तबप्रभुमुनिकहँ आयसुदीन्हें॥
अब प्रभु भवन गवन निजकीजै। मन्दिर जाय दान बहुदीजै॥
आगे मुनि सिय रघुबर पाछे। गानकरहिं याचक सब आछे॥
भेरि निशान द्वार बहुबाजे। ऋतुपावस के घनजनु गाजे॥
दो० सिय समेत रघुबंशमणि गुरु वशिष्ठ मुनिसाथ।
शुभनक्षत्र प्रवेश किय निजमन्दिर रघुनाथ॥
मन्दिर भीर याचकन देखी। प्रभुसेतब मुनि कह्योविशेखी॥
प्रथमहिं धेनु द्विजन कहँ दीजै। महिदेवन शुभआशिष लीजै॥

तेहि पाछे याचकहि बुलाई । दीजै दान देव सुखदाई ॥
सुनि प्रभु गुरु मृदुबयन रसाला । कोटि धेनु मांगीं तेहिकाला ॥
कामधेनु हैं सुरस मुनीशा । कीन कुशस्थ कौशलाधीशा ॥
सुरभिदान महिदेवन दीन्हें । पदगहिविनयभांतिबहुकीन्हें ॥
दैआशिष महिदेव सिधाये । तब प्रभु याचक नगर बुलाये ॥
याचक बोलि दीन बहुदाना । चले भवन यशकरतबखाना ॥
गुरु सतकार कीन रघुराई । विविधप्रकार सुनहु मुनिराई ॥
दो० हाथजोरिप्रभु बिनयकरि चरणकमलशिरनाय ।
हय गयन्द भूषणबसन दीन लीन मुनिराय ॥
कहमुनि प्रभु आशिषममलेहू । आयसुहोय जाउँ मैं गेहू ॥
सियसमेत प्रभु गहि मुनिपाऊ । भवन गये मुनिवर खगराऊ ॥
छोरी गांठि सुमित्रा आई । तबसियसासुचरण शिरनाई ॥
केकै कौशल्या पद लागी । दीन अशीश प्रेम अनुरागी ॥
तीनिउ मातु चरण जलजाता । गह्योकृपानिधि जनसुखदाता ॥
रानी सब न्योछावर वारैं । सिय रघुनन्दन बदन निहारैं ॥
उतसब विधिकौशल्या कीन्ही । पटभूषणयुवतिन कहँदीन्ही ॥
देत अशीश गईं निज धामा । हियेराखि मूरति सियरामा ॥
कृपासिन्धु प्रभु दीनदयाला । बोलिसचिवअसकहखगपाला ॥
दो० ब्रह्मभोज विधि वेगिसब तात करहु तुमजाय ।
न्योतो द्विज सुरद्वीपभर है आयसु मुनिराय ॥
जस कछु ब्रह्मभोज विधिहोई । कीजै तात जाय अबसोई ॥

मैं जो राउर आयसु पावों। प्रागआदि तीरथ करिआवों॥
सुनिप्रभुबचनसचिवमहिपाला। बन्दिचरण बोले तेहिकाला॥
प्रभु सर्वज्ञ चराचर ईशा। जगपालक घालकरजनीशा॥
मैं सेवक सबविधि रघुराई। प्रभुतानिज मोहिं दीनबड़ाई॥
अवशि नाथ तीरथ सवकीजै। तीरथ बासिन कहँ सुखदीजै॥
मोहिं जो आयसु देहिं गुसाईं। सो मैं करब दासकी नाईं॥
सचिव वचनसुनि प्रभुरणधीरा। नित्य क्रियाकरि सरयूतीरा॥
सियसमेत चढ़िसुभग बिमाना। गुरुपद बन्दिचले भगवाना॥
दो० प्रथम धपाप नहाय प्रभु काशी कीन प्रवेश।
भोरहि उठि अस्नान किय सीताराम खगेश॥
शिवहिपूजि मिलि तीरथवासी। चले प्रागकहँ प्रभु सुखरासी॥
पवन ते वेगचले हय रथके। आये निकट राजतीरथ के॥
उतर देवसरि कृपानिधाना। सीतासहित कीन अस्नाना॥
प्रोहित तीरथराज बुलाई। विविधदान दीन्ह्यो रघुराई॥
पूजि देवतीरथ अति हेतू। भरद्वाज पहँ गे खगकेतू॥
करिप्रणाम मुनिवरहि खगेशा। सीतासहित चले अवधेशा॥
यमुनउतरि करि मज्जनपाना। चित्रकूट आये भगवाना॥
मन्दाकिनी पुनीत नहाई। भरतकूप आये रघुराई॥
भरत कूप सब तीरथखानी। निशाजानि प्रभुरहे भवानी॥
दो० होतप्रभातनहायप्रभु मिलिमुनिऋषिनसमाज।
वालमीकि मुनिआश्रमहिं चलेहरषि रघुराज॥

मुनिवर निकटजाय रघुराई । दण्डप्रणाम कीन शिरनाई ॥
मुनिहुँबहुतप्रभुअस्तुतिकीन्ही । कन्दमूलफल भोजनदीन्ही ॥
रैनि विहाय भानुकुलकेतू । चले यान चढ़ि सिया समेतू ॥
नीमषार मिश्रिष प्रभु आये । मिलिसबऋषिनपरमसुखपाये ॥
जनकसुता समेत रघुराई । करि अस्नान तहां गिरिजाई ॥
दीन दान महिदेव बुलाई । तीरथ पूजि चले रघुराई ॥
सई उतरि गोमती नहावा । तमसापार राम रथ आवा ॥
कोशलपुर आये रघुनाथा । गुरुपदवन्दि जोरि दोउहाथा ॥
जाय भवन मातहि शिरनावा । प्रेम पुलकि मातहिं उरलावा ॥

सो० पूंछि कुशल पुनिमात कह प्रभु चरण प्रतापतुव ।
तेहि औसर सबभ्रात आयरामपद पदुम गह ॥

अनुजन सुवन बोलि रघुराई । भोजन कीनजाय खगराई ॥
अर्द्धनिशा लखि दीनदयाला । कीन्ह्योशयनजायतेहिकाला ॥
प्रातउठे गुरुपद शिरनाई । वन्दि विप्र मुनि आयसुपाई ॥
करि अस्नान पूजि त्रिपुरारी । कृपासिन्धु सेवक हितकारी ॥
अतिआदर भूसुरन बुलाई । चरणधोय भोजन करवाई ॥
उठे जेयँ भूसुर खगपाला । पान दक्षिणा दीन कृपाला ॥
बहुरि प्रणाम कीन रघुवीरा । चलेअशीशतद्विजमतिधीरा ॥
प्रभुआयसु मुनिनायक पाई । बैठे राजसभा तब जाई ॥
वर्ष सहसदश कीन्ह्यो राजू । सुखीभये सब अवध समाजू ॥

छं० भये सुखी अवधसमाज सब सपनेहु कलेश न पावहीं ।

नर नारि हर्ष समेत विधिसों जोरि हाथ मनावहीं ॥
बरदेहु अस विधना हमैं जो कहैं यह बानी पढ़ैं ।
कहदासचेरे राम सिय नित राज्य कोशलपुर करैं ॥
सो० ऐसेइ बचन खगेश कहैं परस्पर नारिनर ।
शारद शेश गणेश ग्रामदेव शिरनाय सब ॥
मख इतिहास रुचिर मैं गाई । रामचरित सब तुम्हैं सुनाई ॥
आगे सुनहु अपर इतिहासा । कहौं यथामति बुधिपरकासा ॥
हरणा मोहतम भानु समानू । दहनबिपिनअघप्रबलकृशानू ॥
मृतक शरीर सजीवन मूरी । जनमन पापकरहिं सबदूरी ॥
सोमोसों क्यहिविधिकहिजाई । पोत नेक हीरागति पाई ॥
पाछे यज्ञ भयो उतसाहा । सो उछाह सुनिये खगनाहा ॥
प्रभुअनुजन रनिवासविहँगवर । कीनप्रकट दुइदुइसुत सुन्दर ॥
राममातु मुनिवरहिं बुलाई । पूंछी जन्मलगन हरषाई ॥
मुनिवर वचन बिचार बखानी । शुभनक्षत्र भे बालक रानी ॥
दो० भये लगनसुन्दर तनय कहौं बचन सुनु रानि ।
होइहैंसुतयुगविदितसब सुखशोभा गुणखानि ॥
असकहिमुनिरघुपतिपहँ आई । कृपासिन्धु मुनिपदशिरनाई ॥
परसिचरण सादर बैठारी । बोले बचन भक्त भयहारी ॥
नाथ कृपा तव सिन्धु अपारा । ममस्वारथ जनु पूरणतारा ॥
उमँगत प्रेमबारि अधिकाई । अतिमृदुचितराउर मुनिराई ॥
धकरिनि जाय नार तब छीना । भूषण बसन निछावरिलीना ॥

युवती सुनत तुरत उठिधाईं। गावतमंगल मन्दिर आईं॥
ढाढ़िनि बहुबिधि सोहिल गावैं। नाचिगाय रनिवास रिझावैं॥
भेरि निशान ढोल सहनाई। बाजें द्वार बरणि नहिं जाई॥
नाचहिं रम्भ अधिक उरगारी। गानकरहिं सुरपाल सँभारी॥

दो० हयगज धरणीधाम धन राजद्वार रघुनाथ।
देत याचकन बोलि प्रभु विविधभांतिखगनाथ॥

राघवकुल जसरीति भवानी। कीन्हीं तस कौशल्या रानी॥
नामकरण जब अवसर आई। राममातु मुनिवरहि बुलाई॥
सुनत महामुनि मन्दिर आये। कौशल्यहि शिशुनामसुनाये॥
जब मुनिवर शिशुनामसुनावा। जो कछुनेग उचित सो पावा॥
दै आशिष मुनिराज सिधाये। याचक विविधदान तब पाये॥
कछूदिवस बीते मुनिराई। लागे फिरन सुवन अँगनाई॥
बालबिनोद निरखि सब रानी। होहिंमुदित नहिंजायबखानी॥
भूपअजिर खेलहिं सब भाई। माताहिगोद बसहिं पुनिजाई॥
माता हरषिगोद तब लीन्हीं। क्षुधितबिलोकिक्षीरमुखदीन्हीं॥

दो० कीन मुदित चूड़ाकरण दीन भूसुरन दान।
यज्ञोपवीत कियो फिर कृपासिन्धु भगवान॥

विद्या कहँ गुरुपास पठाई। लागे पढ़न कुवँर सबजाई॥
अल्पकाल विद्या सब लीन्ही। गुरुसतकार भांतिबहु कीन्ही॥
लै शर धनु करकमलन माहीं। कुशलवसँग बनखेलनजाहीं॥
मारैं मृग खग बिविध बराहू। फिरहिं अशंक न भयउरकाहू॥

यज्ञ स्वयम्बर सुन जेहिदेशा। जायँ तहांसब अनुजखगेशा॥
करिछल बल बहुविधिसंग्रामा। कुवँरि बिवाहि फिरैं लै धामा॥
छवोअनुज यहिविधि मुनिराई। कियेब्याह भुजबल बरिआई॥
कुवँर कुवँरि मृदु बदन निहारी। कौशल्यादि मुदितमहतारी॥
उतसवअमित भवन अतिथोरा। उमँगिचलेउ पुरते चहुँओरा॥

सो० देखि तनयमतिधीर नीतिधर्म अति साधुचित।
चेरे प्रभु रघुबीर पाय समय मुनिसन कह्यो॥

प्रभु अभिलाष एक मनमाहीं। तुम तजिनाथ कहों केहिपाहीं॥
भये अनुज आठो नृपयोगू। देहु राज्य सुखपावहिं लोगू॥
बहुतदिवस बीते म्वहिंस्वामी। तुमहिं विदित सबअंतर्य्यामी॥
सुनि रघुनाथ मनोहर बानी। प्रेमपुलकि बोले मुनिज्ञानी॥
कसनकहहु असनीति कृपाला। दीजैसुतहिं राज्य महिपाला॥
आठ भाग बसुधा सब कीन्ही। आठो सुतन बांटि प्रभुदीन्ही॥
गज हय रथ सुखपाल भवानी। सो सब दीन न जाय बखानी॥
पुनि सबतनय समीप बुलाई। निजकुलधर्म उमा समुझाई॥

दो० गुरु समीप सब सुतनकहँ दीन राम उपदेश।
करहु राज्य धर्मनीतिसों प्रजहि न होय कलेश॥

असकहिप्रभु गिरिराजकुमारी। कीनचरितकछु अवधबिहारी॥
सो प्रसङ्ग नहिं सकों बखानी। प्रभुमहिमा मतिदृष्ट भवानी॥
अतिशय गूढ़ चरित रघुराई। आगम निगम पुराणनगाई॥
रामचरित अवगाह अपारा। को समरथ जगचाहै पारा॥

वेदौ जासु अन्त नहिं पावै। सो केहिभांति उमा कोउगावै॥
गुण गावत शारद श्रुति शेषा। सकुचि रहे करिशोच विशेषा॥
रामचरित पावन खगकेतू। भवसागर तरिहैं हित सेतू॥
रामचरित सुन्दर सुखदाई। कलिमलदहनसुनो मुनिराई॥
छं० प्रभुसकलकलिमलहरन संशय शोकमोहनशावनी।
कहिदासचेरे भजनबिन पावे न गति अनपावनी॥
असजानिजियकोऊ चतुर जगमोहमायात्यागहीं।
भवसिन्धुतरि क्षणमाहिं ते रघुबीरपद अनुरागहीं॥
सो० रामविनय इतिहास कहैं सुनैं जे प्रेम सों।
ते काटहिं भवफांस रहैं सुखी तिहुं कालमा॥
माघहिमास अनूप शुक्लपक्ष तिथि दुइज शुभ।
कहीहै मतिअनुरूप लवकुशकथाविचित्रअति॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनोनाम अष्टमस्सोपानः॥

सङ्केतकोष।

ना० वा०=नामवाचक	सं०=संस्कृत	प्र० वा०=प्रत्यक्षवाचक
क्रि० वि०=क्रियाविशेषण	भा०=भाषा	आ० वा०=आशिष्यवाचक
वि०=विशेषण	प्रा०=प्राकृत	स० ना०= अ०=सर्वनामवाची अ-व्यय
अ० वा०=अधिकरणवाचक	गु० वा०=गुणवाचक	कृ०=कृदन्त
प्र० वा०=प्रमाणवाचक	वि० ना०=विशेषनाम	जा० वा०=जातिबाचक
अ०=अव्यय	वि० क्रि०=विधि क्रिया	प्र०=प्रत्यय
स०=सर्वनाम	सं० वा०=संख्यावाचक	अ०=अनिश्चयवाचक सर्वनाम
पुं०=पुल्लिंग	भा० वा०=भाव वाचक	त्रिलिं०=त्रिलिंग पुंलिंग स्त्री० नपुं०
स्त्री०=स्त्रीलिंग	ब० व०=बहुवचन	नि० अ०=निषेधार्थक अव्यय
नपुं०=नपुंसकलिंग	द० स०=दर्शकसर्वनाम	

अ

अकथ गु० वा० पुं० अकथ्य, कहने के योग्य नहीं
अकथनीय, गु० वा० पुं० सं० तथा
अकनि, क्रि० वि० सुनकरके भा०
अकरन, वि० पुं० भा० बिनाकारण
अकल,वि० पुं० सं० हाथ पांव रहित और बेहोश
अकसर, ना० वा० भा० केवल
अकाजेउ, क्रि० वा० भा० अकाज किया,मरना
अकाम, वि० पुं० सं० कामना वा इच्छारहित
अकाल, अ० वा० पुं० सं० कुसमय, विना ऋतुके
अकिञ्चन, वि० पुं० सं० दरिद्री,जिस के पास कुछ न हो
अकुल, वि० पुं० सं० कुलहीन
अकुलाना, क्रिया वा० घबराना
अकंटक,वि० पुं० सं० विनाशत्रुका, बेखटके
अकुंठ, वि० पुं० सं० नाशरहित, तीच्छण, तेज
अखय, वि० पुं० भा० अक्षय, जिस का नाश न हो
अखण्ड, वि० पुं० सं० जिसके खंड न हों, संपूर्ण
अखारा,अ०वा० भा० नाच, लड़ने और साधुओं के रहने का स्थान
अखिल, गु० वा० नपुं० सं० सब
अग,ना० वा० सं० पुं० पर्वत,अचल
अगनित, प्र० वा० प्रा० बेशुमार, बेप्रमाण
अगम, वि० प्रा० पुं० जहां कठिन से जा सके, ना० वा० सं० पुं० शास्त्र
अगरु, भा० वा० सं० पुं० एक प्रकारकी सुगन्धित वस्तु
अग्र, ना० वा० सं० आगे, मुख्य अगड़, प्रा० आगे
अगाध, ना० वा० सं० नपुं० अथाह
अगुन, ना० वा० सं० पुं० निर्गुण ब्रह्म, भगवान्
अगोचर, वि० सं० पुं० जो इन्द्री और अन्तःकरणादि से न जाना जावे
अघ, ना० वा० सं० पुं० पाप, दुःख
अघटित, वि० सं० कृदन्त० अयोग्य, जो न हो सके
अघात, भा० वा० सं० चोट, निशानेका स्थान
अघाती, वि० सं० पुं० जिसके घाव न लगा हो भा० पुं० तृप्तहुआ अघायगया
अचगरी, भा० वा० प्रा०दुष्टता, बदी
अचल, ना० वा० सं० पुं० पर्वत स्थिर, थिर
अचंचल, ना० वा० सं० पुं० थिर
अछत, वि० भाषा० जो कटा न हो और पूजामें अक्षत जो चढ़ाये जाते हैं वो नाम है
अज ना० वा० सं० पुं० जो जन्मे नहीं ब्रह्मा, बकरा, ब्रह्म
अज्ञ, ना० वा० सं० पुं० मूर्ख, जो कुछ न जाने
अज्ञात, वि० सं० पुं० जिस को न जाना हो
अज्ञता, भा० वा० सं० स्त्री० मूर्खपन
अजर, वि० सं० पुं० जरारहित, बुढ़ापा जिसको न हो, ब्रह्माजी और देवताओं का नाम भी है
अजामिल, ना०वा० पुं० एकब्राह्मण का नाम है वो पापी था पर नारायणके कहने से तरा
अजित,वि०सं० पुं०जो न जीताजावे
अजिन, ना० वा० सं० नपुं० मृगचर्म, चमड़ा
अजिर, ना० वा० सं० पुं० आंगन
अजे, भाषा पुं० जो जीतनेयोगनहो
अटन,नाम पुं० भाषा अटारी घूमना
अट्टहास, ना० वा० पुं० सं० खिलखिलाके हँसना
अतनु, ना० वा० सं० पुं० जो विना शरीर के हो, कामदेव को भी कहते हैं
अतर्क्य, वि० सं० पुं० जो तर्क के योग न हो

अतिथि, ना० वा० सं० अभ्यागत, पाहुन
अतिशय, ना० वा० भा० पुं० बहुत बड़ा, अतिशय
अतीत, ना०वा०सं०पुं०रहित, बीता
अतुलित, वि० सं० पुं० जो तोला नहीं गया, बढ़े
अत्र, अव्यय यहां, इस में
अत्रिप्रिया, ना० वा० सं० स्त्री० अनुसूया,अत्रिऋषिकीस्त्रीका नाम
अथाई, भा० पुं० बैठक
अदभ्र, वि० सं० नपुं० बहुत पूर्ण आश्चर्यित, सं० पुं० अपूर्व
अदिति, ना० वा० सं० स्त्री० देवताओंकी माता
अदेय, भा० वा० सं० नपुं० जो देने योग न हो
अदृश्य, भा० वा० सं० नपुं० छिपा जो न दीखे
अद्भुत, ना० वा० सं० पुं० अपूर्व्व आश्चर्य का
अद्रि, ना० वा० सं० पुं० पहाड़
अद्वैत, ना० वा०सं० भेदरहित, जिसके समान दूसरा नहीं
अधः, अव्यय सं० तले, नीचे
अधगो, ना० वा० भा० पुं० गुदामार्ग
अधर, ना० वा० सं० नपुं० होठ छोटा
अधिकारी, वि० सं० पुं० जो अधिकार के लायक हो

अधिप, नाम वा० सं० पुं० राजा, मालिक
अधिवास, नाम वा० सं० नपुं० बसने की जगह
अधीस, नाम वा० भा० सं० पुं० राजा, स्वामी, अधीश
अनअहिवात, भा० वा० भा० बिधवापन
अनइस, भा० वि० पुं० बुरा
अनख, ना० वा० भा० पुं० क्रोध, ईर्षा, डाह
अनघ, वि० सं० पुं० जो पापरहितहो
अनट, भाषा पुं० अन्याय
अनत, भाषा० पुं० और जगह
अनपायिनी, वि० सं० स्त्री० नित्य, जिसका नाश न हो
अनन्य, ना० वा० सं० पुं० जिसको दूसरे का भरोसा न हो
अनल, ना०वा०सं०पुं०आग, अग्नि
अनवद्य, ना० वा० सं० नपुं० निर्दोष
अनयास, भा० ना० वा० पुं० अनायास, बे यत्न
अनहित, ना० वा० भा० पुं० शत्रु, बैरी, गु० वा० बुरा
अनाथ, ना०वा० सं० पुं० बे मालिक
अनादि, वि० सं० पुं० जिसका आदि न हो
अनामय, ना० वा० सं० पुं० नीरोग, भला, चंगा

अनिन्दित, ना० वा० सं० पुं० जिसकी बुराई न हो
अनिप, वि० वा० नाम भा० वा० पुं० सिपहसालार, सेनापति
अनिमनि, ना० वा० भा० पुं० उदास, अनमनी
अनिल, भा० वा० सं० पुं० वायु, ब्यार, हवा
अनिर्वाच्य, वि० सं० पुं० जो कहने के योग्य न हो
अनी, ना०वा० भा० स्त्री० सेना, समुदाय
अनीक, ना०वा०सं०नपुं०सेना, फौज
अनीस, ना० वा० भा० पुं० अनीश, जीव जो ईश न हो
अनीह, ना० वा० सं० पुं० चेष्टारहित ब्रह्म
अनु, अव्यय सं० आगे पीछे भाषा थोड़ा
अनुकथन, क्रि० वि० सं० नपुं० बारम्बार कहना
अनुकूल, ना० वा० सं० पुं० प्रसन्न अनुसार
अनुग, ना० वा० सं० पुं० पीछेचलने वाला नौकर
अनुग्रह, नाम वा०सं०पुं० दया, कृपा
अनुगामी, नाम वा० सं० पुं० पीछे चलने वाला
अनुचर, नाम वा० स० पुं० दास

अनुचरी, नाम वा० सं० स्त्री० दासी
अनुज, ना० वा० सं० पुं० जो पीछे पैदाहो, छोटाभाई
अनुजा, ना०वा०सं०स्त्री०छोटीबहिन
अनुदिन, ना० वा० सं० नपुं० हमेशह, हररोज
अनुपम, वि० सं० नपुं० उपमारहित
अनुभव, नाम वा० सं० पुं० यथार्थ जानना
अनुमान, नाम वा० सं० पुं० विचार, अटकल
अनुमानी, नाम वा० सं० पुं० विचारने वाला
अनुराग, नाम वा० सं० पुं० प्रीति, थोड़ालाल
अनुरूप, ना० वा० सं० पुं० योग्य, अनुसार
अनुरोधू ना०वा०सं०पुं०रोकनेवाला
अनुमोदन, क्रि० वि०सं० प्रशंसा सराहना
अनुवाद, क्रि० वि०सं०बारबारकहना
अनुसारी नाम वा० सं० अनुकूल होय बोली
अनुभाऊ, नाम वा० भा० पुं० अनुभाव, माहात्म्य
अनुसासन ना० वा० भा० पुं० अनुशासन, आज्ञा
अनुसन्धान, ना० वा० सं० नपुं० चाहना, खोजना

अनुहर, ना० वा० सं० पुं० अनुहार योग्य
अनृत, नाम वा० सं० नपुं० झूठ
अनेक, ना० वा० सं० पुं० कई एक, बहुत
अनैसे, क्रि० वि० भा० कुदृष्टि से
अनंग, नाम वा० सं० पुं० जो अंग रहितहो, कामदेव का नामहै
अन्यथा, अव्यय०सं०झूठऔरप्रकारसे
अन्वहं, क्रि० वि० सं० हररोज लगातार
अपडर, ना० वा० झूठ, डर
अपत, नाम वा० सं० पुं० पापी अप्रतिष्ठित
अपक्षय, ना० वा०सं०नपुं० भय, डर
अपर, ना० वा० सं० नपुं०दूसरा और
अपलोक, ना० वा० सं०पुं०अपयश
अपवर्ग, नामवा०सं० पुं० मोक्ष, मुक्ति
अपवाद, नाम वा० सं० पुं० अपयश, निन्दा
अपहरना, क्रि० वा० भा० दूरकरना
अपहारी, ना० वा० सं० पुं० नाश करनेवाला
अपान, नाम वा० भा० पुं० अपना सं० पुं० गुदा
अपि, अव्यय० सं० भी, निश्चय
अपेल, नाम वा० भा० पुं० अचल
अप्रतिहत, वि० पुं० सं० जिसका रोक न हो

अर्पा, क्रि० वा० सं० देदिया, सौंपा
अबला, नाम० वा० सं० स्त्री, औरत
अबाधा, नाम वा० सं० स्त्री० सत्य बाधारहित, बेरोक, बे दुःख
अबुध, ना० वा० सं० पुं० अज्ञानी
अभि, अव्यय० सब ओरसे
अभिअन्तर, नाम वा०सं०नपुं०भीतर
अभिजित, नाम वा० सं० पुं० एक नक्षत्र का नाम है
अभिनन्दन, नाम वा० सं० नपुं० सराहना
अभिमत, नाम वा० सं० पुं० वांछित, चाहागया
अभिराम, नाम वा०सं० पुं० सुन्दर, सुखद
अभिषेक, नाम वा० सं० नपुं० जल छिरकना, स्नान
अभीष्ट, नाम वा० सं० पुं० चाहागया
अभूतरिपु, वि० सं० पुं० शत्रुरहित
अभेद नाम वा० सं० पुं० भेद रहित जो न टूटे
अभंगू, नाम वा० सं० पुं० जोनमिटे
अमराइ, नामवा०भा०आमकाबगीचा
अमरावती, नाम वा० सं० स्त्री०स्वर्ग, इन्द्रलोक
अमान, नाम वा० सं० नपुं० मान रहित, प्रमाण से परे
अमानुष, नाम, वा० सं० नपुं० जो मनुष्य से न हो

अमित, नाम वा० सं० नपुं० जिस-
का प्रमाण नहीं
अमिय, नाम वा० भा० पुं० अमृत
संजीवनी
अमोघ, नाम वा० सं० नपुं० सफल
अमियमूरि, नाम वा० भा० स्त्री० सं-
जीवनी, बूटी
अमंगल, नाम वा० सं० पुं० अशुभ
अय, नाम वा० सं० नपुं० लोहा
अयन, नाम वा० सं० नपुं० घर, स्थान
अयम्, सर्व नाम० पुं० यह
अयुत, नाम वा० सं० पुं० दशहजार
अरगाई, नाम वा० पुं० चुप, आत्मग
अर्धांग, नाम वा० सं० पुं० आधा
शरीर, आधा अंग
अर्ध, नाम वा० सं० नपुं० आधा,
अरनव, नाम वा० भा० पुं० अर्णव, समुद्र
अरनी नाम वा० भा० स्त्री० आग
मथने की लकड़ी
अरि भा० वा० सं० पुं० वैरी, शत्रु
अरुन, नाम वा० भा० पुं० लाल,
सूर्यका रथ हांकनेवाला
अरुनचूड़, नाम वा० भा० पुं० मुर्गा
अरुनाट, नाम वा० भा० पुं० लाल
अरुनशिखा, नाम वा० भा० पुं० मुर्गा
अलपित, क्रि० वि० अलक्षित, जो
दिखे नहीं
अलक्षि, नाम वा० भा० स्त्री० अल-
क्ष्मी, धनहीने

अलान, नाम वा० सं० पुं० जंजीरा,
गजबंधन
अलि, नाम वा० सं० पुं० भ्रमर, भौं-
रा स्त्री० सखी
अलिनि, नाम वा० भा० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी
अलीका, नाम वा० सं० पुं० झूठ
अलीहा, नाम वा० भा० पुं० झूठ
अलुहि, क्रि० वि० अलुझ करके
अलोला नाम वा० थिर
अलौकिक, नाम वा० सं० नपुं० जो
लोकमें नहो
अलंकृति, नाम वा० सं० स्त्री० अ-
लंकार, शोभा
अवकलित, नाम वा० सं० पुं० निश्चित
अवगति, नाम वा० सं० पुं० जानना
अवगाह, अव्यय० सं० अथाह स्ना-
न, नहाना
अवघट नाम वा० सं० पुं० अड़बड़
अवचट, नाम वा० सं० पुं० औचक
अवज्ञा नाम वा० सं० स्त्री० अपमान
अवडेरि, क्रि० वि० भा० त्यागकरके
पेंच में करके
अवढर, नाम वा० भा० पुं० जोनीचे
से चढ़े, दयाकरे
अवतंस, नाम वा० सं० पुं० माथे
का गहना
अवध, नाम वा० सं० पुं० अयोध्या
अवधि, नाम वा० सं० स्त्री० हद, सीमा,
प्रतिज्ञा

अवनि, नाम वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
अवनिप, नाम वा० सं० पुं० राजा
अवनीश, नाम वा० सं० पुं० अव
नीश, राजा
अवर्त, नाम वा० सं० पुं० भंवर,
जल घुमर
अवराधक, नाम वा० सं० पुं० सेवक
अवराधना, क्रि० वा० सेवना
अवरेखी, नाम वा० पुं० भा० लिखी
अवरेख, नाम वा० पुं० भा० लौटके
पद को जोड़ना
अवलोकय, वि० क्रि० देखो सं०
अवसान, नाम वा० सं० नपुं० अंतनाश
अवशि, नाम वा० भा० पुं० अवश्य
जरूर
अवशेषित, वि० सं० पुं० बाकी बचा
अवसेरी, नाम वा० भा० स्त्री० देर
ख्वाहिश, हाजत
अवाधी, नाम वा० सं० पुं० सुखी
अविकारी, वि० सं० पुं० विकाररहित
जन्म आदि ६ छह बिकार हीन
अविगत, नाम वा० सं० पुं० व्यापक
अविचल, नाम वा० सं० पुं० स्थिर
अविछीन, नाम वा० भा० पुं० निरंतर
अविद्या, नाम वा० सं० स्त्री अज्ञान
अविद्यापंच, वि० नाम सं० नपुं० अ-
विद्या १ स्मित २ अभिनिवेश ३
राग ४ द्वेष ५
अविनय, नाम वा० सं० पुं० ढिठाई

अविनाशी, वि० भाषा पुं० जिसका नाश नहीं
अविरल, नाम वा० सं० पुं० निरन्तर
अविरोध, नाम वा० सं० पुं० विरोध न हो
अविवेक, नाम वा० सं० पुं० अज्ञान
अव्यक्त, नाम वा० सं० पुं० प्रकृति, ईश्वर, गुप्त
अव्याहत, नाम वा० सं० पुं० बेरोक
अष्टादश, सं० वा० सं० पुं० अठारह
अस, अव्यय० भा० ऐसे
असन, नाम वा० भा० नपुं० भोजन, अशन, खाना
असनि, नाम वा० भा० पुं० अशनि, वज्र
असमय, नामवा० कुसमयबिनाऋतु
असमशर, वि० नाम भा० पुं० जिसके बाणतीव्र हों, कामदेव का नाम है
असहाई, नाम वा० भा० पुं० बिना सहायके
असमंजस, नाम वा० सं० पुं० दुबधा
असाधी, नाम वा० भा० पुं० असाध्य, जो दूर न हो
असि, नाम वा० सं० पुं० तरवार अ० ऐसी क्रियापद है
असिव, नाम वा० भा० पुं० अशिव, अमंगल

असुर, नाम वा० सं० पुं० दैत्य, राक्षस
असुरसेन, वि० नाम पुं० भा०गया
अशेष, नाम वा० सं० पुं० सब सम्पूर्ण
अशौच, नामवा० सा० पुं० अपवित्रता
असम्भावना, नाम वा० सं० स्त्री० अनिश्चय, जिसकी उमेद न हो
असम्मत, नाम वा० सं० नपुं० प्रतिकूल
अस्थिमात्र, नाम वा० सं० नपुं० हाड़भर
अह, नाम वा० सं० पुं० कष्ट, हंकार, दिन
अहह, अव्यय हाय, कष्टकी अधिकता
अहमिति, नाम वा० सं० पुं० अहंकार
अहि, नाम वा० सं० पुं० सांप, नाग
अहिनी, नाम वा० सं० स्त्री० सांपिनी, नागिनी
अहिराज, वि० नाम सं० पुं० शेषनाग, जो सांपोंका राजा है
अहिवात, नाम वा० सं० पुं० सुहाग, सौभाग्य
अहेर, नाम वा० भा० पुं० शिकार, आखेट
अहेरी, वि० भा० पुं० शिकारी
अहो, अव्यय आश्चर्य

अहं, स० सं० आ० पुं० मैं

आ

आकर, नाम वा० सं० पुं० खानि
आकुल, नाम वा० सं० पुं० व्याकुल, विकल, पूर्ण
आकृति, नाम वा० सं० स्त्री० आकार, सूरत, शकल
आखर, नाम वा० भा० पुं० अक्षर, हर्फ
आगर, नाम वा० पुं० भा० मुख्य मुहँजुबानी, घर, चतुर
आगरी, नाम वा० स्त्री० भा० कोठरी, नागरी
आगार, नाम वा० सं० पुं० घर, हवेली
आगिल, नाम० वा० भा० पुं० होनहार, भावी
आचरण, नाम वा० सं० पुं० आचार, करतूत
आचारहीं, क्रि० वा० सं० करते हैं
आतप, नामवा० सं० पुं० धूप, घाम
आत्महन, नाम वा० सं० पुं० आत्मघाती, जो अपने को मारे
आतुर, नाम वा० सं० पुं० बीमार, रोगी, दुखी
आदिकवि, वि० नाम सं० पुं० वाल्मीकि जी
आन, नाम वा० भा० पुं० अन्य, और, सौगन्द

आनन, नाम वा० सं० नपुं० मुख,मुहँ
आनवी, वि० क्रिया० लाइयो
आपन्न, कर्म वा० सं० पुं० आपत्तिमें पड़ा
आभीर, नाम वा० सं० पुं० अहीर, गोप, भील
आमलक, नाम वा० सं० नपुं० आंवरा, आंवला
आयत, गु० वा० सं० पुं० चौड़ा, विशाल, बड़ा
आयतन, नाम वा० सं० नपुं० घर
आयसु, नाम वा० भा० स्त्री, आज्ञा, हुक्म,
आयुध, नाम वा० सं० नपुं० शस्त्र, हथियार
आरज, नाम वा० भा० पुं० आर्य, श्रेष्ठ, ससुर
आरत, नाम वा० भा०पुं०आर्त्तदुःख
आरति, नाम, वा० भा० स्त्री० आर्त्ति, पीड़ा, अतिप्रीति
आराती, नाम वा० भा० पुं० अराती, वैरी, शत्रु
आराम, नाम वा० सं० पुं० सुखदाता बगीचा
आरूढ़, नाम वा० सं० पुं० चढ़ा
आरो, नाम वा० भा० पुं० शब्द आरव, आहट
आलय, नामवा०सं०नपुं० घर,स्थान
आलवाल, नाम वा० सं० पुं० थांवला

आव, नाम वा० भा० स्त्री० आयुष्य, उमर
आवलि, नाम वा० भा० स्त्री० अवलि, सतर
आवाहन, नाम वा० सं० नपुं० बुलाना
आश्रित नाम वा० सं० पुं० आश्रित जो किसी के भरोसे वो आसरेसेहो
आश्रमी, नाम वा० सं० पुं० ब्रह्मचारी
आशक्त, कर्म्मवाचक सं० पुं० जो लगाहो
आसा, नाम वा० स्त्री० भा० आशा, दिशा, भरोसा, आसरा
आसावसन, नाम वा० पुं० दिगंबर, नंगा, सन्तोषी, तृष्णा रहित
आसीन, नाम वा० सं० पुं० बैठा
आसु, नाम वा० नपुं० भा० जल्दी, आशु
आक, नाम वा० भा० पुं० निश्चय
आंकुरे, नाम वा० भा० पुं० बहु व० अंकुर, अंखुए

इ

इकअङ्ग, नाम वा० भा० पुं० एक पलग अङ्ग
इच्छित, नाम वा० पुं० सं० चाहना या वाञ्छित
इत, अव्यय इधर
इतराई, गु० वा० भा० स्त्री० ऐंठ के चलना, इतरना

इदम्, सं० नाम नपुं० यह
इदमित्थम्, द० स० नाम प्र० वा० यह ऐसा है
इव, सादृश्यार्थक अव्ययजैसेसदृश
इष्टदेव, नाम वा० सं०पुं० पूज्य देवता
इह, अव्यय यहां, इस लोक में
इन्दिरा, नाम वा० सं० स्त्री, लक्ष्मी
इन्दु, नाम वा० सं० पुं० चन्द्रमा
इन्द्रजाल, नाम वा० सं०पुं०बाजीगर
इन्द्रजीत, नाम वा० सं०पुं० मेघनाद
इन्द्री, नाम वा० भा० स्त्री० इन्द्रिय नेत्रादि

ई

ईति, नाम वा० सं०स्त्री० एकप्रकार की दैवी उपाधि जो राज्यमें होती है उनके ६ भेद हैं १ अति पानी बरसना २ पानी न बरसना ३ टीड़ी अधिक होना ४ चूहे अधिक होना ५ सूए अधिक होना ६ रतुआ अन्नादि में लगना
ईशान, नाम वा० सं० पुं० ईश्वर, शिव, महादेवजी
ईषणा, नाम वा० सं० स्त्री० चाह ३ प्रकारकी संसारमें होती है १ उत्तम लोककी २ पुत्रकी ३ धनकी
ईश, नाम वा० सं० पुं० ईश, ईश्वर शिवजी, राजा
ईंधन, नाम वा० पुं० भा० जलाने की लकड़ी

उ

उकठा, नाम वा० पुं० भा० उकठा, उकठना
उकसाहं, क्रि० वा० भा० ऊंचे होना खिलना
उग्र, नामवा० सं० पुं० भयङ्कर, श्रेष्ठ
उघरे, गु० वा० भा० पुं० वा० वा० खुले, नंगे
उचाट, नाम वा० भा० पुं० उच्चाटन, उचाटन
उचित, नाम वा०सं० पुं०योग्य,जोग
उछंग, नाम वा० भा० पुं० उत्संग गोदी
उजागर, नाम वा० भा० प्रसिद्ध उज्वल
उज्जेनी, नाम वा० भा० स्त्री० एक नगर का नाम है जहां के राजा भोज थे
उडु, नाम वा० सं० स्त्री० तारा, नक्षत्र
उक्ति, नाम वा० सं० स्त्री० कहना, वचन
उत्कण्ठा, नाम वा० सं० स्त्री० अभिलाषा
उत्कर्ष, ना० वा० सं० पुं० बड़ाई, आधिक्य
उत्पात, नाम वा० सं० पुं० उपाधि उपद्रव
उत्सव, ना० वा० सं० पुं० उत्साह खुशी
उतुंग, गु० वा० सं० पुं० ऊंचा
उदक, ना०वा०सं०नपुं० जल, पानी
उदघाटी, ना० वा० भा० स्त्री० प्रकटना
उदधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
उद्भव, ना० वा० सं० पुं० उत्पात
उदयगिरि, वि० ना० सं० पुं० उदिताचल, जहांसे सूर्य उदय होताहै
उदर, ना० वा० भा० पुं० पेट
उदरवृद्धि, ना० वा० सं० जलोदररोग
उद्वेग, ना० वा० सं० पुं० क्षोभ, घबराहट
उदार, ना० वा० सं० पुं० दाता, देनेवाला
उदासा, ना० वा० भा० पुं० बेपरवाह
उदासी, ना० वा० सं० पुं० संन्यासी
उदासीन, ना० वा० सं० पुं० शत्रोमित्र भाव रहित
उपचार, ना० वा० सं० पुं० उपाय
उपधान, ना० वा० सं० पुं० न. किया
उपनिषद्, ना० वा० सं० पुं० वेद का रहस्य
उपपातक, ना० वा० सं० पुं० छोटा पाप
उपवन, ना० वा० सं० नपुं० विहार करने की बगीची
उपरागा, नाम वा० भा० पुं० ग्रहण, गहन
उपल, नाम वा० सं० नपुं० पत्थर
उपवरहन, नाम वा०भा० पुं० तकिया
उपवासा, नाम वा० भा० उपवास, व्रत, भूखा रहना
उपवीत, नाम वा० सं० नपुं० जनेऊ
उपराजा, क्रिया० वा० उपजाना
उपहार, नाम वा० सं० पुं० भेट, पूजा, नज़र
उपाटी, क्रि० वि० उखाड़ के
उपाधी, नाम वा० समीप प्राप्ति, उपद्रव
उपाये, कर्म वा० उपजाये
उपारे, क्रि० वा० उखारे, उपारे
उपाया, क०वा०पैदाकिया, उपजाया
उपासा, नाम वा० भा० पुं० उपवास, भूखा
उपासक, नाम वा० सं० पुं० भक्त
उपासना, नाम वा० सं० स्त्री० भक्ति, सेवा
उबरे, नाम वा० उबर गया
उबरा, नाम वा० बचा, उबर गया
उभय, नाम वा० सं० पुं० दो, दोनों
उभौ, नाम वा० सं० पुं० दो, दोनों
उमा, नाम वा० सं० स्त्री० पार्वतीजी
उयेउ, क० वा० उदय हुआ
उर, नाम वा० सं० पुं० छाती, हृदय
उरग, नाम वा० सं० पुं० सांप
उरगाद, नाम वा० सं० पुं० सांपको जो खाय, गरुड़
उरगारी, नाम वा० सं० पुं० सांपों का बैरी अर्थात् गरुड़

उरु, नाम वा० सं० पुं० बहुत अधिक
उर्विजा, नाम वा० सं० स्त्री० जो पृथ्वी से पैदाहुई हो श्री सीता जी का नाम है
उलूक, नाम वा० सं० पुं० उल्लू, घुघुआ
उहारउ, नाम वा० भा० पुं० उद्धार परदा

ऊ

ऊमर, नाम वा० भा० पुं० उडुम्बर, गूलर
ऊना, नाम वा० सं० पुं० कम

ए

एक, सं० वा० सं० पुं० एकही अलग, मुख्य
एकरस, नाम वा० सं० पुं० जिस में ६ विकार अर्थात् १ काम २ क्रोध ३ लोभ ४ मोह ५ मद ६ मात्सर्य ये न हों
एकाकिन, नाम वा० सं० पुं० अकेला एकाकी
एकाकी, नाम वा० सं० पुं० अकेला,
एतादृश, सं० ना० ऐसा
एवमस्तु, आ० वा० ऐसा हो

ऐ

ऐक, ना० वा० सं० पुं० अटकल

ओ

ओघ, ना० वा० सं० पुं० समूह
ओदन, ना० वा० भा० पुं० चावल पका हुआ, भात
ओधे, क्रि० वा० लगे
ओर, अव्यय, तर्फ़, अन्त
ओरे, ना० वा० व० व० भा० पुं० ओराके बहुवचन ओले

अं

अङ्क, ना० वा० सं० पुं० अक्षर, गोदी, निशान, गिनती
अङ्कित, क०वा० सं० पुं० चिह्नयुत
अङ्ग, ना० वा० सं० पुं० शरीर प्रिय हस्त आदि राज्य के ७ अङ्ग होते हैं १ स्वामी २ दीवान ३ मित्र ४ कोष ५ राज्य ६ क़िलआ ७ फ़ौज
अङ्गरी, ना० वा० भा० पुं० बख़्तर
अङ्गवन, क्रि० वा० सहना
अञ्चल, ना० वा० भा० पुं० आंचर
अम्ब, ना० वा० सं० पुं० स्त्री० माता, अम्बा, महतारी
अम्बक, ना० वा० पुं० सं० आंख
अम्बर, ना० वा० सं० नपुं० वस्त्र, कपड़ा
अम्बरीष, ना० वा० भा० पुं० अम्बरीष, एक राजा का नाम है
अम्बु, ना० वा० सं० नपुं० जल, पानी
अम्बुधर, ना० वा० सं० पुं० मेघ,
अम्बुधि, ना०वा० सं० पुं० समुद्र
अम्बुपति, ना० वा० सं० पुं० बरुण, बरुन
अम्भोज, ना० वा० सं० पुं० कमल
अञ्जि, क्रि० वि० अञ्जन लगाके, आंज करके
अंगुलि, ना० वा० सं० नपुं० अंगुरी
अण्ड, ना० वा० सं० पुं ब्रह्माण्ड
अन्तर, अव्यय भीतर, भेद
अन्तरजामी, वि० सं० पुं० मनका जानने वाला
अन्तर्ध्यान, क्रि० वा० छिपना
अन्तर्हित, क्रि० वा० छिपे, गुप्त
अन्तावरि, ना० वा० भा० स्त्री०
अन्तड़ी, आंत
अम्ब्रा, ना० वा० भा० पुं० आंब

क

कइकई, भा० वा० स्त्री० भा० कैकेई
कच, ना० वा० सं० पुं० बाल, केश
कच्छप, ना० वा० सं० पुं० कछुआ
कज्जलगिरि, ना० वा० सं० पुं० अञ्जन पर्वत
करक, ना० वा० सं० पुं० सेना, कड़ा
कटाह, ना० वा० भा० पुं० कड़ह
कटि, ना० वा० सं० स्त्री० कमर
कटिसूत्र, ना० वा० सं० नपुं० करधनी, तागड़ी
कटु, ना० वा० सं० नपुं० कड़वा
कडिहार, ना० वा० सं० पुं० कर्णधार, मलाह

कत, सं० काहे, किसलिये
कति, सं० नपुं० कितना
कथनीय, क० वा० सं० पुं० कहने योग्य
कदली, ना० वा० सं० स्त्री० केला, केरा
कदम्ब, ना० वा० सं० पुं० वृक्ष विशेष, समूह
कद्रू, ना० वा० सं० स्त्री० सांपों की माता
कनककशिपु, ना० वा० सं० पुं० हिरण्यकशिपु, एक दैत्य का नाम
कनकलोचन, ना० वा० सं० पुं० हिरण्याक्ष
कनी, ना० वा० भा० स्त्री० कन्द, कनिका
कपटका, भू० ना० वा० सं० स्त्री० मायाभू भूमि
कपाट, ना० वा० सं० पुं० किवाड़
कपाल, ना० वा० सं० पुं० खोपरी
कपि, ना० वा० सं० पुं० बानर
कपिकुंजर, ना०वा०सं०पुं० कपि श्रेष्ठ
कपिन्दा, ना० वा० सं० पुं० कपीन्द्र, बानरों का राजा
कपिल, ना० वा० सं० पुं० एकमुनि का नामहै, सांख्यशास्त्रका प्रवर्तक
कपोत, ना० वा० सं० पुं० कबूतर
कपोल, ना० वा० सं० पुं० गाल

कवाह, ना० वा० भा० पुं० हुनर, गुन
कबुल, ना० वा० भा० पुं० कबूलक रायी पक्षी विशेष
कमठ, ना० वा० सं० पुं० कछुआ
कमनीय, ना० वा० सं० नपुं० सुन्दर
कमला, ना०वा०सं०स्त्री० लक्ष्मीजी
कर्म, ना० वा० सं०नपुं० काम, कार्य
कर, ना० वा० सं० पुं० किरण, हाथ सूंड़, महसूल
करक, ना० वा० भा० पुं० पीड़ा, तकलीफ़
करज, ना० वा० सं० पुं० अंगुली
करतल, ना० वा० सं० पुं० हाथपर
करतारी, ना० वा० भा० स्त्री० हाथ की ताली
करण, ना० वा० सं० नपुं० कान इन्द्रिय, साधन, कारण करना
करनीया, वि० सं० इलि--करने के योग्य
करवरे, ना० वा० भा० बिपत
करषा, ना० वा० भा० स्त्री० ईर्षा, बैर, रिस
करषि, क्रि० वि० भा० खेंच करके करपना, कर्षण
करारा, ना० वा० भा० पुं० कराल, भयङ्कर, किनारा, तट
कराल, ना० वा० सं० पुं० कठोर, भयङ्कर
करि, ना० वा० सं० पुं० हाथी

करिणी, ना० वा० सं०स्त्री० हाथिनी
करीला, ना० वा० भा० पुं० वृक्ष विशेष० जिसमें पत्ता नहीं
करुई, ना० वा भा० स्त्री० कटु, कडुवाई
करुण, ना० वा० सं० पुं० दया, करुणा
करुणाकरति, वि० भा० स्त्री० गुणानुवाद कहकर विलाप करती
कर्तव्य, वि० सं० नपुं० करनेयोग्य
कर्णधार, ना० वा० सं० पुं० मलाह
कल, ना०वा० सं०पुं० सुन्दर, मीठा
कलकंठ, ना० वा० सं० पुं० कोइल
कल्प, ना० वा० सं० पुं० कल्प, ब्रह्माजी का दिन, प्रलय, मनोरथ समर्थ, कल्पना, रचना
कल्पतरु, ना०वा० सं० पुं० कल्पवृक्ष
कल्पना, ना० वा० सं० स्त्री० तर्क, लालसा, कष्ट, रचना
कलपि, क्रि० वि० भूठकरके, बना लेना, दुःखपाना
कल्पित, ना० वा० सं० पुं० भूठ तर्क, मान लिया
कलवल, ना०वा०सं० पुं० स्पष्टनहीं
कलभ, ना० वा० सं० पुं० हाथी का बच्चा
कलमले, त्रि० चंचलभय, चलेहिले कलमलाये
कलश, ना०वा०सं०पुं० कलस, घड़ा

कलहंस, ना० वा० सं० पुं० राजहंस
कला, ना० वा० सं० स्त्री० जल चलना ६४ अंश भाग
कलाप, ना० वा० सं० पुं० समूह
कलि, ना० वा० सं० पुं० कलियुग, बखेड़ा, कलह, बहेड़ेका वृक्ष
कलिकवि, ना० वा० सं० पुं० कलियुग के कवि, कालिदास, आदि
कलित, वि० पहिरा, पहिना, बनाया, सुन्दर, रचित
कलिमलसरि, ना० वा० भा० स्त्री० कर्मनाशा
कलिल, ना० वा० सं० नपुं० कीचड़, पंक
कलुष, ना० वा० सं० नपुं० पाप
कलेवर, ना०वा०सं०नपुं० शरीर,देह
कलेश, ना० वा०भा०पुं०क्लेश,दुःख, चन्द्रमा
कलंक, ना० वा० सं० पुं० निशान, चिह्न सिद्ध पारा
कल्लोलनी, ना० वा० सं० स्त्री० लहराई नदी
कवल, ना०वा०सं० नपुं०ग्रास,कवर
कवि, ना० वा० सं० पुं० काव्यकर्ता
कवित्त, ना० वा० भा० पुं० काव्य, कविता,
कवन्ध, ना० वा० सं० पुं० दैत्यका नाम है, धड़
कश्यप, ना० वा० सं० पुं० ऋषि का नाम है
कसे, क्रि० वा० भा० कसनाक कसौटी पर रगड़े
कहानी, ना० वा० भा० स्त्री० कथा
काऊ, कबहूं, कभी
काक, ना० वा०सं०पुं० कौवा,काग
काकपच्छ, ना० वा० भा०पुं० पट्टे
काकु, व्यंग बचन
काखासोंती, ना० वा० भा० स्त्री० कन्धों से कमर तक
काछे, वि० बनाये
कानन, ना० वा० सं० नपुं० बन
कानी, ना० वा० भा० स्त्री० सकोच, मर्यादा
काम, ना०वा०सं० भा० पुं०कामना, कामदेव, विषय, धंधा, सुंदर
कामद, वि० वा० पुं० कामनादेनेवाला, मनोरथ देनेवाला
कामदगाई, वि० ना० भा० स्त्री० कामधेनु
कामना, ना० वा० सं ०स्त्री० मनोरथ, चाह,वासना, इच्छा
कामरूप, ना० वा० सं० पुं० इच्छाचारी
कार्मुक, ना० वा० सं०नपुं० धनुष
कारक, ना०वा०सं० पुं० करनेवाला
कारज, ना० वा० भा० पुं० कार्य, पृथ्वी, १ जल, २ तेज, ३ वायु, ४ आकाश, ५
कारन, ना० वा० भा० पुं० प्रयोजन, पिता, निमित्त, मायाप्रकृति
कारन करन, ना० वा० भा० पुं० महत्तत्वादि के कारण
कारी, ना० गु० वा० भा० स्त्री० काली
काल, ना० वा० सं० पुं० समय, मृत्यु, नेम, मीच, यमराज, काला, श्याम
कालकूट, ना० वा० सं० पुं० विष, जहर
कालराति, ना० वा० भा० स्त्री० प्रलयकी रात
कालिका, ना० वा० सं० स्त्री० देवी, भगवती
काली, ना० वा० सं० स्त्री० श्याम,
कांजी, ना० वा० भा० स्त्री० सिरका, राई का खट्टापानी, मट्ठा
कांधी, क्रि०वि० अङ्गीकार करके
किन, ना० वा० भा० पुं० घाव, क्यों नहीं
किन्नर, ना० वा० सं० पुं० देवजाति विशेष
किमपि, सं० ना० अ० कुछ भी
किंवा, स० ना० अ० अथवा
किरातिन, ना० वा० भा० स्त्री०भीलनी
किरिच, ना० वा० भा० पुं० टुकड़ा
किरीट, ना० वा० सं० पुं० मुकुट

किलकिला, ना० वा० सं० पुं० वानरों की चिल्लाहट

किसलय, ना० वा० भा० पुं० नया पत्ता, किशलय

किस, स० ना० किसको

किशोर, ना० वा० भा० पुं० किशोर लड़का १६ वर्षकी अवस्थावाला

किंकर, ना० वा० सं० पुं० नौकर, दास

किंकरी, ना० वा० सं० स्त्री० दासी, टहलनी

किंकिनी, ना० वा० भा० स्त्री० क्षुद्रघंटिका, करधनी, तागड़ी

किंसुक, ना० वा० भा० पुं० किंसुक, पलाश, ढाकफूल

कीती, ना० वा० भा० स्त्री० कीर्ति, जस

कीट, ना० वा० भा० पुं० तोता, सूआ

कीरति, ना० वा० भा० पुं० कीर्ति, यश, जस

कील, ना० वा भा० पुं० खरिका,

कूना, वा० सं० स्त्री० भूमि, पृथ्वी नीच, बुरा

कुचाह, ना० वा० भा० स्त्री० बुरासमाचार

कुंचित, वि० क्रि० भा० घुघुरारे टेढ़ा,

कुंजर, ना० वा० सं० पुं० हाथी

कुजोगी, ना० वा० भा० पुं० कुयोगी, विषयी

कुठार, ना० वा० भा० स्त्री० कुट

कुठारी, ना० वा० सं० स्त्री० टांगी

कुठाहर, ना० वा० भा० पुं० नीच जगह

कुतर्क, गु० वा० सं० पुं० नीचविचार

कुदृष्टि, गु० वा० सं० स्त्री० पापदृष्टि

कुधातु, ना० वा० सं० पुं० लोहा

कुपथ, ना० वा० सं० नपुं० बुरीराह, कुमार्ग

कुपथ्य, ना० वा० सं० नपुं० बदपरहेजी

कुबलय, ना० वा० सं० नपुं० कमल

कुबिहग, ना० वा० भा० पुं० बाजपक्षी

कुम्भज, वि० ना० सं० पुं० ऋषिविशेष, अगस्त्य

कुमार, ना० वा० सं० पुं० कुवारा, बालक बिनब्याहा

कुमारी, ना० वा० सं० स्त्री कन्या, बिनब्याही

कुमुद, वि० ना० सं० पुं० १ कोई, २ बानरविशेष

कुमुदबन्धु, ना० वा० सं० पुं० कमल ना० वा० चन्द्रमा

कुररी, ना० वा० सं० पुं० पक्षीविशेष कूंज

कुराई, ना० वा० भा० स्त्री० पांवफसने का बिल

कुरो, ना० वा० भा० पुं० सबजाति

कुरुचि, ना० वा सं० स्त्री० नीचवासना

कुरङ्ग, ना० वा० सं० पुं० हरिन, मृग

कुल, ना० वा० सं० नपुं० १ वंश २ समूह ३ घर

कुलह, ना० वा० भा० स्त्री० टोपी, कुलाह

कुलि, गु० वा० भा० पुं० सब

कुलिस, ना० वा० भा० नपुं० कुलिश १ वज्र २ हीरा

कुशली, वि० सं० पुं० सुखी

कुशकेतु, वि० ना० पुं० जनक के भाईका नाम

कुशल, गु० वा० भा० पुं० कुशल, चतुर, कल्याण

कुसमउ, गु० वा० भा० पुं० अनवसर बुरासमय

कुसुमित, वि० सं० क्रि० प्रफुल्लित फूलाहुआ

कुम्हड़, ना० वा० भा० पुं० कोहड़ाफल

कुंकुम, ना० वा० सं० पुं० १ केशर २ रोरी

कुंभ, ना० वा० सं० नपुं० कुंभ, घड़ा, हाथी का माथा

कुंत, ना० वा० सं० पुं० भाला

कुंवर, ना० वा० सं० पुं० राजकुमार

कूजहिं, क्रि० वा० कूजते हैं, बोलते हैं, कूजना

कूट, ना० वा० भा० पुं० १ पहाड़ की चोटी २ निहाई

कूटी, गु० वा० सं० स्त्री० व्यंग्यवचन

कूप, ना० वा० सं० पुं० कूंआ

कूर, ना० वा० सं० पुं० १ कठोर २ कपटी ३ टेढ़ा
कूल, ना०वा० सं०नपुं० तट,किनारा
कूड़िना, वा०भा०स्त्री० लोहेकीटोपी
कृत, क० वा० किया, कर्म, करतूति
कृतकृत्य, वि० सं० पुं० कृतार्थ
कृतांत, ना० वा० सं० पुं० यमराज
कृतनिन्दक, वि० सं० पुं० कृतघ्न
कृतज्ञ, वि० सं० पुं० उपकार मानने वाला
कृपानि, ना० वा० भा० पुं० कृपाण, तरवार
कृपिन, ना०वा०भा०पुं० कृपिण,सूम
कृमि, ना०वा०सं०पुं०कीड़ा,किरौना
कृस, ना० वा० भा० पुं० १ कृश दुर्बल, दूबर
कृशानु, ना० वा० भा० पुं० कृशानु आग, अग्नि
कृषी, ना० वा० सं० स्त्री० खेती
क्रियन्ह, १ ब्यवहार, क्रिया शब्दका बहुवचन २यज्ञादि ३प्रीति ४भक्ति
कोकी, ना० वा० भा० पुं० मोर
केतु, ना० वा० सं० पुं० १ नीचग्रह २ ध्वजा
केर, का.प्र० सम्बन्धकारकका चिह्न
केलि,ना० वा०सं० स्त्री० क्रीड़ा,खेल
केवट, ना०वा०भा०पुं०कैवर्त,मलाह
केवल, ना० वा० पुं० सं० मुख्य, एकही अकेला

केसरी, ना० वा० भा० पुं० केशरी, १ सिंह २ हनुमान के पिता
केहरी,ना०वा०भा० पुं० केशरी, सिंह
कैकेय, ना० वा० सं० पुं० १ राजा २ देश विशेष
कैटभ, ना० वा०सं० पुं० दैत्य विशेष
कैरव, अ० सं० लिं० कोई
कैवल्य, ना० वा० सं०पुं०मोक्ष,मुक्ति
कोका, ना० वा० सं० पुं० १ चकई, चकवा २
कोंछे, ना० वा० भा० स्त्री० गोदी
कोटर, ना० वा० भा० पुं० खोडरा
कोटि, सं० वा० १ करोड़ २ पक्ष ३ धनुष का छोर
कोदंड, ना० वा० सं० पुं० सं० स्त्री० धनुष
कोद्रव, ना०पुं०वा०भा० कोदो,अन्न विशेष
कोपर, ना०वा०भा० पुं० पात्रविशेष
कोपी, वि० सं० पुं० १ कोई २ क्रोधी
कोविद, ना० वा० सं० पुं० पंडित
कोये, ना० वा० भा० पुं० आंखका संपूर्ण श्वेत देला
कोरि, क्रि० वा० खोद करके, कोरना, खुरचना
कोरी, सं० वा० भा० स्त्री० कड़ोड़
कोल,ना०वा०सं०पुं० १ शूकर,सुअर
कोश, ना० वा० भा० पुं० १ कमल का मध्य २ घर ३ खजाना

कोसल, ना० वा० भा० स्त्री० एक देशका नाम
कोसला, ना०वा०सं०स्त्री०अयोध्या
कोशलपुरी, ना० वा० सं० स्त्री० अयोध्या
कोह, ना० वा० प्रा० पुं० क्रोध
कोहवर, ना० वा० पुं० भा० कौतुक, घरव्याहका
कोहाव, गु० वा० पुं० भा० रूठना
कोहाना, कोही, वि० प्रा० पुं०क्रोधी
कौ, अ० वा० सं० स्त्री० पृथ्वीमें
कौतुक, गु०वा० सं०पुं० १ तमाशा २ अनायास
कौतूहल, गु०वा० सं०नपुं० कौतुक
कौमुदी, ना०वा०सं०स्त्री० चांदनी
कौल, वि० सं० पुं० वाममार्गी
कौशिक,वि०ना०सं०पुं०विश्वामित्र
कङ्क, ना० वा० सं० पुं० कुही
कंकन,ना०वा०भा०पुं०कड़ा कंकना
कंचन,ना०वा०सं०नपुं०सोनासुवर्ण
कंज, ना० वा० सं० पुं० कमल
कंटक, ना० वा० सं० पुं० १ कांटा २ शत्रु
कंडु, भा० वा० सं० स्त्री० खजुली
कंत, ना०वा० सं० पुं० पति
कंद, १ कमल आदिकी जड़ २ मेघ ३ समूह
कंदरा, ना० वा० सं० स्त्री० गुफा
कंदुक, ना० वा० सं० नपुं० गेंद

कंधरा, ना० वा० सं० पुं० गला
कंध, ना०वा० सं०पुं० १ स्कंध कांधा २ मोटीडार
कंप, ना० वा० सं० पुं० कांपना
कम्पति, ना०वा० सं० पुं० समुद्र
कंबल, ना० वा० सं० पुं० कमरा, पशमीना
कंबु० ना० वा० सं० पुं० शंख

ख

खग, ना०वा० सं०पुं०पक्षी,चिड़िया
खग्ग, ना०वा० भा० पुं० (खड्ग) तलवार
खगकेतु, ना० वा० सं० पुं० गरुड़
खगहा, ना० वा० भा० पुं० गैंड़ा
खगेस, ना० वा० भा०पुं०(खगेश) गरुड़
खचित, वि० भा० पुं० जड़ाऊ
खची वि० भा० स्त्री०जड़ाऊ
खटाहि, ना० वा०पुं० भा० थिररहना
खद्योत, ना० वा० सं० पुं० जुगनू
खनि, क्रि० वि० खोद करके
खप्पर, ना० वा० भा० पुं० खर्पर, खोपड़ी
खर्पर, ना० वा० १ पीठ २ शिर ३ खोपड़ी
खर्व, गु०वा० सं०पुं० १ छोटा २ तुच्छ
खभारू, गु० वा० भा० पुं० छोभ
खर, ना० वा०सं०पुं० १ राक्षस,दूषण का भाई २ तीक्ष्ण ३ गदहा ४ तृण
खरभर, गु० वा० भा० पुं० छोभ
खरी, ना० वा० सं० पुं० गदही
खरो, ना० वा० भा० पुं० तृण
खल, ना० वा० सं० पुं० दुष्ट, खरतल
खलु, आ० निश्चय करके
खस, ना० वा०भा० पुं० जातिविशेष
खसी, त्रि० भा० स्त्री० गिरी
खसेउ, वि० भा० पुं० गिरा, खसना
खांगे, न्यू० वा० पुं० भा० कमती
खानिक, वि० भा० पुं० जो खानि में हुआ
खानी, ना० वा०भा० स्त्री० (खानि) घर
खाले, ना० वा०भा०पुं० नीचे,गड़हा
खिन्न, वि० सं० कृ० दुखिया
खीन, वि० भा० पुं० (क्षीण) दूबर, दुर्बल
खीस, गु० वा० पुं० भा० नाश
खेत, ना० वा० भा० पुं० (क्षेत्र) समरभूमि, अन्नबोने का स्थान
खेद, ना० वा० सं० पुं० दुःख
खेरे, ना० वा० भा० पुं० पुर, गांव
खेलवार, वि० भा० खेलाड़ी
खोडरा, सं० वा० पुं० भा० (षोड़श) सोरह
खोरी, ना० वा० पुं० भा० १ दोष २ गसी ३ चन्दन की खोरी
खोरे, वि० भा० पुं० लँगड़े
खोह, ना० वा० भा० स्त्री० गुफा
खंजन, ना० वा० सं० नपुं० खंडरिच
खंड, ना० वा० सं० नपुं० टुकड़ा

ग

गगन, ना० वा० सं० नपुं० आकाश
गज, भा० वा० सं० पुं० हाथी
गजानन, ना०वा०सं०पुं०गणेशजी
गत, कृ० वि० १ गया २ प्राप्त ३ ज्ञात ४ निकृष्ट ५ विना ६ अप्रिय
गति, ना० वा० सं० स्त्री० १ मुक्ति २ रास्ता ३ चाल ४ ज्ञान ५ स्वरूप ६ दशा ७ आधार ८ उपाय
गथ, ना० वा० भा० पुं० दान
गदगद,ना०वा०सं० पुं०आनन्दयुक्त
गर्द, ना० वा० स्त्री० भा० धूरि
गन, ना०वा० भा०पुं० १ गण,शिव के प्रथम आदि, २ विघ्न ३ समूह
गनराऊ,ना०वा०भा०पुं० गणेशजी
गणराज,ना०वा० भा०पुं० गणेशजी
गनि, क्रि० वि० १ गनकरके २ विचारके
गनिक, ना० वा०भा० पुं० गणक ज्योतिषी
गनिका, ना० वा० भा० स्त्री० वेश्या, कसबी
गनी, ना० वा० १ धनी० २ विचार ३ गिनती
गने, वि० ना० पुं० गिनती के
गनेस, ना० वा० १ गणेश २ आरंभ ३ रस

गर्वित, वि० सं० पुं० अभिमानी मानयुक्त
गभुवारे, ना० वा० भा० पुं० गर्भ-बाल, बालक के नये बाल
गमु, क्रि० वा० गमन, जाना
गम्य, कृ० वा० नपुं० सं० जानने के योग्य
गय, ना० वा० सं० पुं० हाथी
गयन्द, ना० वा० सं० पुं० हाथी
गरल, ना० वा० सं० नपुं० विष
गरुता, भा०वा०गुरुता,गरुआई,भार
गरह, ना० वा० भा० पुं० १ ग्रह २ गठिआ, बात
गलित,वि०सं० क्रि०गलगया,नाश
गवहिं, क्रि० वि० गँवसे
गवाशा, ना० वा० भा० कसाई
गहगहे, ना० वा० भा० बजे, नक्कारे का शब्द
गहन,ना० वा० १ विकट २ वन ३ पकड़ना
गहवर, क्रि० वि० १ सघन, सोचके साथ
गहरु,गु०वा०भा० स्त्री० देरी,विलम्ब
गाइगोट, ना० वा० भा० स्त्री० गोशाला
गाजन,वि०भा०पुं०नाशकरनेवाला
गाढ़,ना० वा पुं० भा० गड़हा
गाडर, ना०वा० पुं० भा० घासविशेष खसका भेद
गाढ़ा, ना० वा० भा०पुं०कठिन,दृढ़
गात, ना० वा० सं० नपुं० गात्र, शरीर, अङ्ग
गाथा, ना० वा०सं० स्त्री० कथा
गाथे, वि० पुं० भा० गूंथे
गाडुर ना० वा० भा० पुं०चमगिद्दरा
गाधि, ना० वा० सं० पुं० एकराजा का नाम
गाना, क्रि० वा० कथन, कहना
गामी, वि० सं० पुं० चलने वाला
गारुड़ी, वि० सं० पुं० विषहरनेवाला
गाल, ना० वा० भा० बतूनी
गालव, ना० वा० पुं० सं० एकऋषिका नाम
गालबजाई, क्रि० वि०बकवादकरके
गाहा, ना० वा० प्रा० स्त्री० कथा
गिरा, ना०वा०सं०स्त्री० १ सरस्वती२ कविताई ३ बचन
गिरि, ना० वा० सं० पुं० पहाड़
गिरिजा, ना० वा० सं० स्त्री० पार्वती
गिरिनाथ, ना० वा० सं० पुं०महादेव
गिरिराज, ना० वा० सं० पुं० सुमेरु पर्वत
गिरीश, ना० वा० सं० पुं० १ महादेव २ हिमाचल
गिरिन्दा, ना० वा० भा० पुं० सुमेरु पर्वत
गिलई, वि० भा० पुं० लीलजावे
गीध, ना० वा० भा० पुं० जटायु
गुंजा, ना० वा० सं० स्त्री० घुंघची
गुदरत, क्रि० वि० जनावत
गुन, ना० वा० भा० पुं० गुण १ ज्ञान आदि २ डोरा रस्सी ३ सत्त्व रज तम
गुनहु, ना० वा० १ विचारो २ अपराध गुनाह
गुनज्ञ, वि० भा० पुं० गुणकाजाननेवाला
गुनि, वि० भा० पुं० १ गुणी २ विचार करके
गुनिय, क्रि०वा० विचारना चाहिये
गुरु, ना० वा० सं० पुं० १ उपदेश करने वाला, २ बृहस्पति ३ बड़ा ४ भारी
गुरुजन, ना०वा० सं० पुं० बड़ेलोग
गुसाईं, ना० वा० भा० पुं० स्वामी, संन्यासी
गुहा, ना० वा० भा० स्त्री० १ गुफा २ निषाद
गुहारी, वि० भा० पुं० १ रक्षक, सहायक
गूढ़, वि०सं० कृ० गुप्त, छिपा
गृहादि, ना० वा० सं०पुं० गृहआदि
गृही,ना० वा० सं० पुं० गृहस्थ
गृहीत,वि०सं० पुं० पकड़ा
गे, क्रि० वा० गये
गेह, ना० वा० सं० पुं० घर
गेरू ना० वा० भा० पुं० गेरू

गो, ना० वा० सं० पुं० १ गाय २ बैल, ३ पृथ्वी, ३ इन्द्रिय, ४ प्रास
गोई, वि० भा० स्त्री० छिपी, छिपाया
गोए, वि० पुं० छिपाये
गोचर, वि० भा० नपुं० विषय, जो इन्द्रियसे जानाजाय
गोदावरी, ना० वा० सं० स्त्री० नदी विशेष
गोपद, ना० वा० सं० नपुं० गायकाखुर
गोप्य, वि० सं० कृ० छिपानेके योग्य
गोलक, ना० वा० सं० पुं० चक्षुइन्द्रिय का स्थान
गोविन्द ना० वा० सं० पुं० वेदलभ्य
गौतम, ना० वा० सं० पुं० ऋषिविशेष
गौतमनारी, ना० वा० सं० स्त्री० अहल्या
गौन क्रि० प० गमन, जाना
गौर, गु० वा० भा० पुं० गोरा, सफेद
गौरव, गु० सं० नपुं० बड़ाई
गौरीस, ना० वा० भा० पुं० गौरीश, शिव
गञ्जन, क्रि० वा० नाशकरना
गञ्जा, वि० भा० पुं० नाशकिया
गंभीर, गु० वा० सं० नपुं० गहिरा
ग्रह, ना० वा० सं० पुं० सूर्यआदिग्रह
ग्रहदशा, ना० वा० भा० स्त्री० शनीचरी
ग्रहै, वि० भा० १ पकड़े २ सूंघै
ग्राम, ना० वा० सं० नपुं० १ गवांर २ गांव, समूह

ग्राही, ना० कृ० सं० पुं० संग्रही ग्रहण करनेवाला
ग्रीवा, ना० वा० सं० पुं० गला, कंठ
ग्रीषम, ना० वा० भा० पुं० ग्रीष्म गरमी की ऋतु
ग्रन्थ, ना० वा० सं० पुं० पुस्तक
ग्रन्थि, ना० वा० सं० पुं० गांठ

घ

घट, ना० वा० सं० नपुं० १ घड़ा २ हृदय
घटज, ना० वा० सं० पुं० कुम्भजऋषि, अगस्त्य
घटव, क्रि० वा० करव
घटा, ना० वा० सं० स्त्री० समूह
घटि, ना० वा० भा० पुं० १ घटिया २ कमती
घटिहि, क्रि० वा० १ करेगी २ होगा
घन, ना० वा० सं० नपुं० १ बादल २ घटा ३ लोहेकाघन ४ अद्भुत
घमोइ, ना० वा० भा० पुं० १ भड़भांड़ २ बांस
घरनी, वि० भा० स्त्री० स्त्री, गृहस्थिनी
घवरि, ना० वा० भा० पुं० गुच्छा
घाउ, ना० वा० भा० पुं० चोट घाव
घात, ना० वा० सं० पुं० १ दांवपेच २ घाव चोट
घातिनी, ना० वा० सं० स्त्री० नाश करनेवाली
घालक, ना० वा० भा० पुं० नाश करनेवाला

घाला, वि० भा० पुं० नाश किया, घालना
घालि, क्रि० वि० अस्त्रमारि
घाली, ना० वा० भा० स्त्री० डारी, फेंकी, घालना
घुनाछर, क्रि० वि० घुनकृत अक्षर, लकड़ी में न्याय करके प्रसिद्ध है
घुम्मरहिं, क्रि० वा० नगारेकी आवाजकी नकल
घूमिति, क्रि० वि० घूमा, घूम करके
घृत, ना० वा० सं० नपुं० घी
घ्रान, ना० वा० भा० पुं० घ्राण, नाक

च

चकित, वि० सं० कृ० आश्चर्यित
चक्कवै, ना० वा० भा० पुं० चक्रवर्ती चक्रवर्तीराजा
चक्र, ना० वा० सं० नपुं० १ सुदर्शनचक्र २ पहिया
चख, ना० वा० भा० पुं० चक्षु, आंख
चतुरंग, ना० वा० सं० पुं० सेनाके चार अङ्ग अर्थात्, हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल
चतुरानन, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मा
चपरि, गु० वा० तुरत
चपल, ना० वा० सं० नपुं० चञ्चल
चर, ना० वा० सं० नपुं० १ भक्षण २ चलन, ३ दूत
चरम, ना० वा० सं० नपुं० १ चर्म, चमड़ा, २ अन्त ३ ढाल

चरफराहिं, क्रि० वा० डोलतेहैं, चरफराना, तरफराहिं, विकल
चरनपीठ, ना० वा० भा० पुं०खड़ाऊं
चराचर, ना० वा० सं० पुं० चल, अचल, चैतन्य और जड़
चरित, ना० वा० सं० नपुं० चरित्र, हाल
चरु, ना० वा० सं० पुं० १ खीर २ बरतन
चवइ, क्रि० वा० बहइ, चवना, बहना
चहुंयुग, ना० वा० भा० पुं० चारों-युग, अर्थात् सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग
चाख, ना० वा० भा० पुं० नीलकण्ठ पक्षी
चाका, ना० वा०भा०पुं०चक्र,पहिया
चांकी, ना०वा०भा०स्त्री०रा.शिकोगो-ठदेना, चांकना, छापना,बिजुली
चाड़, ना० वा० भा० पुं० चाह, जोर बिजुली
चाप, ना० वा० सं० नपुं० १ धनुष, २ दाबना
चापन, ना० वा० सं० पुं० चापना, पगचम्पी दाबना
चापी, वि० भा० स्त्री० दबाई
चामर, ना० वा० सं० नपुं० चवँर
चामुण्डा, ना० वा० सं० स्त्री० यो-गिनीभेद

चार, ना०वा०सं०पुं० १ दूत, चुगुल, लबार
चारिपद, ना० वा० भा० पुं० धर्मके चार पांव अर्थात्, सत्य, शौच दान, दया
चारिअवस्था, ना० वा० भा० स्त्री० जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय
चारिभांति,ना०वा० भा०पुं० भोजन, भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य
चारी, सं० वा० भा० स्त्री० १ चार ४, २ चलनेवाला ३ चुगुली
चारु, गु० वा०सं० पुं० सुन्दर
चालति, क्रि० वा० डोलाती, चाल-ना, डोलना
चाहि, क्रि० वा० १ देखकरके २ उ-सकी ओर से चाहना, देखना
चाही, वि०भा०स्त्री० १ चाह २ देखना
चित, ना० वा० नपुं० सं० १ चेतन, ज्ञान २ मन
चितचेता, ना० भा० पुं० सावधान
चितव, क्रि० वा० देखता है, चितव-ना, देखना
चित्रकेतु, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम
चिन्तामनि, ना० वा० भा० पुं० मणि विशेष
चितेरा, ना० वा०भा० पुं० चित्रकार
चिदाकाश, ना० वा० सं० नपुं० चै-तन्य, आकाश, परमात्मा

चिराना, क्रि० वा० पुराना
चिरंजीवी, ना० वा० सं० पुं० मार्क-ण्डेय ऋषि
चीर, ना० वा० सं० नपुं० १ चीरना २ वस्त्र
चुनौती, ना० वा० भा० पुं० तलाक, ईर्षा, धिक्कार
चुम्बत, क्रि० वि० चूमता, छूता
चूड़ाकरन, ना० वा०सं० नपुं० मुंडन
चूड़ामनि, ना० वा० सं० नपुं० चो-टीकी मनि
चेता ना० वा० भा० पुं० चित्त
चेरा, ना० वा० भा० पुं० चाकर, दास
चेरी, ना० वा० भा० स्त्री, दासी
चोखा, ना० वा० भा० स्त्री० १ अ-च्छीवस्तु २ जल्दी
चोप, ना० वा० भा० पुं० उत्साह, उछाह
चौतनी, ना० वा० भा० स्त्री० चौ-गोशियाटोपी
चौथपन, ना० वा० भा० स्त्री० बु-ढ़ौती
चौहट, ना० वा० भा० पुं० चौहट्टा चौरहा
चङ्ग, ना० वा० भा० पुं० गुड्डी, पतङ्ग
चञ्चरीक, ना० वा० भा० भ्रमर, भँवर
चण्ड, ना० वा० पुं० सं० तेजस्वी

चन्दिनी, ना० वा० स्त्री० भा० चांदनी
चन्द्रमौलि ना० वा० सं० पुं० शिव, महादेव
चन्द्रमामुनि ना० वा० सं० पुं० (निशाकरनाम) अत्रिमुनिके पुत्र का नाम
चन्द्रहास, ना० वा० सं० पुं० तरवार
चन्द्रिका, ना० वा० सं० स्त्री० चांदनी

छ

छई, ना० वा० भा० पुं० रोगबिशेष
छऊं, वि० पुं० भा० छः
छत, ना० वा० भा० पुं० क्षत, फोड़ा घाव
छति, ना० वा० भा० स्त्री० हानि
छन्न, वि० सं० कृ० नपुं० ढम्पा
छबि, ना० वा० सं० स्त्री शोभा
छबीले, वि० भा० पुं० सुन्दर
छमा, ना० वा० भा० स्त्री० क्षमा, १ पृथ्वी २ सहना
छमि, क्रि० वि० क्षमाकरके
छरे, वि० भा० पुं० छटे
छत्रक, ना० वा० भा० पुं० भुइँफोर
छत्रबन्धु, ना० वा० सं० पुं० क्षत्री जाति में नीच
छाक, ना० वा० भा० पुं० मतवाला, मत्त
छाछी, ना० वा० स्त्री० भा० मंठा
छाजा, वि० स्त्री० सोहा, छाजना, सोहना
छाया, ना० वा० सं० स्त्री० १ छांह २ अंश
छारा, ना० वा० भा० स्त्री० राख
छाला, ना० वा० स्त्री० चर्म, चमड़ा
छांड़ा, वि० पुं० भा० त्याग, छोड़ा, राख
छिति, ना० वा० स्त्री० भा० क्षिति, पृथ्वी
छिद्र, ना० वा० पुं० भा० छेद
छीजहिं, क्रि० वि० घटते, छीजना घटना
छीना, वि० पुं० भा० क्षीए, दूबर, रहित
छीने, वि० भा० पुं० काटे
छीर, ना० वा० नपुं० भा० क्षीर, दूध
छुद्र, ना० वा० भा० नपुं० क्षुद्र, छोट, तुच्छ
छुधित, वि० कृ० भा० क्षुधित, भूखा
छुहे, वि० भा० पुं० चित्रित
छूछ, ना० वा० पुं० भा० खाली
छेका, ना० वा० पुं० भा० घेरा, रोकना, छेकना
छेमकरी, ना० वा० भा० पुं० पक्षी विशेष
छेमा, ना० वा० भा० पुं० क्षेम, सुख
छेत्र, ना० वा० भा० पुं० क्षेत्र, भूमि, खेत
छैल, ना० वा० भा पुं० बांका
छोनिप, ना० वा० पुं० भा० क्षोणिप, राजा
छोभा, ना० वा० भा० स्त्री० क्षोभ, घबड़ाहट
छाहां, ना० वा० भा० स्त्री० परिछाहीं
छन्द, ना० वा० सं० नपुं० १ गायत्री आदि २ रचना ३ स्वतन्त्र

ज

जग, ना० वा० सं० पुं० जंगम २ संसार
जगजोनी, ना० वा० भा० पुं० जग योनि, ब्रह्मा
जगत, ना० वा० भा० पुं० पृथ्वी
जगदीश, ना० वा० भा० पुं० जगदीश, १ राजा २ ईश्वर
जगदम्बा, ना० वा० भा० स्त्री० जगतकी माता
जजाति, ना० वा० सं० पुं० ययाति, एकराजाका नाम
जटिल, वि० सं० पुं० जटाधारी
जठर, ना० वा० पुं० भा० १ बूढ़ा २ पेट
जठरी, ना० वा० स्त्री० भा० बड़ीबूढ़ी
जड़, ना० वा० पुं० सं० १ मूढ़ २ पर्वत आदि, निर्जीव
जत, प्र० वा० १ जितना २ यत्न, जतन
जतन, ना० वा० भा० पुं० यत्न, रक्षा, उपाय
जती, ना० वा० पुं० भा० यती, संन्यासी
जथा, अ० यथा, जैसे
जथाथित, यथास्थित, जैसा पहिले, जैसा था

जथोचित, क्रि० वि० यथोचित, यथायोग्य
जनक, ना० वा० सं० पुं० १ पिता २ सीता के पिताका नाम
जनकौरा, ना० वा० भा० सं० जनक, जनकसम्बन्धी
जनयित्री, वि०स्त्री०सं०जननी,माता
जनि, नि० अ० नहीं, मत
जनित, वि० सं० कृ० उत्पन्न
जनेत, ना० वा० भा० पुं० बरात, जनता
जनेस, ना० वा० भा० पुं० जनेश, राजा
जनेषु, अ० वा० मनुष्यों में
जपन्ति, क्रि० वा० सं० जपते हैं
जपामि, क्रि० वा० सं० मैं जपताहूं
जम, ना० वा० सं० पुं० १ यम, यमराज २ अहिंसा आदि
जमी, गु० वा० सं० पुं० यमी, संयमी
जमुन, ना० वा० भा० स्त्री० यमुना, यमुना नदी
जयति, क्रि० वा० जय होताहै
जयेउ, क० वा० जीता, विजयकिया
जयन्त, ना० वा० सं० पुं० जयन्ता, इन्द्रके बेटेका नाम
जर, ना० वा० भा० पुं० जुर, ज्वर
जरि, ना० वा० भा० जड़, मूल
जर्जर, ना० वा० सं० पुं० चीरेफारे,

झांझर
जलअलि, ना० वा० भा०पुं० जलभौंरा
जलकुक्कुट, ना० वा० भा० पुं० जलमुरगा मुर्गाबी
जलचर, ना० वा० सं० पुं० मछली आदि
जलज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
जलजात ना०वा०सं० नपुं० कमल
जलजान, ना० वा० प्रा० नपुं० जलयान, नाव, जहाज
जलद, ना० वा० सं० पुं० मेघ, बादल
जलधर, ना० वा० सं० मेघ, बादल
जलधि, ना०वा० सं० पुं० समुद्र
जलमल, ना० वा० सं० नपुं० फेन आदि
जलरासी, ना० वा० भा० पुं० जलराशि, समुद्र
जलरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल
जलविहंग, ना० वा० सं० पुं० जलपक्षी
जलासय, ना० वा० प्रा० पुं० जलाशय, तलाव
जलन्धर, ना० वा० सं० पुं० दैत्यविशेष
जल्पक, ना० वा० सं० पुं० बोलने वाला बकनेवाला
जल्पत, क्रि० वा० बकता है

जल्पसि, क्रि० वा० तू बकताहै, जलपना
जल्पहिं, क्रि०वा०कहते हैं,जलपना
जवनिका, ना० वा० सं० स्त्री० १ कनात २ मैल
जस, ना० वा० भा० पुं० १ जैसा, यश ,सुकीर्त्ति
जसोमति, ना० वा० भा० स्त्री० यशोमति,यशोदा,जसोदा
जहि, वि० क्रि० जेहि, जिसको, त्यागो, छोड़ो
जक्षपति, ना० वा० भा० पुं० यक्षपति,कुबेर
जज्ञउपबीत, ना० वा० भा० पुं० यज्ञोपवीत, जनेऊ
जाई, ना० वा० भा० स्त्री० १ बेटी २ पैदाभई
जाग, ना० वा० सं० पुं० यज्ञ
जागी, वि० स्त्री० भा० जाहिर,प्रगट
जाचक, ना० वा० भा० पुं० याचक, मंगन
जाचत, क्रि० वा० मांगताहै
जाचा, वि०भा०पुं० मांगा, जांचना, मांगना
जातकर्म, ना०वा० सं० नपुं० लड़के के जन्मसमय की नान्दीश्राद्ध आदि
जातना, ना० वा० सं० पुं०यातना, पीड़ा, तीव्रवेदना

जातरूप, ना० वा० सं० पुं० सोना, सुवर्ण
जातुधान, ना० वा० सं० पुं० राक्षस
जान, ना० वा० भा० पुं० १ ज्ञान, २ जीव, ३ सवारी, यान
जानपनी, ना० वा० भा० पुं० स्वरूपज्ञान
जानी, गु० वा० भा० पुं० १ ज्ञानी २ स्त्री
जानु, ना० वा० सं० नपुं० घुटना
जापक, ना० वा० सं० पुं० जप करनेवाला
जाम, ना० वा० प्रा० पुं० याम, पहर
जामाता, ना० वा० सं० पुं० दामाद
जामिक, ना० वा० प्रा० पुं० यामिक, पाहरू, पहरुआ, चौकीदार
जामिन, ना० वा० प्रा० स्त्री० यामिनी, रात्रि, रात
जाय, अ० बृथा
जाया, ना० वा० स्त्री० सं० १ स्त्री २ उत्पन्न
जारा, वि० भा० पुं० १ जलाया, जारना २ समूह
जाल, ना० वा० भा० पुं० १ समूह २ झरोखा ३ फन्दा
जावक, ना० वा० प्रा० पुं० यावक, महावर
जावाली, ना० वा० सं० पुं० एक ऋषिका नाम
जिनस, जा० वा० भा० पुं० जाति
जिमि, अ० जैसे
जियाये, वि० वा० पुं० भा० पाले, जियाना, पालना
जीव, आ० वा० १ जीते रही २ जीवात्मा
जीवन, ना० वा० सं० नपुं० १ आजीविका, रोजी २ जीना ३ जल, पानी
जीह, ना० वा० भा० स्त्री० जिह्वा, जीभ
जुग, ना० वा० भा० पुं० युग, २ सत्ययुग आदि
जुगल, ना० वा० भा० पुं० १ युगल, दो
जुगविधि, ना० वा० भा० पुं० युग विधि, शीत उष्ण दोविधिका ज्वर
जुझारा, वि० पुं० लड़वैया, लड़ने वाला
जुटत, क्रि० वा० १ लड़ते हैं, जुटना २ लड़ना ३ एकट्ठा होना
जुड़ान, वि० शीतल भये, ठंढे भये
जुवती, ना० वा० भा० स्त्री० युवति जवान स्त्री
जुवराज, ना० वा० भा० पुं० युवराज, कुंवर, नायब, राज्याधिकारी
जुवा, ना० वा० भा० पुं० युवा, जवान
जुवान, ना० वा० भा० पुं० जवानपुरुष
जुवारी, ना० वा० स्त्री० भा० जुवारी
जूझा, ना० वा० भा० पुं० लड़ाई, युद्ध
जूथ, ना० वा० भा० पुं० यूथ, समूह
जूथप, ना० वा० भा० पुं० यूथप, सेनापति
जून, ना० वा० भा० पुं० १ पुराना २ समय
जूरी, ना० वा० भा० पुं० १ समूह २ जाड़े करके, जूरना, जोड़ना
जूहा, ना० वा० भा० पुं० यूथ, समूह
जेईं, क० वा० भोजनकिया, जेवना, खाना
जोई, वि० भा० स्त्री० देखी, जोवना
जोऊ, क्रि० वा० देखना, जोवना
जोग, ना० वा० भा० पुं० १ योग अष्टांग २ योग्य ३ मिलाप, सम्बन्ध
जोगवत, ना० वा० भा० पुं० परिखत, खबरदारी करना, जतन करना
जोजन, ना० वा० भा० पुं० योजन, चारकोस
जोड़ा, ना० वा० भा० पुं० जोड़ी, दोनों
जोती, ना० वा० सं० स्त्री० १ ज्योति, प्रकाश २ सूर्य
जोनी, ना० वा० भा० स्त्री० १ योनि, कारण २ जाति
जोवा, वि० भा० पुं० देखा, जोवना, देखना
जोपिता, ना० वा० भा० स्त्री योपित, स्त्री
जोहारे, ना० वा० पुं० वि० भा० प्रणाम किया, जोहारना, प्रणाम करना
जोही, क्रि० वि० देखकरके, खोजकरके

जंगम, ना०वा० सं० पुं०चलनेवाला
जन्तु, ना० वा० सं० पुं० क्षुद्रजीव
जन्त्रित, क० वा० यन्त्रित, ताला देदिया
जन्त्री, क० वा० वश किया, ताला दे दिया
जम्बु, ना० वा० सं० पुं० जामुन
जम्बुक, ना० वा० सं० पुं० सियार, शृगाल
ज्याये, वि० व० भा० पुं० पाले, ज्याना, पालना

झ

झगुलिया, ना० वा० भा० पुं० चोलना, लड़कोंका कुर्ता
झटति, अ० झटिति, जलदी
झषकेतु, ना० वा० सं० पुं० कामदेव
झारी, ना० वा० भा० पुं० समूह
झापा, क्रि० वा० झंखना
झोटिंग, ना० वा० भा० पुं० प्रेतभेद
झई, ना० वा० भा० पुं० तिरमिराना, आंख के आगे अँधेरा
झंपेउ, ना० वा० भा० पुं० ढंपा, झंपना, ढपना
झाई, ना० वा० भा० स्त्री० परछाहीं, तिरमिराना
झोटी, ना० वा० स्त्री० भा० चोटी

ट

टकोर, ना० वा० सं० स्त्री० ध्वनि, धुनि
टिटिभ, ना० वा० सं० पुं० टिटिहरी, पक्षी
टेई, क० वा० चोखा किया, तीखी किया, टेवना, चोखा करना
टेक, ना० वा० पुं० भा० १ हठ २ अवलम्ब
टेकी, ना० वा० भा० स्त्री० १ हठ करके २ निश्चययुत ३ थापी
टेव, ना० वा० भा० पुं० बान, आदत
टेर, ना० वा० भा० पुं० पुकार

ठ

ठकुर, ना० वा० भा० पुं० ठाकुर
ठट्ठा, ना० वा० सं० पुं० समूह
ठठकि, क्रि० वि० रुक करके, ठठकना, रुकना
ठयेउ, क० वा० किया०, ठाना
ठवनि, ना० वा० भा० पुं० चाल उठने की रीति
ठाठ, ना० वा० पुं० भा० १ रचना २ समूह
ठाना, क्रि० वा० १ किया २ निश्चय, ठानना
ठाहरु, ना० वा० भा० पुं० जगह, ठहर
ठीका, ना० वा० भा० पुं० निश्चय, ठीक
ठांऊ, ना० वा० पुं० भा० ठांव, घर, जगह

ड

डगै, क्रि० वा० हिलना
डमरुआ, ना० वा० भा० पुं० घुटने की गांठमें का रोग, गठिया
डसि, क्रि० वि० काटकरके, डसना, काटना
डहकि, क्रि० वि० ठगकरके, डहकना, ठगना
डाढा, ना० वा० भा० पुं० आग
डाढे, वि० पुं० भा० जरे
डाबर, ना० वा० भा० पुं० गड़हा
डासन, ना० वा० पुं० भा० बिछौना, दसौना
डासी, क्रि० वि० बिछाकरके
डिंडिमी, ना०वा० पुं० भा० एक प्रकार का बाजा
डीठा, क० वा० देखा, दृष्ट
डीठी, क० वा० वि० दृष्टि, देखी
डेवढ़, प्र० वा० डेवढ़ा
डोल, ना०वा० पुं० भा० १ डोलना २ तालाब ३ हिंडोला
डोली, वि० स्त्री० भा० गई, डोलना

ढ

ढरी, क्रि० वा० खोजी, ढढोरना खोजना
ढरमनी, वि० स्त्री० भा० लुढुकगई, ढनमनाना, लुढुकना
ढाबर, ना० वा० मैला
ढंग, अ० समीप
ढेक, ना० वा० भा० पुं० सारसपक्षी
ढोटा, ना० वा० पुं० भा० बेटा

त

तर्जनी, ना० वा० सं० स्त्री० अंगूठे के पासकी अंगुली

तज्ञ, ना० वा० सं० पुं० स्वरूपज्ञाता (तद, वह, ज्ञ, जाननेवाला)

तट, ना० वा० सं० नपुं० तीर, किनारा, निकट

तड़ाग, ना० वा० पुं० भा० तलाव

तड़ित, ना० वा० सं० स्त्री० ताड़ित, बिजुली

तत्त्व, ना० वा० सं०नपुं० १ सारबस्तु २ प्रकृति आदि

तथा, अव्यय तैसे

तथापि, अव्यय तौभी

तदपि, अव्यय तौभी

तन, अ० ओर

तनकाऊ, अ० थोड़ाभी

तनय ना० वा० पुं० सं० पुत्र, बेटा

तनया, ना० वा० सं० स्त्री० पुत्रीबेटी

तनु, ना० वा० सं० पुं० १ शरीर २ अल्प, थोड़ा ३ विस्तार

तनुजा, ना० वा० सं० स्त्री० बेटी

तनोतु, आ० वा० विस्तारकरे, फैलावे

तनोरुह, ना० वा० सं० नपुं० रोम, रोवां, जो शरीर में हुआ

तपोधन, ना० वा० सं० पुं० तपस्वी

तम, ना० वा० सं० नपुं० १ अज्ञान २ अंधेरा ३ तमोगुण ४ अत्यंत

तमकि, क्रि० वि० सरोष हो करके, तमककरके, तमकना

तमारि, ना०वा० सं० पुं० सूर्य

तमाल, ना०वा०सं०नपुं०वृक्षविशेष

तमी, ना० वा०स्त्री० सं० रात्रि, रात

तमीचर, ना० वा० सं० पुं० राक्षस

तर, ना० वा० सं० पुं० १ तल, तरे २ अत्यन्त

तरक, ना० वा०पुं० भा० तर्क विचार

तरकेउ, क्रि० वा० कूदा, तरकना, कूदना

तरजत, क्रि० वा० तड़पता, तरजना, तड़पना

तरजन, क्रि० वा० झिझकारना

तरजा, क०वा०कूदा, तरजना, कूदना

तरनतारन, ना० वा० सं० पुं० जो आप तरै और दूसरोंको तारै

तरनि, ना० वा० भा० पुं० १ तरणि, सूर्य २ नाव

तरपहिं, क्रि० वा० तड़पते हैं

तरल, ना० वा० सं० पुं० १ चंचल २ तीक्ष्ण, चोखा

तरु, ना० वा० सं० पुं०, वृक्ष पेड़

तरुन, ना० वा० सं० पुं० तरुण, जवान

तरुनाई, भा० वा० भा० स्त्री० तारुण्य, जवानी

तरुनी, भा० वा० भा० स्त्री० तरुणी, जवान स्त्री

तरंग, ना० वा० पुं० सं० लहर

तरंगी, ना० वा० सं० पुं० बहुरंगी, उच्छाहवाले

तरंगिनि, ना० वा० स्त्री० सं० तरंगिनी, नदी

ताग, ना० वा० भा०पुं० डोरा, तागा

ताजी, ना०वा०भा०पुं० घोड़ाविशेष

ताटंक, ना० वा० पुं० भा० तरकी, विरिया, करनफूल

ताड़त, क्रि० वि० पीटता, मारता

तात, ना० वा० सं० पुं० १ पुत्र २ पिता ३ गरम, तप्त ४ भाई ५ सखा ६ प्रिय

तापस, ना० वा० सं० पुं० तपस्वी

तापे, ना० वा०भा०पुं० तपे, तापना, तपना

तामरस, ना० वा० सं० नपुं० कमल

तामस, ना० वा० सं० पुं० तमोगुणी

तारक० ना० वा० सं० स्त्री० १ मन्त्र २ दैत्य विशेष ३ तारनेवाला ४ तारा, सितारा ५ पुतली, आंख का तारा

तारा ना० वा०सं० स्त्री० १ बालिकी स्त्री का नाम २ तरई

ताल, ना० वा० भा० पुं० १ तलाव २ वृक्ष विशेष ३ ताड़ी बजाना

तालू, ना० वा० भा० पुं० ताल वृक्ष

तिमिर, ना०वा०सं०नपुं० अन्धकार

तिमुहानी, ना० वा० भा० स्त्री० त्रिमुख, जहांतीननदीमिलती है

तिय, ना० वा० स्त्री० भा० स्त्री, मेहरारू
तिरहुति, ना० वा० भा० पुं० एक देशकानाम
तिलक,ना० वा० सं० नपुं० १ टीका २ श्रेष्ठ
तिष्ठे, क्रि० रहे, तिष्ठना, रहना, (सं० स्था०)
तिहुंलोक, ना० वा० भा० पुं० तीनोंलोक अर्थात् स्वर्ग,मृत्युलोक, पाताल
तीछे, वि० वा० तीक्ष्ण, चोखा, तेज
तीनकाल, ना० वा० भा० पुं० भूत, भविष्यत, वर्त्तमान
तीरथपति, ना०वा० पुं० सं० तीर्थपति, प्रयाग
तीरथराज, ना० वा० सं० पुं० तीर्थराज, प्रयाग, इलाहाबाद
तीव्र, ना० वा० सं० पुं० तीक्ष्ण
तुभ्यं,स० ना० पुं० सं० तुम्हारेलिये तुमको
तुरग, ना० वा० पुं० सं० घोड़ा
तुरई, ना० वा० भा० पुं० १ तोसक २ वेगसे ३ तोड़ करके
तुला, ना० वा० भा० स्त्री० तराज़ू
तुषार,ना० वा०भा० पुं०तुषार,पाला
तुहिन, ना० वा० सं० पुं० पाला
तूनीर, ना० वा० भा० पुं० तूणीर, तरकश
तूरी, ना० वा० भा० पुं० तुल्य
तूल, ना० वा० सं० पुं० १ रुई २ तुल्य, बराबर
तूंबरी, ना० वा० भा० स्त्री० तुवड़ी
तृजग, ना० वा० भा० पुं० तिर्यंच पक्षी आदि
तृन, ना० वा०भा०पुं०तृण,तिनका
तृषित, वि० प्यासा
ते, स०ना०वा०१ वे २ तेरा ३ तुमको
तेज, ना०वा०भा०पुं०तेजस, प्रताप, आंच
तेति, सं०ना०वि०ते, अति,वे, बहुत
तोप्यो, वि० तोपा, ढांपा, तोपन, ढांपना
तोमर, ना० वा० सं० पुं० १ शस्त्र विशेष २ एक प्रकारकाछन्द
तोरावति, ना०वा० भा० स्त्री० त्वरावती, वेगवती
तोष, ना० वा०सं० पुं० संतोष, तृप्ति
तोषये, संप्रदान० प्रसन्नता के लिये
त्वच, ना० वा० बकला, त्वचा, स्पर्श की इन्द्री
त्वदीय, वि० तुम्हारा, तेरा
त्वदंघ्र, वि० तुम्हारा चरण

थ

थकित, क०वा० पुं० भा० थकाहुआ
थल, ना०वा० भा० पुं० स्थल, भूमि, स्थान
थलचर, ना० वा०भा० पुं० स्थलचर, थलचारी मनुष्य आदि
थाना,ना०वा०भा०पुं०स्थान,ठिकाना
थिति, ना०वा० भा० स्त्री० स्थिति,१ ठहराव २ पालन
थीरा, ना०वा०स्त्री०भा०अचल, थिर

द

द, ना० वा० सं०पुं० दाता,देनेवाला
दच्छ, गु०वा०सं०पुं०दक्ष१प्रजापति २ चतुर, निपुण
दच्छसुत, ना० वा० सं० पुं० प्रचेता
दच्छसुता, ना० वा० सं० स्त्री० सती
दत्त, क० वा० दिया गया
दधि, ना० वा० सं० पुं० दही
दधीचि, ना० वा० सं० पुं० दधीच एक ऋषिकानाम
दनुज, ना०वा०सं०नपुं० दैत्य,दानव
दम, ना० वा० सं० पुं० इन्द्रियों का रोकना
दमक ना० वा० पुं० भा० चमक, दमकना
दमनीय, वि० सं० पुं०१ तोड़नेवाला २ दमन के योग्य
दमन, वि०भा० पुं० नाश, नाशकरने वाला
दम्पति, ना० वा० पुं० सं० स्त्रीपुरुष, जोड़ा
दर, ना० वा० सं० पुं० १ शंख २भय, डर ३ छेद
दरबार ना० वा० भा० पुं० सभा

दरस, ना० वा० भा० पुं० १ रूप २ दर्श, दर्शन

दरसी, वि० पुं० भा० दर्शी देखनेवाला

दर्प, ना० वा० पुं० भा० दर्प, अभिमान

दर्भ, ना० वा० सं० पुं० कुश, कुसा, एक प्रकार की घास

दल, ना० वा० सं० नपुं० १ नाश २ पत्ता ३ सेना ४ भाग

दलकि, क्रि० वि० दरकि, फटना, कूद उठना

दलमले, वि० ब० पीसडाले, दलमलना

दलन, ना० वा० सं० पुं० नाश

दलित, वि० सं० कृ० टूटा

दव, ना० वा० सं० नपुं० वनकीआग

दवारि, ना० वा० सं० पुं० दावानल, वन की आग

दसन, ना० वा० पुं० भा० दशन, दांत

दहन, ना० वा० सं० पुं० आग, अग्नि, जलानेवाला, जलाना

दा, ना० वा० सं० स्त्री० देनेवाली

दाड़िम, ना० वा० सं० पुं० अनार

दाता, ना० वा० सं० पुं० देनेवाला

दातार, ना० वा० सं० पुं० दातृ, देनेवाला

दादुर, ना० वा० सं० पुं० दर्दुर, मेंडक, मेंढ़ुका

दाप, ना० वा० भा० पुं० दर्प १ बल २ गर्व, अभिमान

दाम, ना० वा० भा० पुं० १ माला २ रस्सी ३ रुपया

दामिनि, ना० वा० भा० स्त्री० दामिनी, बिजुली

दायक, ना० वा० सं० पुं० देनेवाला

दारन, ना० वा० पुं० भा० दारुण फाड़ना

दारय, वि० क्रि० नाशकरो, फाड़ो

दारा, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री

दारिद, भा० वा० पुं० भा० दरिद्रता दरिद्र

दारिका, ना० वा० स्त्री० सं० लड़की, कन्या

दारु, ना० वा० सं० स्त्री० लकड़ी, काठ

दारुन, ना० वा० भा० पुं० दारुण, घोर

दारुनारि ना० वा० भा० स्त्री० कठपुतली

दावन, ना० वा० सं० पुं० नाश

दाह, ना० वा० सं० पुं० जरना, जलाना

दियासे, ना० वा० पुं० भा० दीपक, चिराग

दिगम्बर, ना० वा० सं० पुं० नंगा, वस्त्रहीन

दितिसुत, ना० वा० सं० पुं० हिरण्याक्ष

दिनकर, ना० वा० सं० पुं० सूर्य

दिनदानी, ना० वा० सं० पुं० अति उदार, दिन दिन देनेवाला

दिनमनि, ना० वा० पुं० दिनमणि, सूर्य

दिनेस, ना० वा० भा० पुं० दिनेश, सूर्य

दिसिप, ना० वा० भा० पुं० इन्द्र, कुवेर आदि

दिवस, ना० वा० सं० पुं० दिन

दिव्यतन, ना० वा० भा० स्त्री० दिव्यतनु अप्सरा

दिव्यदृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० अलौकिकज्ञान

दिसि, ना० वा० भा० स्त्री० दिशा, ओर

दिसिराज, ना० वा० भा० पुं० इन्द्र कुवेर आदि

दीछा, ना० वा० भा० स्त्री० दीक्षा, मंत्रोपदेश

दीनता, भा० वा० सं० स्त्री० गरीबी

दीसा, वि० पुं० देखा, दीसना

दुकूल, ना० वा० सं० नपुं० वस्त्र, पट, रेशमी कपड़ा

दुर्ग, ना० वा० सं० पुं० १ गढ़, किला २ अगम

दुर्गम, ना० वा० सं० पुं० अजय,

दुर्घट, ना० वा० सं० पुं० अगम, कठिन

दुनी, ना० वा० भा० पुं० दुनिया, संसार

दुर्बचन, ना० वा० सं० नपुं० दुष्टवचन गाली

दुर्बाद, ना० वा० सं० पुं० दुर्वाद, दुष्ट वचन गाली

दुर्बासा, ना० वा० सं० पुं० दुर्वासा

एकऋषिका नाम
दुरंत, ना० वा० पुं० सं० अंत बिना
दुरतिक्रम,ना०वा०वा०पुं०सं० दुस्तर
दुराधर्ष, ना० वा० सं० पुं० जो शत्रु से नहीं दबता
दुराराध्य,वि० दुःखसे सेवनेके योग्य
दुराव, ना० वा० भा० पुं० छिपाना, कपट
दुरासा,ना० वा०सं०स्त्री०नीच आश
दुरित, ना० वा० सं० पुं० १ पाप, २ छिपा
दुसह, भा० वा० सं०नपुं०दुस्सह,जो सहनेके योग्य नहीं
दुष्टजन्तु, ना०वा०सं० पुं०सर्पआदि
दुहाई, ना० वा० भा० स्त्री० १ द्रोह २ सौगंद, कसम
दुहि, ना० वा० भा० स्त्री० कामना
दुंदुभि, ना० वा० भा० पुं० १ नगारा, २ एक दैत्यका नाम
दूत, ना० वा० पुं० सं० हलकारा
दूना, प्रमा० वा० दुगुना, द्विगुण
दूधमुख, ना० वा० भा० पुं० बच्चा, लड़का
दूषन, ना० वा० भा० पुं० १ एक राक्षस का नाम २ दोष
दृग, ना० वा० सं० पुं० आंख
दृगंचल, ना० वा० सं० पुं० पलक
देव, ना० वा० सं० पुं० १ देओ २ देवता ३ मेघ ४ राजा

देवक, ना० वा० सं० पुं० देवका
देवतरु,ना०वा० सं० पुं० कल्पवृक्ष
देवधुनि, ना० वा० सं० स्त्री० गंगा
देवऋषि, ना० वा० सं० पुं० नारद
देवसर,ना०वा०सं०पुं०मानस आदि
देश,ना०वा०सं०पुं०देश,स्थानमुल्क
दैअहिं, क्रि० भा० का० दैवको, भाग्यको
द्वैत, ना० वा० सं० पुं० भेद मैं, तूं
दोष, ना० वा० सं० पुं० काम क्रोध आदि
दंड, ना० वा० सं० पुं० १ लकड़ी २ राजदंड, सजा ३ घड़ी
दंडक, ना० वा० सं० पुं० १ राजा, २ राजा नाम विशेष
दंभ, ना० वा० सं० पुं० पाखण्ड
दंस, ना० वा० सं० पुं० बनमाछी
द्रवी, क्रि० वा० कृपा करो, वाकर, द्रवना, टेघरना
द्रुम, ना० वा० सं० पुं० पेड़, वृक्ष
द्रव्य, ना० वा० सं० नपुं० वस्तु
द्वंद्व,ना०वा०सं०पुं० दो, रागदोषादि
द्वादस, सा० वा० बारह १२
द्विजराज, ना० वा० सं० पुं० द्विजराज, चन्द्रमा

ध

धन,ना०वा०सं० नपुं० १ द्रव्य २ धन्य
धनद, ना० वा० सं० पुं० कुबेर
धनिक, वि० पुं० धनी

धनी, वि० सं० पुं० स्वामी, धनवान, दौलतमन्द
धनु, ना० वा० सं० नपुं० धनुष
धनेसा, ना० वा०सं०पुं०धनेश,कुबेर
धन्या,ना०वा०सं०स्त्री० नदी बिशेष
धन्वी, वि० पुं० सं० धनुषधारी
धर्मध्वज,ना० वा० पुं० सं० पाषण्डी
धर, ना० वा०सं० पुं० १ धड़ २ भूमि
धरनी, ना० वा० भा० स्त्री० पृथ्वी
धरषि, क्रि० वि० दबाकर, धरषना दबाना
धरा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
धरासुर, ना० वा० सं० पुं० विप्र, ब्राह्मण
धवल,ना० वा०सं० पुं० श्वेत,सफेद
धाता, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मा
धाम, ना० वा० सं० नपुं० १ घर २ तेज ३ बैकुण्ठादि
धारि,ना० वा०भा० स्त्री०सेना,फौज
धारी, ना० वा० भा० स्त्री० १ सेना, २ धरनेवाला
धावन,ना० वा०सं० पुं०दूत,हरकारा
धिग, अ० धिक, धिक्कार
धुआं, ना० वा० भा० पुं० १ मुरदा २ मरण ३ धूम्र
धुनि, क्रि० वि० ना० वा० सं० पुं० १ धुनकरके कम्पा करके २ शब्द, आवाज ३ व्यंग,धुनना,कम्पाना
धुर, ना०वा०सं० पुं०१बोझा २ मुख्य

धुरीन, ना० वा० सं० पुं० बोझाधरने वाला

धूति, क्रि० वि० ठग करके, धूर्त्तता करके, धूतना, छलना

धूमकेतु, ना० वा० भा० पुं० धूम्रकेतु, अग्नि, आग

धृति, ना० वा० स्त्री० सं० धीरता, धीरज

धेनु, ना० वा० सं० स्त्री० गैया, गौ

धेनुमति, ना० वा० सं० स्त्री० गोमती नदी

धोरी, ना० वा० भा० पुं० मुख्यबैल

धंधक, ना० वा० भा० पुं० धंधा, काम

धौं, अ० क्रि० याकि

ध्रुव ना० वा० पुं० सं० १ ध्रुव, एक भक्त का नाम २ निश्चय, ३ एक ताराका नाम

न

नई, ना० वा० स्त्री० भा० १नदी २नवीन

नए, क० वा० १ झुके, २नवीन, नया

नकुल, ना० वा० सं० पुं० नेउर, नेवला

नक्र, ना० वा० सं० पुं० नाक एक प्रकार का जलजन्तु

नटत, क्रि० वा० नाचताहै

नतरु, नि० अ० नहीं तो

नति ना० वा० सं० पुं० नवना, प्रणाम

नफीरी, ना० वा० भा० पुं० सहनाई, एक प्रकार का बाजा

नभग, ना० वा० सं० पुं० पक्षी

नभगेस, ना० वा० सं० पुं० नभगेश, गरुड़

नभचर, ना० वा० सं० पुं० पक्षी आदि

नमत, क्रि० वा० नमति, नमस्कार करताहै

नमामहे, क्रि० वा० हमलोग प्रणाम करते हैं

नमामी, क्रि० नमामि, प्रणामकरताहूं

नमित, क० वा० नवाया, नीचेकिया

नम्र, ना० वा० सं० पुं० झुका

नय, ना० वा० सं० पुं० नीति, धर्म

नयन, ना० वा० सं० पुं० आंख

नयनपट, ना० वा० सं० पुं० पलक

नरहरि, ना० वा० सं० पुं० १नरहरिदास तुलसीदास के गुरूका नाम २ नृसिंह

नर्तक, ना० वा० पुं० सं० नट, नचनिया

नर्तकी, ना० वा० सं० स्त्री० नाटिन

नलिन, ना० वा० सं० नपुं० कमल

नर्मद, ना० वा० सं० पुं० सुखद

नलिनी, ना० वा० सं० स्त्री० कुमुदिनी, कमलिनी

नव० ना० वा० सं० पुं० नया, नूतन

नवजल, ना० वा० पुं० सं० वर्षा का पानी

नवधा, प्र० वा० नव प्रकार का

नवनीता, ना० वा० सं० पुं० नवनीत, मक्खन

नवभक्ति, ना० वा० सं० स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति, (टिप्पनी में देखो)

नवरस, ना० वा० सं० पुं० शृंगारादि नवरस

नवल, ना० वा० सं० पुं० १ नया २ जवान

नवसप्त, ना० वा० सं पुं० नव और सात अर्थात् सोलह शृंगार

नस, ना० वा० भा० स्त्री० नाड़ी

नसाय, ना० वा० भा० पुं० बिगड़े, नाशहो, नसाना, बिगड़ना

नसावा, क० वा० नाश किया, नसावना, नाश करना

नस्वर, ना० वा० पुं० भा० नश्वर, विनाशी, नाश होनेवाला

नखत, ना० वा० पुं० भा० नक्षत्र

नहरुआ, ना० वा० भा० पुं० जांघमें सूतसारोग जो निकलताहै

नहारु, ना० वा० भा० पुं० १ चाम का टुकड़ा, २ व्याघ्र, बाघ

नाइ, क्रि० वि० नवा करके, झुक के

नाईं, सा० वा० क्रि० वि० सदृश, की तरह

नाऊ, ना० वा० भा० पुं० नाम

नाक, ना० वा० सं० पुं० १ स्वर्ग २ नासिका

नाकनटी, ना० वा सं० स्त्री० अप्सरा,

नाग, ना० वा० सं० पुं० १हाथी २ सांप

नागर, ना० वा भा० पुं० चतुर
नागरिपु, ना० वा० सं० पुं० सिंह
नाठी, वि० स्त्री० नष्टहुई
नाद, ना०वा०सं०पुं० शब्द, आवाज
नाना, अ० अनेक
नानाकार, ना० वा० सं० पुं० वत्सदंत, क्षुरप्र, अर्धचन्द्रादि भेदवाले अनेक आकारके
नामी, ना० वा०सं० पुं० नामवाला
नामानी, ना० वा० सं० पु० नाम का समूह
नायक, ना०वा०सं०पुं०स्वामी, सर्दार
नयो, वि० पुं० भा० झुकाया
नारकी, ना० वा० सं० पुं० नारकीय, नरकवासी
नाराच, ना०वा० सं० पुं० बाण, तीर
नाल, ना० वा० सं० नपुं० डांड़ी
नावरि, ना० वा० भा० पुं० नाव घुमाना
नाह, ना० वा० ग्रा० पुं० नाथ, पति, मालिक
निकर, गु० वा० सं० नपुं० समूह
निकाई, भा० वा० स्त्री० भा० भलाई, शोभा
निकाम, गु० वा० सं० पुं० १ अति, बहुत २ कामनारहित
निकाय, ना० वा० सं० पुं० समूह
निकेत, ना० वा० सं० पुं० घर
निकेतन, ना० वा० सं० नपुं० घर

निकंद, ना० वा० सं० पुं० नाश
निकन्दन, ना० वा० सं० पुं० १ नाश, २ नाश करनेवाला
निगम, ना० वा० सं० पुं० वेद
निगूढ़ा, वि० सं० स्त्री० अतिगुप्त, बहुत छिपा
निग्रह, ना०वा०सं० नपुं०१रोष२ दंड
निघटत, क्रि०वि० अति कमती होता
निज, ना० वा० सं० नपुं० १ अपना २ उत्कृष्ट
निजगति० ना० वा० सं० पुं० अपनी गति
निजतंत्र, ना० वा० सं० पुं० स्वतंत्र
निजधर्म, ना० वा०सं० पुं० मुख्यधर्म
निजानन्द, ना० वा० सं० पुं० स्वरूपानन्द
निजसुख, ना०वा०सं०पुं०आत्मसुख
निजसंधि, ना० वा० सं० पुं० १ अपना छिद्र २ अवसर
नित, ना० वा० भा० पुं० १ सदा २ निमित्त, वास्ते
नित्य, ना० वा० सं० नपुं० १ सदा २ नित्यकर्म जैसे संध्या आदि
निदान, ना० वा० सं० नपुं० १ अन्त २ कारण
निंदरि, क्रि० वि० निरादर करके
निधन, ना० वा० सं० पुं० मृत्यु, मौत, मरण
निधान, ना० वा० सं० पुं० १ धन २ आधार ३ खज़ाना
निधि, ना० वा० सं० पुं० १ बहुत धन, खज़ाना २ आधार, ३ संख्याविशेष
निपट, गु०वा० सं० पुं०अति, बहुत
निपाता, क० वा० नाश किया
निपुनाई, भा० वा० भा० स्त्री० निपुणता, चतुराई
निःपापा, ना०वा०सं०स्त्री०पापरहित
निबिड़, ना०वा०सं०पुं० सघन, घना
निबेरी, भा० वा० भा० स्त्री० १ चुकाई २ जवान स्त्री
निबेही, ना० वा० भा० स्त्री० १ निबहि निबाह २ निरंतर
निबुकि, क्रि० वि० छोड़ा करके, निबुकना, छुड़ाना
निवृत्ति, ना० वा० सं० पुं०निवृत्ति, संसार से छूटना
निभ, ना०वा०सं०नपुं० तुल्य, सदृश
निमि, ना० वा० सं० पुं० एकराजा का नाम
निमेष, ना० वा० सं० पुं० १ पलक मूंदना २ कालविशेष
नियराई, क्रि०वा० निकट पहुंचे, नियराना, निकट आना
नियोगा, ना० वा० सं० स्त्री० नियोग, आज्ञा
निरत, ना० वा० सं० पुं० अति प्रीतियुक्त, लगा तत्पर

निरवहई, भा० वा० भा० स्त्री० निबहे, निबहना
निरवहा, वि० निबहा, बचगया
निर्बाह, ना० वा० भा० पुं० निबाहकिया
निरखि, क्रि० वि० देखकरके निरीक्षण
निरस, ना० वा० भा० पुं० रसबिना, सूखा, स्वादबिना
निरस, क्रि० वि० निरस्य, त्याग करके
निर्गम, ना० वा० सं० नपुं० निकसना
निर्गता, ना० वा० सं० स्त्री० निकली
निर्जोष, ना० वा० सं० नपुं० निश्चय
निर्झर, ना० वा० सं० पुं० झरना
निर्लेप, ना० वा० सं० पुं० बेलाग, लगाव नहीं
निर्बिकल्प, ना० वा० सं० पुं० भेदरहित
निर्बहा, ना० वा० सं० पुं० बीतगया
निर्बान, ना० वा० सं० नपुं० निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति
निर्भर, ना० वा० सं० पुं० पूर्ण, पूरन, अतिशय
निर्मयउ, ना० वा० भा० पुं० निर्माण किया, बनाया, रचा
निर्मूल, ना० वा० सं० नपुं० मूलरहित, नाश
निरामिष, ना० वा० सं० नपुं० मांस बिना
निरीस, ना० वा० भा० पुं० निरीश, बिनामालिक
निरुपधि, ना० वा० सं० नपुं० निरुपाधि, उपाधिरहित, बिना प्रयोजन
निरुआरे, ना० वा० भा० पुं० खोले, निरुआरना, खोलना
निरुपन, ना० वा० भा० पुं० निरुपण बिस्तारसे कहना
निरंकुस, ना० वा० भा० पुं० निरंकुश, स्वतंत्र
निरंबु, ना० वा० सं० नपुं० जलबिना
निरंजन, ना० वा० सं० नपुं० अविद्यारहित, रागरहित
निवारक, ना० वा० सं० पुं० दूरकरने वाला
निबारन, ना० वा० स० पुं० निवारण, दूरकरना, हटना
निवास, ना० वा० सं० पुं० घर
निवेदित, बि० सं० कृ० अर्पित, नैवेद्य किया
निषाद, ना० वा० सं० पुं० मल्लाह
निषंग, ना० वा० सं० पुं० तरकश
निकेवल, ना० वा० सं० पुं० अकेला
निसरी, ना० वा० भा० स्त्री० निकली, निसरना, निकलना
निसागम, वि० भ० पुं० रातआये
निसाना, ना० वा० भा० पुं० नगारा, निशान
निसि, ना० वा० भा० स्त्री० निशा, रात्रि, रात
निसिचर, ना० वा० भा० पुं० राक्षस
निसित, ना० वा० भा० कृ० निशित, तीखा, चोखा
निसेनि, ना० वा० भा० स्त्री० सीढ़ी
निसेस० ना० वा० भा० पुं० निशेश चन्द्रमा, निशाकेईश
निसोत, ना० वा० सं० पुं० निराला, केवल
निहारा, ना० वा० भा० पुं० देखा, निहारना, निरीक्षण, देखना
निहार, ना० वा० भा० पुं० कुहिरा
निहोर, ना० वा० भा० पुं० निहोरा १ बिनती २ उपकार
नीक, गु० वा० भा० पुं० अच्छा
नीच, ना० वा० भा० पुं० १ गड्हा २ नीच, कमीना
नीड़, ना० वा० सं० पुं० खोता, घोसला
नीर, ना० वा० सं० नपुं० पानी, जल
नीरज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
नीरधर, ना० वा० सं० पुं० बादल, मेघ
नील, ना० वा० सं० पुं० श्यामरंग
नीलकंठ, ना० वा० सं० पुं० मोर, मयूर
नीलोत्पल, ना० वा० सं० नपुं० नीलमणि
नेइ, निषेधार्थकनेय, इसतरहनहीं
नेकु, ना० वा० भा० पुं० थोड़ासा थोरिक
नेग, ना० वा० भा० पुं० पुरोहितआदि का कर
नेति, निषेधार्थक न इति, नहीं ऐसा

नेम, ना० वा० भा० पुं० शौच संतोष आदि नियम
नैहर, ना० वा० भा० पुं० स्त्री का निजघर, मातुघर, मैका
नोइ, ना० वा० भा० स्त्री० गाय के पांवबांधनेकीरस्सी दुहने के समय
नौमि क्रि० वा० मैं स्तुति करताहूं
नौमी, ना० वा० भा० स्त्री० नवमीतिथि
नचहिं, क्रि० वा० नाचते हैं
नन्दिनि, ना० वा० सं० स्त्री० नंदिनी
नंदीमुख, ना० वा० सं० पुं० श्राद्धविशेष

प

पगु० ना० वा० भा० पुं० १ पांव २ लगन
पटल, ना० वा० सं० पुं० १ समूह २ ढपना
पटतर, ना० वा० भा० पुं० उपमा, बरोबर
पट, ना० वा० सं० पुं० कपड़ा, वस्त्र
पटु, ना० वा० सं० पुं० चतुर, सुन्दर
पटोरे, ना० वा० पुं० भा० पटोर, रेशमी कपड़ा
पटली, ना० वा० भा० स्त्री० पंगति
पठ, ना० वा० भा० पुं० पढ़ना
पचि, ना० वा० भा० स्त्री १ पच्ची २ काम से
पताका, ना० वा० सं० स्त्री० ध्वजा
पति, ना० वा० सं० पुं० १ राजा, स्वामी २ भर्ता, खसम ३ प्रतिष्ठा
पतिदेवता, ना० वा० सं० स्त्री० पतिव्रता

पतिनिहिं, कर्म कारक पती को
पतिलोक, ना० वा० सं० नपुं० हिमाचल
पतंग, ना० वा० सं० पुं० १ सूर्य २ क्षुद्र जीव, फतिंगा ३ गेंद ४ लालरंग
पतंति, क्रि० वा० गिरते हैं
पत्र, ना० वा० सं० नपुं० १ चिट्ठी, पत्ता
पथिक, ना० वा० सं० पुं० राही, मुसाफिर, बटोही
पथ्य, ना० वा० सं० पुं० गुनकारी
पन्थ, ना० वा० सं० पुं० राह, मार्ग
पद, ना० वा० सं० पुं० १ पांव २ स्वरूप ३ अधिकार
पदचर, ना० वा० सं० पुं० पैदल, प्यादे
पदज, ना० वा० सं० पुं० पांवकी अंगुरी
पदचारी, ना० वा० सं० पुं० प्यादे, पैदल
पदत्रान, ना० वा० सं० पुं० जूता
पदपीढ़ा, ना० वा० भा० पुं० खराऊं, पांवरखनेकी चौकी
पदाति, ना० वा० सं० पुं० प्यादे, पैदल
पदादपि, पदसे भी
पदारथ, ना० वा० भा० पुं० पदार्थ, वस्तु, सबचीज़
पदिक, ना० वा० भा० पुं. जड़ाऊचौकी
पदुम, ना० वा० प्रा० पुं० पद्म कमल
पदुमराग, ना० वा० सं० पुं० लालमणि
पन, ना० वा० भा० पुं० प्रण प्रतिज्ञा, अवस्था

पणव, ना० वा० सं० पुं० ढोल
पनस, ना० वा० सं० कटहर
पनिघट, ना० वा० भा० पुं० पानी भरने का घाट
पवारे, क्रि० वा० फेके, डारे, पवारना, फेंकना
पवि, ना० वा० सं० पुं० हीरापवि, वज्र
पय, ना० वा० सं० नपुं० १ दूध २ पानी
पयद, ना० वा० सं० पुं० १ थन २ बादल
पयनिधि, ना० वा० प्रा० पुं० क्षीरसमुद्र
पयाना, ना० वा० भा० स्त्री० प्रयाण यात्रा
पयोधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
पयोनिधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
पर, ना० वा० सं० पुं० १ और २ शत्रु ३ शिरोमणि ४ परे ५ तत्पर ६ उपरांत
परछिद्र, ना० वा० सं० पुं० १ इन्द्रियछिद्र २ परायेकादोष
परत्र, अ० वा० परलोक
परधाना, ना० वा० भा० पुं० प्रधान मुख्य
परना, ना० वा० भा० पुं० पर्ण, पत्ता
परव, ना० वा० भा० पुं० १ पर्व २ गांठ
परम, ना० वा० सं० पुं० बड़ा, अति, उत्तम
परमा, ना० वा० सं० स्त्री० बहुत शोभा
परमिति, ना० वा० सं० स्त्री० अवधि,

मर्यादा
परमान, ना० वा० सं० नपुं० १ यथार्थ २ प्रत्यक्ष आदि प्रमाण
परमारथ,ना० वा० सं० पुं० तत्त्ववस्तु
परस, ना० वा० भा० पुं० १ छूना २ पारस पत्थर
परसि, क्रि० वि० छू करके
परसु, ना० वा० भा० पुं० फरसा
परसुधर, ना० वा० सं० पुं० परशुराम
पराई, वि० स्त्री० भा० १ भागा २ दूसरेका ३ पराना, भागना, पलायन
परागा,ना०वा० सं० पुं०पराग,धूलि, कमल की रज
पराभव, ना० वा० सं० पुं० १ निरादर २ प्रलय
परावर, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मादि और मनुष्यादि
परि, गु० वा० भा० पुं० अति, चारोंओर
परिकर, ना० वा० सं० पुं० कमर
परिघ, ना० वा० सं० पुं० ब्योंड़ा
परिचरजा, ना० वा० भा० स्त्री० परिचर्या, सेवा
परिचारक, ना० वा० सं० पुं० सेवक
परिचारिका, ना० वा० सं० स्त्री० दासी, लौंड़ी
परिच्छिन्न, ना० वा० सं० कृ० अव्यापक, घेरागया

परिताप, ना० वा० सं० पुं० संताप
परितापी, ना०वा० सं० पुं० दुःखदेनेवाला
परितोष, ना० वा० सं० पुं० प्रसन्नता, संतोष
परित्राता, ना० वा० सं० पुं० रक्षक
परिधान,ना० वा० सं०नपुं०पहिरावा
परिनाम, ना०वा० भा० पुं० १ अवस्था २ अन्त ३ फल
परिपाका, ना० वा० भा०पुं० अन्त का फल
परिपाटी, ना० वा० सं० स्त्री० परम्परा की रीति
परिहरि, ना० वा० पुं० भा० छोड़ करके, परिहरण
परिहास, ना० वा भा० स्त्री० व्यंग बचन के साथ निन्दा
परुष, ना० वा० सं० पुं० कठोर
परे, ना० वा० सं० पुं० परलोक में
परेस, ना० वा० भा० पुं० परेश, परमेश्वर
परन्तु, अ० लेकिन, उपरांत
पलोटत, ना० वा० पुं० भा० धीरे से पांव दाबता, पलोटना
पल्लव, नया पत्ता
पल्लवित, वि० सं० कृ० १ नयेपत्तेके साथ २ रोमांचित
पवन, ना० वा० सं०पुं०वायु,बतासा
पश्यंति, क्रि० वा० देखते हैं

पश्यामि, क्रि० वा० मैं देखताहूं
पखाउज, ना० वा० भा० पुं० मृदंग
पखारे, ना० वा० पुं० भा० प्रक्षालन, धोये, पखारना, धोना
पखवारा ना० वा० पुं० भा० पक्ष,पन्द्रह दिन
पसाऊ, ना० वा० भा० पुं० प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा
पहुनई,ना०वा०भा०स्त्री० मेहमानी,
पाइक, ना० वा० पुं० भा० १ पियादा २ मल्ल
पाक,ना० वा० सं० पुं० १ रसोई २ एक असुर का नाम ३ पक्क
पाकरिपु, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
पाकी, ना० वा० सं० पुं० परिपक्क
पागे, वि० भा० पुं० साने, पागना
पाट, ना० वा० सं० पुं० रेशम
पाटमहिषी, ना० वा० स्त्री० सं० पटरानी
पाटल, ना० वा० सं० पुं० १ गुलाब २ वृक्षविशेष
पाटे,वि०पुं०भरदिया,पाटना, भरदेना
पाठ, ना० वा० सं० पुं० पढ़ना
पाठक,ना० वा० सं० पुं० पढ़ानेवाला
पाठीन, ना० वा० भा० पुं० पढ़िना मछरी
पातक, ना० वा० सं० नपुं० पाप
पात्र, ना० वा० सं० नपुं० बरतन योग्य

पाथ, ना० वा० सं० पुं० जल, पानी
पाथोज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
पाथोद, ना० क्रि० सं० पुं० बादल, मेघ
पाथोधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
पादप, ना० वा० सं० पुं० वृक्ष, पेड़
पान, ना० वा० सं० नपुं० १ पीना २ पत्ता ३ मद्यपान, शराब पीना
पानि, ना० वा० भा० स्त्री० पाणि, हाथ
पारथिव, ना० वा० भा० पुं० पार्थिव, शिव
पारहिं, क्र० वा० सकते हैं, पारना सकना
पारा, १ वि० गिराया, पारना २ समर्थ ३ पार
पारावत, ना० वा० सं० पुं० कबूतर
पारी, वि० स्त्री० भा० डारी, फेंकी, पारना, फेंकना
पालव, ना० वा० भा० पुं० १ पल्लव, पत्ता, २ शाखा, डार
पाले, वि० भा० पुं० अधीन
पावक, ना० वा० सं० पुं० अग्नि, आग
पावन, ना० वा० सं० पुं० पवित्र
पावस, ना० वा० भा० पुं० वर्षाऋतु
पाष, ना० वा० भा० पुं० पक्ष, पंद्रहदिन
पास, ना० वा० भा० पुं० पाश, फांसी फंसड़ी
पाहन, ना० वा० भा० पुं० पाषाण, पत्थर
पांवर, ना० वा० सं० पुं० पामर, नीच, मूढ़
पांवरी, ना० वा० स्त्री० भा० पादुका, खड़ाऊं
पांवड़े, ना० वा० भा० पुं० पांव रखने का वस्त्र
पाहि, क्रि० वा० वि० क्रि० रक्षाकरो
पाहीं, ना० वा० भा० पुं० पास
पिक, ना० वा० सं० पुं० कोयल
पिता, ना० वा० सं० पुं० बाप, रक्षक
पिनाक, ना० वा० सं० पुं० महादेव का धनुष
पिपीलिका, ना० वा० सं० स्त्री० चिउँटी
पिरीते, ना० वा० भा० पुं० प्रीत, प्रीतम, प्रीतियुत
पिरोजा, ना० वा० भा० पुं० जंगाली रंग का मणि
पिसुन, ना० वा० सं० पुं० चुगुल
पी, ना० वा० भा० पुं० प्रिय, पति
पीठ, ना० वा० सं० नपुं० आसन, पीढ़ा
पीन, गु० वा० सं० पुं० पुष्ट, मोटा
पीयूष, ना० वा० सं० नपुं० अमृत
पीवर, गु० वा० सं० पुं० पुष्ट, मोटा
पुट, ना० वा० सं० पुं० दोना
पुटी, ना० वा० सं० स्त्री० दोना
पुनी, ना० वा० सं० स्त्री पवित्र
पुनीत, ना० वा० सं० क्रि० पवित्र
पुर, ना० वा० सं० पुं० १ नगर, पुरा, गांव २ दैत्यविशेष
पुरट, ना० वा० सं० नपुं० सोना, कंचन
पुरान, ना० वा० भा० नपुं० १ पुराण २ पुराना
पुराकृत, वि० कृ० सं० पहिले किया गया
पुरारि, ना० वा० सं० पुं० शिव, महादेव
पुरुष, ना० वा० सं० पुं० १ मनुष्य २ पुरुखा
पुरोडास, ना० वा० सं० पुं० यज्ञका हव्य
पुरोधा, ना० वा० सं० पुं० पुरोहित
पुरन्दर, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
पुलक, ना० वा० सं० पुं० रोमांच
पुलस्ति, ना० वा० सं० पुं० एकऋषिकानाम
पुहुमि, ना० वा० भा० स्त्री० पृथ्वी
पुंगव, ना० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ
पुंज, ना० वा० सं० पुं० समूह
पूग, ना० वा० सं० पुं० १ सुपारी २ समूह
पूजनीय, ना० वा० सं० पुं० सेवा के योग्य
पूजिहि, क्रि० वा० पूर्णहोगा, पूजना, पूर्णहोना
पूजी, वि० स्त्री० भा० पूरीहुई
पूज्य, वि० सं० कृ० पूजने के योग्य
पूतरी, ना० वा० भा० स्त्री० १ कठपुतली २ आंखकी पुतली

पूप, ना० वा० सं० पुं० मालपुआ
पूय, ना० वा० सं० पुं० पीव
पूर, ना० वा० सं० पुं० १ सम्पूर्ण २ उत्तर ३ कान का गहना
पूरुष, ना० वा० सं० पुं० पुरुष
पूषन, ना० वा० सं० पुं० सूर्य
पृथक, अव्यय अलग, जुदा
पृथुराज, ना० वा० सं० पुं० एक राजाका नाम जिसने पृथ्वी को दुहा है
पृष्ठ, ना० वा० सं० पुं० पीठ
पेलिहहिं, क्रि० वा० ना० त्याग
पेली, ना० वा० सं० पुं० त्याग
पेखन, क्रि०वा०प्रेक्षण, देखना, तमाशा
पेषिय, क्रि० वि० सं० प्रेक्ष्य, देखनेके योग्य
पैसार, वि० क्रि० प्रवेश, पैठाव
पोच, गु० वा० सं० पुं० नीच, बुरा
पोत, ना० वा० सं० पुं० १ जहाज २ बालक
पोतक, ना० वा० सं० पुं० बालक
पोषत, क्रि० वा० पुष्टकरताहै, पोषण, पोषना
पोसो, वि० भा० पाला, पोषना, पालना
पंकरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल
पंगु० ना० वा० सं० पुं० लंगड़ा
पंचकवल, ना०वा०सं०पुं०पंचग्रास
पंचदस, सं० वा० पन्दरह

पंचसबद, ना० वा० भा० पुं० पांच बाजा नगाराआदि
पंजर, ना० वा० सं० पुं० पिंजरा
पंथ, ना० वा० सं० पुं० रस्ता
प्रकार, ना० वा० सं० पुं० रीति
प्रकासक, ना० वा० भा० पुं० प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला
प्रकास्य, क० वा० कृ० प्रकाश्य, प्रकाशके योग्य
प्रकृति, ना० वा० सं० स्त्री० १ माया २ स्वभाव ३ संसार
प्रकृष्टि, गु० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ
प्रगल्भ, ना० वा० सं० पुं० शास्त्रसे विजयी
प्रचार, ना० वा० सं० पुं० विस्तार, फैलाव
प्रचारी, क्रि० वि० ललकार के
प्रजारी, वि० स्त्री० भा० जलाई
प्रजारना, क्रि० वा० जलाना
प्रजासन, ना० वा० भा० पुं० प्रजाशन, प्रजाकाभोजन
प्रजेस, ना० वा० भा० पुं० प्रजेश, दक्षप्रजापति
प्रजन्त, अव्ययपर्यन्त, तक, लौं
प्रति, अव्य०१पास२संमुख३ विरुद्ध
प्रतिउपकार, ना० वा० सं० पुं० प्रत्युपकार, उपकारका बदला
प्रतिकूला, ना० वा० सं० पुं० विमुख
प्रतिछाहीं, ना० वा० भा० स्त्री० प्रतिछाया, परिछाहीं
प्रतिपछी, ना० वा० सं० पुं० प्रतिपक्षी, शत्रु
प्रतिपाद्य, वि० सं० कृ० वर्णन के योग्य
प्रतिभट, ना० वा० अव्ययीभाव, समान, वीर
प्रतिमा, भा० वा० सं० स्त्री० मूर्त्ति
प्रतिमूरति, ना० वा० सं० स्त्री० प्रतिविम्ब, परिछाहीं
प्रतिविम्ब, ना० वा० सं० पुं० परिछाहीं
प्रत्यूह, ना० वा० सं० पुं० विघ्न
प्रथम, ना० वा० सं० पुं० पहिले, मुख्य
प्रथमगति, ना० वा० सं० पुं० दान
प्रद, वि० सं० पुं० देनेवाला
प्रदेस, ना० वा० भा० पुं० प्रदेश, १ खंडभूमि २ परदेश
प्रदोष, ना० वा० सं० पुं० सन्ध्याकाल, रात्रिका आना
प्रधान, ना० वा० सं० पुं० १ मुख्य २ मंत्री
प्रनत, ना० वा० सं० पुं० अतिनम्र, शरणागत
प्रनय, भा० वा० भा० पुं० प्रणय, प्रेम
प्रनवों, क्रि० वा० प्रनामकरताहूं, प्रनवना
प्रपंच, ना० वा० सं० पुं० १ संसार २ कपट, छल

प्रबंध, ना० वा० सं० पुं० १ रचना २ बन्दोबस्त
प्रबीन, ना० वा० भा० पुं० प्रवीण, चतुर
प्रबोध, ना० वा० सं० पुं० उपदेश, ज्ञान
प्रबोधक, वि० सं० पुं० जनानेवाला
प्रभा, ना० वा० सं० स्त्री० प्रकाश
प्रभाऊ, ना० वा० भा० पुं० प्रभाव, प्रताप
प्रभु, ना० वा० सं० पुं० १ स्वामी २ राजा ३ समर्थ
प्रभंजन, ना० वा० सं० पुं० पवन, हवा
प्रमदा, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, मेहरारू
प्रमादू, भा० वा० भा० असावधानता
प्रयांति, क्रि० वा० प्राप्त होते हैं
प्रलम्ब, ना० वा० सं० पुं० विशाल, बड़ा
प्रलाप, ना० वा० सं० पुं० अर्थरहित वचन
प्रसन्न, वि० कृ० सं० १ हर्षित २ निर्मल
प्रसव, ना० वा० सं० पुं० उत्पत्ति
प्रसाद, ना० वा० सं० पुं० १ प्रसन्नता, कृपा २ जूठन
प्रसीद, क्रि० वा० प्रसन्नहो
प्रसूती, ना० वा० सं० स्त्री० उत्पत्ति
प्रसून, ना० वा० सं० पुं० फूल
प्रसंग, ना० वा० सं० पुं० सम्बन्ध, कथाकी चर्चा
प्रसंसक, वि० पुं० भा० प्रशंसक, स्तुति करनेवाला
प्रसंसा, ना० वा० भा० स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, सराहना
प्रस्थिति, ना० वा० सं० स्त्री० कीर्त्ति
प्रहार, ना० वा० सं० पुं० मार, मारना
प्राकृत, ना० वा० सं० पुं० १ अयोग्य २ मायाका विकार ३ साधारण मनुष्य
प्राकृतकवि, ना० वा० सं० पुं० सूरदास आदि
प्राची, ना० वा० सं० स्त्री० पूर्व्वदिशा, पूरब
प्रात, अव्यय० सबेरा, तड़का
प्रातकृत, ना० वा० सं० पुं० स्नान सन्ध्या आदि
प्रातक्रिया, ना० वा० सं० स्त्री० स्नान सन्ध्याआदि
प्राननाथ ना० वा० सं० पुं० प्राणनाथ, पति
प्राविट, ना० वा० सं० स्त्री० वर्षाऋतु
प्रियतम, ना० वा० सं० पुं० अत्यंतप्रिय
प्रीता, वि० सं० पुं० मित्र
प्रेत, ना० वा० सं० पुं० शव, मुरदा
प्रेतनिवास, ना० वा० सं० पुं० मसान
प्रेरक, वि० सं० पुं० आज्ञाकरनेवाला, प्रेरणाकरनेवाला
प्रेरित, क० वा० सं० पुं० आज्ञा कियागया,
प्रेरे, वि० पठाया, भेजा, प्रेरणा, भेजना
प्रोक्त, वि० सं० कृ० कहागया, कहा
प्रौढ़, गु० वा० सं० पुं० १ बड़ा २ मोटा
प्रौढ़ि, ना० वा० सं० स्त्री० अभिमान से कहना

फ

फटिक, ना० वा० भा० पुं० स्फटिक, बिल्लौर
फनि, ना० वा० सं० पुं० फणी, सर्प
फनिक, ना० वा० भा० पुं० फणिक, सांप
फल, ना० वा० सं० पुं० १ अर्थ धर्म काम मोक्ष २ मेवा
फलित, वि० कृ० पुं० फलसमेत
फहराई, क्रि० वा० कूदते हैं, फहराते हैं
फबी, वि० स्त्री० भा० १ मजबूत २ फबी, फबना, सजना
फुर, ना० वा० भा० पुं० सत्य, सांच
फुलवाई, ना० वा० भा० स्त्री० फुलवारी, फूलका बाग

ब

बक, ना० वा० भा० पुं० बक, बगुला
बकता, वि० सं० पुं० बक्ता, कहनेवाला
बकुल, ना० वा० सं० पुं० मौलसिरी मुरसली

बक्र, गु० वा० सं० पुं० वक्र, टेढ़ा
बगमेल, क्रि० वि० बाग मिलाके वा हल्ला करके
बगरे,क्रि० वा० फैले, बगरना,फैलना
बच्च, ना० वा० सं० नपुं० बचन,बात
बचांसि, ना० वा० सं० नपुं० बातें, वचन
बच्छ, ना० वा० भा० पुं० १ बत्स, बछरू २ पुत्र
बच्छल, ना० वा० भा० पुं० बत्सल, दयायुत
बज्र, ना० वा० सं० नपुं० इन्द्रकाशस्त्र
बट, ना० वा० सं० पुं० बटका पेड़
बटु, ना० वा० सं० पुं० ब्रह्मचारी
बटोही, ना० वा० भा० पुं० पथिक राह
बड़वानल, ना० वा० सं० पुं० समुद्र की आग
बत, ना० वा० भा० पुं० बात, वार्त्ता
बतकही, ना० वा० भा० पुं० बात
बताई, भा० वा० भा० स्त्री० बुताई, बुझाई
बताना, क्रि० वा० बुताना, बुझाना
बतासा, ना० वा० पुं० भा० बतास, हवा
बतिया,ना० वा० भा० पुं० छोटाफल
बद, वि० क्रि० कहो
बदति, क्रि० वा० सं० कहताहै
बदन ना० वा० सं० नपुं० मुख

बदर, ना० वा० सं० पुं० बैरकाफल
बदरी, ना० वा० सं० स्त्री० बैरकापेड़
बदि, ना० वा० भा० पुं० कह करके, बदना, कहना
बधिक, ना० वा० सं० पुं० व्याधा, बहेलिया
बधिर, ना० वा० सं० पुं० बहिरा
बधू, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, बहू
बधूटी, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री
बन, ना० वा० सं० नपुं० १ जंगल २ पानी
बनचर, ना० वा० सं० पुं० १ वानर २ जंगली
बनज, ना० वा० सं० नपुं० कमल
बनमाला, ना० वा० सं० स्त्री० फूल और पत्ते का माला
बनिक, ना० वा० भा० पुं० बणिक, बनिया
बनी० ना० वा० भा० स्त्री० मजूरी का धन
बपु, ना० वा० सं० नपुं० बपुष, शरीर, देह
बपुष, ना० वा० सं० नपुं० शरीर,देह
बमत,क्रि० वा० छांटताहै, रद्दकरताहै
बमन, ना० वा० सं० पुं० छांड़ना, छांटकरना, रद्द
बयस, ना० वा० सं० स्त्री० १ वयस, अवस्था, उमिर २ बैश्य, बनिया
बयारी,ना० वा० भा० स्त्री० पवन, हवा

बर, ना० वा० सं० पुं० १ श्रेष्ठ २ पति ३ बरदान ४ बरना, जलना ५ जोर, बल ६ बटवृक्ष
बरन, ना० वा० पुं० भा० १ वर्ण, अक्षर २ जाति ३ वर्णन
बरनी, वि० स्त्री० भा० कही
बरबरनी, ना० वा० स्त्री० सं० श्रेष्ठ रंगवाली, गोरी
बरबस, ना० वा० भा० स्त्री० जोरावरी
बरहि, ना० वा० भा० पुं० बर्हिण, मोर
बराई, भा० वा० भा० स्त्री० दूरहांकना
बराएं, क्रि० वि० बचाकरके
बराह, ना० वा० सं० पुं० वराह,सूअर
बरि, क्रि० वि० बटकरके, बरना, बटना, बहुरि
बरिआर, ना० वा० भा० पुं० बली जोरावर
बरिआं, ना० वा० भा० पुं० १ बेला, समय २ बाग
बरिबंड, वि० भा० पुं० बलवन्त, तेजस्वी, बली
बरी, वि० भा० स्त्री० व्याही, बरना व्याह करना
बरीसा, ना० वा भा० पुं० वर्ष, बरिस
बरु, अव्यय बलुक, बरुक, बल्कि
बरुन, ना० वा० सं० पुं० वरुण
बरूथ, ना० वा० सं० पुं० समूह, झुंड
बरोरु, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री, सुन्दर जांघवाली

बरेषी, ना० वा० सं० पुं० बरेक्षण, बरदेखौनी, दूलह ठहराना
वर्ग, ना० वा० भा० पुं० वर्ग, जाति, समूह
बर्बर, ना० वा० सं० पुं० १ अधम, नीच २ बकवादी
वर्म, ना० वा० सं० नपुं० बखतर
वर्य, ना० वा० सं० पुं० वर्य, श्रेष्ठ
वर्षासन, ना० वा० सं० नपुं० वर्षाशन, बरिसदिनका भोजन
वल, ना० वा० सं० नपुं० जोर, सेना
वलकल, ना० वा० सं० नपुं० वल्कल, बोकला
वलकावा, ना० वा० भा० स्त्री० ऐंठ कीबातें
वलाक, ना० वा० सं० पुं० बगुला
वलाहक, ना० वा० सं० पुं० बादल, मेघ
वलि, ना० वा० भा० स्त्री० १ बखरा, हिस्सा २ पूजा ३ बलिदान ४ राजावली ५ नेछावर
वलित, वि० सं० कृ० वेष्टित, घेरागया
वलीमुख, ना० वा० सं० पुं० बानर
बल्ली, ना० वा० सं० स्त्री० बवर, लता
वखाना, ना० वा० भा० स्त्री० १ स्तुति २ कहा
वसत, क्रि० वा० वि० वसैं, रहैं
वसन, ना० वा० सं० नपुं० कपड़ा
वसवर्ती, ना० वा० वि० वशवर्त्ती, अधीन

बससि, प्रश्नवा० तू बसता है
बसह, ना० वा० पुं० भा० बैल
बसीठी, ना० वा० पुं० भा० दूत, हरकारा
बसुधा, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
बस्य, ना० वा० सं० पुं० वश्य, अधीन
बह, क्रि० वा० चलना, बहना
बहरावा, वि० भा० पुं० सहटिआवा, सुनकरके अनसुनी किया
बहहिं, क्रि० वा० उठाते हैं
बहना, ना० वा० भा० पुं० उठाना, लेजाना
बहुकालीना, ना० वा० सं० स्त्री० बहुकालीन, बहुतकालका
बहुधा, अव्यय, बहुत प्रकारसे
बहुबाहु, ना० वा० सं० पुं० रावण
बहुरहिं, क्रि० वा० फिरैं
बहुरि, अव्यय, फिर
बहुरे, वि० पुं० वा० फिरे
बहुरना, ना० वा० भा० पुं० फिरना
बहू, ना० वा० भा० स्त्री० १ वधू, स्त्री २ बहुत, बहु
बहोरी, अव्यय १ बनाव २ फिर
बा, अव्यय, वा, अथवा, या
बाऊ, ना० वा० भा० स्त्री० वायु, पवन
बाग, ना० वा० सं० स्त्री० वाच, वाणी
बागीसा, ना० वा० सं० स्त्री० वागीशा, ब्रह्मवाणी
बगुर, ना० वा० भा० पुं० फंदा, जाल

बाचाल, ना० वा० पुं० भा० वाचाल १ पंडित २ बकवादी
बाजा, ना० वा० भा० पुं० लड़ा, बड़ाई, बाजना, लड़ना
बाजिमेध, ना० वा० सं० पुं० अश्वमेध यज्ञ
बाजि, ना० वा० सं० पुं० वाजी, घोड़ा
बाट, ना० वा० भा० पुं० पथ, राह, रस्ता
बाटपरै, क्रि० वा० रोजगारजाय
बाटिका, ना० वा० सं० स्त्री० वाटिका, फुलवारी, बाग
बात, ना० वा० सं० स्त्री० वात, पवन, हवा, बाई
बाति, ना० वा० सं० स्त्री, बत्ती, वर्त्तिका
बातुल, ना० वा० भा० पुं० वातुल, बौझका, बाईचढ़ी
बादले, ना० वा० भा० पुं० बादल, मेघ
बादि, ना० वा० भा० पुं० १ वृथा, २ वास्ता, प्रयोजन
बादिनि, ना० वा० सं० स्त्री० वादिनी, बोलने वाली
बादी, ना० वा० सं० पुं० वादी, कहने वाला
बाधक, ना० वा० सं० पुं० दुःखद, विघ्न, रोकनेवाला
बाधा, ना० वा० सं० पुं० विघ्न, रोक, दुःख
बान, ना० वा० भा० पुं० १ बाणासुर २ बाण, तीर ३ रंग ४ स्वभाव ५ बाना

बानैत, ना० वा० पुं० भा० बीरबाना फेकनेवाला, बिरदैत्य
बापिका, ना० वा० स्त्री० सं० बावली
बापुरो, ना०वा० भा०पुं०१ क्षयीरोग-वाला २ तुच्छ, बपुरा
बाम, ना० वा० सं० पुं० १ वाम, स्त्री २ बायां
बाय, क्रि० वि० पसारकरके, बाना पसारना
बायन, ना०वा०भा०पुं० बैना, नेवता
बायस, ना०वा०सं०पुं०वायस, कौवा
बायें, वि०पुं० भा० बाम, बायां
बार, ना० वा० सं० पुं० १ बारम्बार २ दिन ३ समूह ४देर ५केश ६काल
बारन, ना० वा०सं०पुं० वारण, हाथी
बारय, वि०क्रि०दूरकरो, बारना, दूरकरना
बारहबाट, ना० वा० भा० पुं० तहस नहस, मोहादि बारह रस्ता
बारहि, भा० वा०भा० पुं० लड़कापन
बारि, भा० वा० सं० पुं० वारि, जल
बारिचरकेतु, ना०वा०सं०पुं० कामदेव
बारिज, ना० वा० सं० नपुं० वारिज, कमल
बारिद, ना०वा०सं०पुं०वारिद, मेघ, बादल
बारिधर, ना०वा०सं०पुं० बादल, मेघ
बारिधि, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
बारिस, ना० वा० भा० पुं० वारीश, समुद्र

बारिदनाद, ना०वा०सं०पुं० मेघनाद
बारी, ना०वा०भा०पुं० १ जल, पानी २ फुलवारी ३ छोटी ४ निछावर, वारना
बारुनी, ना०वा०भा० स्त्री० वारुणी, मदिरा, शराब
बारे, ना०वा० पुं० भा० १ छोड़ करके २ बालक
बाल, ना० वा० सं० पुं० १ बालक २ मूर्ख ३ केश
बाला, ना० वा० सं० स्त्री० बाला, स्त्री
बासन, ना० वा० पुं० भा० १ बरतन २ सुगन्ध ३ निवास
बासर, ना० वा० सं० पुं० वासर, दिन
बासव, ना० वा० सं० पुं० वासव, इंद्र
बाहन, ना० वा० भा० पुं० वाहन, असवारी
बाहिज, ना० वा० भा० पुं० बाह्य, बाहरी, बाहरसे
बाहिनी, ना० वा० भा० स्त्री० वाहिनी, सेना
बिकट, गु० वा० भा० पुं० १ विकट, भयङ्कर, टेढ़ा
बिकरारा, गु० वा० भा० पुं० विकराल, भयङ्कर
बिकसे, वि० वा० भा० पुं० फूले, बिकसना, फूलना
बिकार, ना० वा० सं० पुं० विकार १ अवगुण, ऐगुन २ जन्मादि ३ काय, कारज

बिक्रम, गु० वा० भा० पुं० विक्रम, पराक्रम, जोर, बल
बिगत, वि० सं० कृ० विगत, रहित, हीन
बिगोये, वि० भा० पुं० ब० नाशकिये, बिगोना, नाशकरना
बिग्रह, ना० वा० भा० पुं० १ विग्रह, विरोध, झगड़ा, २ शरीर, देह ३ हठ
बिख्यात, वि०पुं० कृ० विख्यात, विदित, प्रसिद्ध
बिघटन, ना० वा० भा०पुं० विघटन, तोड़ना
बिचरहिं, क्रि० वा० फिरते हैं, विचरना, फिरना
बिचक्षण, ना० वा०भा०पुं०विचक्षण, चतुर
बिचित्र, गु० वा० भा० पुं० विचित्र, अनेक प्रकारका, आश्चर्यरूप
बिजयी, वि०भा०पुं० विजयी, विशेष जयवाला, विजय करनेवाला
बिज्ञान, गु०वा०भा० पुं०विज्ञान, अनुभव
बिज्ञानबिहीना, ना० वा० भा० पुं० विज्ञानविहीन, ज्ञानऊन और ज्ञानकी हानि
बिटपना, वा०भा०पुं० विटप, वृक्ष, पेड़
बिडरो, क्रि०वि० ना० वा० १ विशेष भय, छितराकरके, बिडरना, छितराना

बिडारी, वि० स्त्री० भगायी, बिडारना, भगाना

बिडंब, ना० वा० भा० पुं० विडंब, वचन, ठगी, छल

बिढ़इ, क्रि० वि० कमाकरके, बिढ़वना, कमाना

बित्त, ना० वा० भा० पुं० वित्त, धन मकदूर

बितान, ना० वा० भा० पुं० १ वितान, विस्तार, फैलाव २ चंदवा, ३ मंडप

बिथकहिं, क्रि० वा० चकित होते हैं, बिथकना, चकितहोना

बिथकि, क्रि० वि० लीनवृत्ति

बिथुरे, वि० वा० भा० पुं० फैले, बिथुरना, फैलना

बिद, ना० वा० सं० पुं० विद, ज्ञाता, जाननेवाला

बिंदक, वि० पुं० सं० विंदक, नाम युत, पानेवाला

बिदरेउ, वि० भा० पुं० विदीर्ण, फटगया, बिदरना, फटना

बिदारे, वि० वा० भा० पुं० विदीर्ण, फाड़े, बिदारना, फाड़ना

बिदारहिं, क्रि० वा० फाड़ते हैं, बिदारना, फाड़ना

बिदित, वि० सं० कृ० विदित, प्रसिद्ध, जतायागया

बिदिसि, ना० वा० भा० पुं० विदिश, विदिशा, दिशा का कोना

बिदुषन्ह, ना० वा० भा० पुं० पंडित लोग, विदुषशब्द का बहुवचन

बिदूषक, वि० सं० पुं० १ विदूषक, भांड़ २ निन्दक

बिदूषहिं, क्रि० वा० निंदाकरतेहैं, बिदूषना, निन्दाकरना

बिदेह, ना० वा० सं० पुं० १ विदेह, राजाजनक २ देहबिना

बिद्यमान, ना० वा० सं० पुं० विद्यमान, वर्त्तमान, है, होता

बिद्या, ना० वा० सं० पुं० शिक्षा, इल्म

बिद्रुम, ना० वा० सं० पुं० विद्रुम, मूंगा

बिधवा, ना० वा० सं० स्त्री० विधवा रंडा, जिसस्त्रीका पति मरगया

बिधाता, ना० वा० सं० पुं० विधाता, ब्रह्मा

बिधात्री, ना० वा० सं० स्त्री० विधात्री, ब्रह्माणी

बिधि, ना० वा० सं० पुं० १ विधि, ब्रह्मा २ कर्म, भाग्य ३ विधान, रीति

बिधिअंड, ना० वा० भा० पुं० ब्रह्मांड

बिधिवत, क्रि० वि० विधिवत्, यथायोग्य, विहित

बिधु, ना० वा० सं० पुं० विधु, चन्द्रमा

बिधुन्तुद, ना० वा० सं० पुं० राहु

बिनता, ना० वा० सं० स्त्री० विनीता, गरुड़जीकी माताका नाम है

बिनय, गु० वा० सं० पुं० विनय १ बिनती २ विशेष नीति

बिनयी, ना० वा० सं० पुं० १ विनयी, अतिनीतिवाला २ विनय करनेवाला

बिनवा, ना० वा० भा० पुं० बिनय किया, बिनवना, बिनयकरना

बिनीत, वि० वा० सं० कृ० विनीत १ विशेषनीति २ नम्र, मुअद्दब

बिनोद, ना० वा० सं० पुं० विनोद, क्रीड़ा, खेल

बिपरीति, ना० वा० सं० पुं० विपरीति, उलटा, प्रतिकूल

बिपिन, ना० वा० सं० नपुं० विपिन, बन, जंगल

बिपुल, ना० वा० सं० पुं० विपुल, बहुत, विस्तार

बिप्रचरन, ना० वा० भा० पुं० भृगुलता, भृगुजीने जो भगवानकी छातीमें लात माराथा उसकाचिह्न

बिवर, ना० वा० सं० नपुं० विवर, बिल, छेद

बिबरन, ना० वा० भा० पुं० १ विवर्ण, बेरंग, बुरारंग २ जुदा, अलग

बिबर्द्ध, ना० वा० भा० पुं० बहुतबढ़ता

बिबस, ना० वा० सं० पुं० १ विवश, विकल, व्याकुल २ विशेषवश

बिबाकी, ना० वा० भा० पुं० नाश

बिबक्ति, वि० सं० पुं० विवक्ति १ एकांत २ त्याग

बिबुध, ना० वा० सं० पुं० १ विबुध, देवता २ पंडित
बिबुधबन, ना० वा० सं० नपुं० विबुध बन, नंदनवाटिका, स्वर्गकाबगीचा
बिबुधबैद, ना० वा० भा० पुं० विबुध बैद्य, अश्विनीकुमार, देवतों के बैद्य
बिबेक, ना० वा० सं० पुं० १ विवेक, ज्ञान २ सत्य असत्यका विचार
बिभव, ना० वा० सं० पुं० १ विभव, ऐश्वर्य, २ पालन
बिभाग, ना० वा० सं० पुं० १ विभाग जुदाई २ बांट, बखरा ३ भाग्यहीन ४ खंड, टुकड़ा
बिभाती, क्रि० वा० बिभाति, प्रकाशित होताहै, सोहताहै
बिभिचारी, ना० वा० भा० व्यभिचारी, परतियगामी, पराई स्त्रीकेपास जानेवाला
बिभु, ना० वा० सं० पुं० १ विभु, व्यापक २ समर्थ
बिभुन्ह, ना० वा० भा० पुं० बिभुशब्द का बहुवचन, बिश्व तैजस प्राज्ञ ब्रह्म
बिभूती, ना० वा० भा० स्त्री० १ विभूति, राख २ संपदा ३ भक्ति
बिभेद० ना० वा० सं० पुं० विभेद फूट, शत्रु मित्रभाव
बिभंजन, ना० वा० सं० पुं० नाश करनेवाला
बिभंजनि, ना० वा० सं० स्त्री० विभंजनि, तोड़नेवाली
बिमल, ना० वा० सं० पुं० विमल, निर्मल, फरचा
बिमात्र, ना० वा० सं० पुं० विमात्र महतारी से जो बेटा
बिमुख, ना० वा० सं० पुं० विमुख, विरोधी
बियोगी, ना० वा० सं० पुं० वियोगी, अलग, जुदा
बिरक्त, ना० वा० सं० पुं० विरक्त, वैराग्यवान्, त्यागी, बिरागी
बिरचि, क्रि० वि० रचकरके, बनाकरके, बिरचना, बनाना
बिरज, ना० वा० सं० पुं० विरज, निर्मल, फरचा, जो रजवीर्य से उत्पन्न नहीं है
बिरत, ना० वा० सं० पुं० विरत, वैराग्यवान्, मुमुक्षु
बिरति, ना० वा० सं० पुं० १ विरत, वैराग्य, त्याग २ अतिप्रीति
बिरथ, वि० सं० पुं० विरथ, रथ के बिना
बिरद, ना० वा० सं० पुं० १ विरद, जस २ वीरोंका बाना
बिरव, ना० वा० सं० पुं० बीरे, छोटा पेड़, पौधा
बिरहित, वि० सं० पुं० कृ० विरहित, रहित, छूटा, त्यक्त
बिराग, ना० वा० सं० पुं० १ विराग, वैराग्य, त्याग
बिराजति, क्रि० वा० बिराजती है, सोहती है
बिराट, ना० वा० सं० पुं० विराट, विश्वरूप
बिरुज, ना० वा० सं० पुं० विरुज, निरोगी, रोगहीन
बिरुदैत्य, ना० वा० सं० पुं० बाना वाले बीर
बिरुद्ध, ना० वा० सं० पुं० विरुद्ध, विरोधत, वैरयुत
बिरञ्चि, ना० वा० सं० पुं० बिरञ्चि, ब्रह्मा
बिलग, ना० वा० सं० पुं० १ न्यारा, अलग २ बुरा
बिलपाती, ना० वा० भा० स्त्री० विलाप करती
बिलष, ना० वा० भा० पुं० उदास
बिलपाइ, क्रि० वि० बिषाद करके बिलखाना, बिषादकरना
बिलास, ना० वा० सं० पुं० १ बिलास, क्रीड़ा, खेल २ चमत्कार ३ सुख ४ कार्य, काम, ५ ऊंचे नीचेकरना
बिलासिनी, ना० वा० सं० स्त्री० विलासिनी, स्त्री, विलासकरनेवाली
बिलाहीं, क्रि० वा० बिलाते हैं, नष्ट होजाते हैं

बिलोकि, क्रि० वि० बिलोक्य, देख करके, बिलोकना, देखना
बिलोचन, ना० वा० सं० पुं० विलोचन, आंख
बिषम, ना० वा० सं० पुं० १ बिषम, शत्रुमित्रभावयुत २ भयङ्कर ३ पांच
बिषमता, भा० वा० सं० स्त्री० बिषमता, रागद्वेष
बिषय, ना० वा० सं० पुं० बिषय शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श
बिषयक, अ० वा० ना० सं० पुं० विषयक बिषे, विषयमें, बाबत
बिषई, ना० वा० सं० पुं० विषई बिषय करनेवाला, संसारी
बिषाद, ना० वा० सं० पुं० बिषाद, शोक, दुःख
बिषाना, ना० वा० भा० पुं० बिषाण, सींग
बिष्ठा, ना० वा० सं० स्त्री० बिष्ठा, मल, गुह, गलीज़
बिसद, ना० वा० भा० पुं० १ विषद, सफेद २ स्पष्ट, साफ़
बिसमय, ना० वा० भा० पुं० विस्मय, अचरज
बिसमित, वि० सं० कृ० विस्मित, अचरजयुत
बिसारद, ना० वा० भा० पुं० विशारद, चतुर, प्रवीण, निपुण
बिसाल, ना० वा० भा० पुं० १ विशाल, बड़ा २ पीड़ा बिना
बिसिख, ना० वा० भा० पुं० विशिष, तीर, बान
बिसूरति क्रि० वा० चिन्ता करती है बिसूरना, चिन्ताकरना
बिशेष, गु० वा० भा० पुं० १ बिशेष, कोई २ अधिक ३ भेद
बिसोक, वि० भा० पुं० बिशोक, शोकरहित
बिस्तक गु० वा० सं० पुं० विस्तर, विस्तार
बिस्व, ना० वा० भा० पुं० १ बिश्व, संसार २ सर्व, सब
बिस्वरूप, ना० वा० पुं० भा० विश्वरूप, संसाररूप सर्वरूप
बिहग, ना० वा० पुं० भा० विहग, पक्षी, पखेरू
बिहरति, क्रि० वा० फटती है, बिहरना, फटना
बिहरन, ना० वा० भा० पुं० विहरण, क्रीड़ा, खेल
बिहरु, ना० वा० भा० पुं० कटना
बिहाइ, क्रि० वि० विहाइ, छोड़करके
बिहान, ना० वा० भा० पुं० १ बिहान, भोर, प्रात २ बीतजाना
बिहार, ना० वा० सं० पुं० विहार, क्रीड़ा, खेल
बिहीना, गु० वा० भा० पुं० विहीन, बिना, रहित, अतिनीच
बीथी, ना० वा० सं० स्त्री० गली
बीर, ना० वा० सं० पुं० बीर१ भाई२ बीररसयुत
बीरभद्र, ना० वा० सं० पुं० शिवकेगण
बुझाई, क्रि० वि० समझा करके, बुझाना, समझाना
बुध, ना० वा० सं० पुं० १ पंडित २ चन्द्रपुत्र
बूता, ना० वा० भा० पुं० बल, जोर
बृक, ना० वा० भा० पुं० हुंडार
बृषकेतू, ना० वा० भा० पुं० महादेव का नाम
बृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० वर्षा, बूंदसमूह
बृष, ना० वा० सं० पुं० बैल
बृषभ ना० वा० सं० पुं० बैल
बृषली, ना० वा० सं० स्त्री० शूद्री
बृंदारका, ना० वा० सं० पुं० देवता
बेत, ना० वा० पुं० भा० १ बियत्, आकाश २ छड़ी
बेद, ना० वा० सं० पुं० वेद, चारों वेद ऋक् यजु आदि
बेदिका, ना० वा० सं० स्त्री० बेदी पद को देखो
बेदी ना० वा० सं० स्त्री० बेदी कर्मकांडकरने के लिये छोटा चबूतरा
बेध, ना० वा० सं० पुं० बेध, छेद
बेनी, ना० वा० सं० स्त्री० बेणी, १त्रि-

वेणी २ चोटी
बेनु, ना० वा० सं० पुं० १ वेणु, बांस २ मुरली ३ एकराजा का नाम
बेरे, ना०वा० भा० पुं० बेड़ा, जहाज
बेसर, ना० वा० भा० पुं० खच्चड़
वेहड़, ना० वा० भा० पुं० बिकट स्थान, बीहड़
बेहू ना० वा० भा० पुं० छेद
बैतरनी, ना० वा० सं० स्त्री० यमपुर की नदी
वैदिक, ना० वा० सं० पुं० वैदिक १ वेदकी रीतिसे २ वेदपाठी
बैदेही, ना० वा० सं० स्त्री० बैदेही सीताजी का नाम
बैनतेय, ना० वा० सं० पुं० वैनतेय, गरुड़
बैना, ना० वा० भा० पुं० वचन
बैभव, ना० वा० सं० पुं० १ वैभव, ऐश्वर्य २ पालन
बैषानस, ना० वा० सं० पुं० बानप्रस्थ
बैस, ना वा०भा० पुं० बयस, अवस्था
बैसा, ना०वा०भा० पुं० बैठा, बैसना, बैठना
बोहित, ना० वा० भा० पुं० जहाज
बौड़, ना० वा० पुं० भा० बवँर, लता
ब्योम, ना०वा. सं० पुं. व्योम, आकाश
बंगा, वि० भा० पुं० लुच्चा
वंचक, ना० वा० सं० पुं० बंचक, ठग
बंचन ना० वा० सं०पुं० बंचन, ठगना

बन्दन, ना० वा०सं० पुं० वंदन, प्रणाम
बन्दनीय, वि० सं० पुं० वन्दनीय, नमस्कार के योग्य
बंद्य, वि० सं० पुं० वंद्य, नमस्कार के योग्य
बंधु, ना० वा० सं० पुं० १ भाई २ बाँधना ३ सम्बन्धी
बंस, ना० वा० भा० पुं० १ वंश, बांस २ कुल
ब्रजन्ति क्रि० वा० जाते हैं, प्राप्त होते हैं
ब्रन, ना०वा०भा०पुं० ब्रण, घाव, फोड़ा
ब्रह्मागिरा, ना० वा० सं० स्त्री० ब्रह्मा की बानी
ब्रह्मधाम, ना०वा०सं०नपुं० ब्रह्मलोक
ब्रह्मभवन, ना०वा०सं.नपुं० ब्रह्मलोक
ब्रह्मानन्द, ना० वा० सं० पुं० स्वरूपानंद, भगवान् का सुख
ब्रात, ना०वा० सं० पुं० समूह, झुण्ड
ब्रीड़ा, ना० वा० सं० स्त्री० लज्जा, शरम
ब्यग्र, ना० वा० सं० पुं० ब्यग्र, विकल
ब्यजन, ना० वा० सं० नपुं० ब्यजन, पंखा
ब्यथा, ना० वा०सं० स्त्री० व्यथा, दुःख
ब्यलीक, ना०वा० सं०पुं० व्यलीक, कपट
ब्यसनी, ना० वा० सं० पुं० बानि, शौक, ब्यसनी

ब्याज, ना० वा० सं० पुं० १ बहाना, छल २ सूद
ब्याप्य, क्रि० वि० जगत्
ब्याधि, ना० वा० सं० पुं० रोग
ब्याधू, ना० वा० भा० पुं० बहेलिया, चिड़ीमार
ब्याल, ना० वा० सं० पुं० १ सांप २ हाथी
ब्याली, ना० वा० सं० पुं० सर्पधारी, मन्तरवारी
ब्यास, ना० वा० सं० पुं० १ विस्तार २ एकमुनिकानामजिन्होंने वेदान्तसूत्र और पुराणआदि बनाया

भ

भगवान, ना० वा० सं० पुं० ईश्वर
भगिनी, ना० वा० सं० स्त्री० बहिन
भजई, क्रि० वा० सेवै, वा सुमिरै
भजन, ना० वा० सं० नपुं० भक्ति
भजामि, क्रि० वा० सं० मैं भजताहूं
भजामहे, क्रि० वा० सं० हमभजतेहैं
भजी, ना० वा० भा० स्त्री० अंगीकार किया, भजना
भजे, क्रि० वा० मैं भजता हौं
भट, ना०वा० सं०पुं० योद्धा, सिपाही
भटभेरे, क्रि०वा०धकाखाते, फिरते हैं
भड़िहाई, ना० वा० सं० स्त्री० चोरी, भांड़ा चाटके
भदेस, ना० वा० भा० पुं० १ गवांरी, गवंरऊ २ निन्दा योग्य

भद्र, ना० वा० सं० नपुं० कल्याण, भला
भनई, क्रि० वा० कहते हैं
भनित, ना० वा० भा० पुं० भणित कविता
भनी, क्रि० वि० कह करके
भनु, वि० क्रि० कहो, कहते हो
भने, वि० क्रि० वा० कहे
भनंता, क्रि० वा० कहते हैं
भभरि, क्रि० वि० घबरा करके
भभरा, वि० भा० पुं० घबराया
भयानक, ना० वा० सं० नपुं० १ भयंकर २ रसविशेष
भयावहा, वि० भा० पुं० डरानेवाला
भरा, वि० भा० पुं० १ बोझा २ पोषणा, पोसना ३ धारण
भरन, ना० वा० भा० पुं० १ धारण २ पोषण
भरनी, ना० वा० भा० स्त्री० १ एक नक्षत्रकानाम २ सर्पकुलवर्णन, गीत ३ भूसजोब्रजदेशमेंप्रसिद्धहै
भरि, ना० वा० भा० पुं० पूरन
भरिता, ना० वा० भा० पुं० पूरन
भव, भा० वा० सं० पुं० १ संसार २ शिव ३ जन्म ४ भया, हुआ
भवदंघ्रि, वि० सं० पुं० आपकाचरण
भवन, ना० वा० सं० नपुं० घर
भवन्त, वि० भा० पुं० आपकी
भवांबुनाथ, ना० वा० सं० पुं० संसार समुद्र
भवंर, ना० वा० भा० पुं० १ नदीका चकोह २ भौंरा, भ्रमर
भा, ना० वा० सं० स्त्री० प्रकाश, चमक
भाउ, ना० वा० भा० पुं० १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जन्म
भाग, ना० वा० पुं० भा० १ बखरा, हिस्सा २ भाग्य, नसीब
भाजन, ना० वा० सं० नपुं० पात्र, बरतन
भाथा, ना० वा० भा० पुं० तरकश
भानु, ना० वा० सं० पुं० सूर्य
भांड़े, ना० वा० ब० व० पुं० भा० बरतन, भांड़
भामा, ना० वा० सं० स्त्री० स्त्री
भामिनि, ना० वा० सं० स्त्री० १ स्त्री, क्रोधयुक्ता
भायप, भा० वा० पुं० भा० भाईपना
भाये, वि० ब० व० पुं० १ भाव २ सुन्दर
भारती, ना० वा० सं० स्त्री० सरस्वती
भाल, ना० वा० सं० पुं० माथा
भाव, १ प्रेम २ भावना ३ सत्ता ४ जनु
भावन, ना० वा० सं० पुं० सोहात, अच्छालगता
भावी, वि० सं० पुं० होनहार
भाषा, वि० सं० पुं० कहा, भाषना, कहना
भाष, क्रि० वा० व० ब० कहे, भाषना, कहना
भिन्न, वि० सं० क्रि० अलग, जुदा फूट गया
भिंदिपाल, ना० वा० सं० पुं० ढेलवांस
भीती ना० वा० भा० स्त्री० १ भय भीति, २ दीवार
भीम, ना० वा० सं० नपुं० भयंकर
भीरा० ना० वा० भा० पुं० १ बोझा २ भीड़ ३ डर
भीरु, ना० वा० सं० पुं० डरपोकना
भुजंग, ना० वा० सं० पुं० सांप
भुवन, ना० वा० सं० नपुं० ब्रह्मांड
भुवाल, ना० वा० भा० पुं० भूपाल, राजा
भुवि,० ना० वा० अ० सं० स्त्री० पृथ्वी, पृथ्वी में
भुवंग, ना० वा० सं० पुं० भुजंग, सांप
भुवंगिनि, ना० वा० सं० स्त्री० भुजंगिनी, सांपिन
भुंजब, भविष्यत्क्रिया भोग करेगा,
भूत, ना० वा० सं० पुं० १ जीव २ प्रेत ३ भयाहुआ
भूतल, ना० वा० अ० पृथ्वी में, भूमिपर
भूति, ना० वा० सं० स्त्री० १ सम्पदा, ऐश्वर्य २ मोक्षमुक्ति, ३ राख, विभूति
भूधर, ना० वा० सं० पुं० १ पहाड़ २ शेषनाग
भूप, ना० वा० सं० पुं० राजा
भूमिनाग, ना० वा सं० पुं० पृथ्वीपर के सांप
भूरि, अव्य० गु० वा० बहुत

परिमाण
माधुरी, भा० वा० सं० स्त्री० मिठाई माधुर्य
मान, ना० वा० सं० पुं० अहंकार, अभिमान
मानस, ना० वा० सं० पुं० १ तलाव, सरोवर २ मन
मानस, ना० वा० भा० पुं० मूल, सरयूनदी
मानसिक, वि० पुं० सं० मनद्वारा, मनसम्बन्धी
मानिक, ना० वा०सं० पुं० जवाहिर, लाल
मान्यता, भा०वा०सं० पुं० पूज्यता, मान
मापा, वि० पुं० भा० व्यापा, मापना, व्यापना
मापी, वि० स्त्री० भा० मतवारी
माया, ना० वा० सं० स्त्री० १ दया २ त्रिगुणा शक्ति ३ कपट
मायापति, ना० वा० सं० पुं० रामचंद्र
मायिक, ना० वा० सं० पुं० मिथ्या, मायासम्बन्धी
मार, ना० वा० सं० पुं० १ कामदेव २ मारना
मारगन, ना०वा० भा० पुं० १मार्गण, बाण, तीर २ खोजना
मारीच, ना० वा० सं० पुं० एकराक्षसका नाम

मारुत, ना० वा०सं० पुं० पवन, बायु
मारुति, ना० वा० सं० पुं० हनुमान
माल, ना० वा० सं० पुं० १ समूह २ कुश्तीबाज ३ माला, हार
मालव, ना० वा० सं० पुं० सजल, मालवा देश
माला, ना० वा० सं० स्त्री० १ पंगति, पंक्ति २ हार, माला
माष, ना० वा० सं० पुं० क्रोध
माखी, ना०वा० भा० स्त्री० १ मच्छी २ शहद
मासा, ना०वा०भा० पुं० मांस, महीना
माहुर, ना० वा० भा०पुं० जहर, बिष
मां, क० वा० पुं० मुझको
मिति, ना० वा० सं० पुं० १ अन्त २ मर्याद ३ थोड़ासा ४ नाप
मिथिला, ना० वा० सं० स्त्री० एक नगरी का नाम
मिथिलेसि, ना० वा० स्त्री० भा० जनकजी की रानीका नाम
मिलित, वि० सं० कृ० पं० युक्त, मिलाहुआ
मिसु, ना०वा० पुं०भा० बहाना, मिस
मीच, ना० वा० भा० पुं० मृत्यु, मौत
मीन, ना० वा० स्त्री० सं० मछरी
मीला, क्रि० वि० मिल करके
मुकुता, ना०वा०भा०पुं०मुक्ता, मोती
मुक्ताहल, ना०वा०भा० पुं० मुक्ताहल, मोती

मुकुर, ना० वा० सं० पुं० दर्पण
मुकुन्द, ना० वा० सं० पुं० मुक्तिदाता
मुखर, ना० वा० सं० नपुं० १ शब्द २ बकवादी
मुखागर, ना० वा० भा० पु० जुबानी
मुठभेरी, अपादानकारक० निकट से नगीच से
मुदित, वि० सं० कृ० पुं० हर्षित, खुश
मुद्रिका, ना० वा० सं० स्त्री० मुँदरी, अँगूठी
मुधा, अव्य० झूठ
मुनिपट, ना० वा० सं० पुं० बोकले का कपड़ा
मुनिराजू, ना० वा० सं०पुं० मुनिराज, वशिष्ठजी
मुनिवर, ना० वा० सं० पु० मुनिश्रेष्ठ शुक्राचार्य
मुनिन्दा, ना० वा० भा० पुं० मुनीन्द, मुनियों में प्रधान
मूक, ना० वा० सं० पुं० गूंगा
मूरि, ना० वा० पुं० भा०मूल, जड़ी, वा जमा, मूल
मूल, ना० वा० सं० नपुं० १ जड़ २ कारन ३ पूंजी
मूलक, ना० वा० सं० नपुं० मूली
मूषक, ना वा० सं० पुं० चूहा, मूसा
मृगपति, ना० वा०सं० पुं० सिंह
मृगजल, ना०वा०सं०पुं० मृगतृष्णा
मृगमद, ना० वा० सं० नपुं० कस्तूरी

मृगया, ना० वा० सं० स्त्री० शिकार
मृगराज, ना० वा० सं० पुं० सिंह
मृगाधीश, ना० वा० भा० पुं० सिंह
मृदु, ना० वा० सं० नपुं० कोमल
मृदुल, ना० वा० सं०नपुं० कोमल
मृनाल, ना० वा०भा० पुं० कमलकी जड़
मृषा, अव्य० झूठ
मेकलसुता, ना० वा० सं०स्त्री० नर्मदा नदी।
मेघडंबर, ना०वा०भा०पुं०छत्रविशेष
मेचक, ना० वा० सं० पुं० श्याम
मेडुकनि, ना०वा०भा०स्त्री०मेन्फुका
मेदिनी, ना० वा० सं० स्त्री० पृथ्वी
मेधा, ना० वा० सं० स्त्री० बुद्धि
मेरु, ना० वा० सं० पुं० सुमेरुपर्वत
मेलो, ना० वा० भा० स्त्री० डाली, मेलना, डालना
मेष, ना० वा० सं० पुं० मेंढ़ा
मेखला, ना०वा०भा० स्त्री० करधनी
मैना, ना० वा० सं० स्त्री० पार्वतीकी माताका नाम
मैनाक, ना० वा० सं० पुं० एकपर्वत का नाम
मोई, क० वा० मोही, मोना, मोहना
मोचन, ना० वा० सं० पुं० छोरना
मोद, ना० वा० सं० पुं० हर्ष, खुशी
मोदक, ना० वा० सं० पुं० लड्डू
मोरपच्छ, ना० वा० भा० पुं० मोरकी पांख
मोरहुति, मेरी ओरसे सं० वा०
मोर, ना० वा० सं० पुं० अज्ञान
मोहमय, ना० वा० सं० पुं झूठा
मौलि, ना० वा० सं० पुं० माया
मंगलद्रव्य, ना०वा० सं०पुं०पुष्पादि
मंच, ना० वा०सं०पुं० मचानतखतपोश
मंजिर, ना० वा० सं० पुं० पांवका भूषण, पायजेब आदि
मंजुल, ना० वा० सं०पुं० सुन्दर
मंडन, ना०वा०सं०नपुं०भूषण, गहना
मंडल, ना० वा०सं० पुं० १ चौरस २ तेज
मंडली, ना० वा० सं०स्त्री० समूह
मंडलिक, ना०वा० सं० पुं०मंडलेश्वर, राजा
मंडित, वि०सं०कृ०पुं०भूषित, शोभित
मंत्र, ना० वा० सं० पुं० १ रामतारक आदि मंत्र २ सलाह, उपदेश
मंत्रराज, ना० वा० सं०पुं० रामतारक मंत्र
मंद, ना०वा०सं० पुं० १ नीच २ धीरे ३ अभागी ४ मूढ़
मंदतर, ना० वा० सं० पुं० अतिनीच
मंदर, ना०वा०सं० पुं०मंदराचलपर्वत
मंदाकिनी, ना०वा०सं०स्त्री०गंगाजी

य

यहु, दर्शक सर्वनाम- यहसमय
यावत, अव्य० जबतक, जितना,
ये, स०ना० वा० पुं० सं० जो लोग, जे, यह
यं, स० ना० कर्म० सं० पुं० जिसको

र

रघुनाथ, ना० वा० सं० पुं० १ दशरथ जी २ रामचन्द्रजी
रघुराज, ना० वा० सं०पुं० १ दशरथ जी २ रामचन्द्रजी
रच्छक, ना० वा० भा० पुं० रक्षक, रखवार
रज, ना० वा० सं० नपुं० धूर
रजत, ना०वा०भा० नपुं०चांदी, रूपा
रजधानी, ना० वा० सं० स्त्री० राजधानी, राजाके रहने की जगह
रजनी, ना०वा० सं० स्त्री० रात्रि, रात
रजाई, ना० वा० भा० स्त्री० आज्ञा
रजायस, ना०वा०भा०स्त्री०राजाज्ञा, आज्ञा
रजु, ना० वा० सं० स्त्री० रज्जु, डोरी
रट, ना० वा० सं० स्त्री० बोलना
रतनारे, गु०वा०व०भा०पुं०व०लाल रंग
रति, ना० वा० सं० स्त्री० १ प्रीति २ कामदेव की स्त्री
रथांग, ना० वा० सं० नपुं० चकई चकवा
रथी, ना० वा० वि० सं० पुं० रथयुत
रद, ना० वा० सं० पुं० दांत

भूर्जतरु, ना०वा० सं० पुं० भोजपत्र वृक्ष
भूषित, वि० सं० कृ० भूषणयुक्त, शोभित
भूसुर, ना० वा० सं० पुं० ब्राह्मण
भृकुटि, ना० वा० सं० पुं० भौंह
भृगुनाथ,ना०वा०सं० पुं० परशुराम
भे, वि० ब० व० पुं० भा०भये, हुए
भेई, ना० वा० भा० स्त्री० गीली, भिगोया, भेवना, भिगोना
भेऊ, वि० क्रि० भेदपदको देखो
भेक,ना० वा० सं०पुं०मेडक,मेकुका
भेंट, ना० वा० भा० पुं० १ मिलना, मुलाकात २ नजर, भेंट, पूजा
भेद, ना० वा० सं० पुं० १ जुदाई २ फूटकरना, तोड़ना ३ मर्म
भेरी, ना० वा० सं० पुं० १ बड़ा नगारा २ बड़ा मुंहवाला पीतरका बाजा
भेव, ना० वा० भा० पुं० १ जुदाई २ भेद, मर्म्म, ३ फूटकरना, तोड़ना
भेष, ना० वा० सं० पुं० भेस
भेषज,ना० वा० सं० नपुं० औषध, दवाई
भोग, ना० वा०सं० पुं०सुगन्धादिक, भोग, विलास, सुखउठाना
भोगवति, ना० वा० सं० स्त्री० भोगवती, सर्पनगरी
भोजनखानी, ना० वा० भा० पुं० रसोईकाघर
भोरा, ना० वा०भा०पुं० दोष,भोला, सूधा
भोरी, ना० वा० वि० भा० स्त्री० भोली, सीधी
भोरे, निश्चयात्मकवाक्य, भूलकोभी
भौम, ना० वा० सं० पुं० मंगलग्रह
भंग, ना० वा० सं० पुं० १ नाश २ टेढ़ाई
भंजन, वि० ना० वा० सं० नपुं० १ नाश २ नाशकरनेवाला
भृंग, ना० वा० सं० पुं० भ्रमर,भौंरा
भृंगी, ना० वा० सं० पुं० महादेवका गण
भ्रम, ना० वा० सं० पुं० भूलना, धोखा
भ्राजा, ना० वा० वि० सं० शोभित, भ्राजना, सोभना
भ्रू, ना० वा० सं० स्त्री० भौंह

म

मइके, ना० वा० अ० भा० पुं० नैहर, माताका घर
मकु, अव्य० बरुक, बल्कि
मकर, १ दशईराशि २ मच्छ ३ मगर
मकरी, ना० वा० सं० स्त्री० मछरी
मकरन्द,ना०वा०सं०पुं०फूलका रस
मख, ना० वा० सं० पुं० यज्ञ
मग, ना० वा० सं० पुं० १ मार्ग्ग, रास्ता, २ मगध, मगह
मगन, ना० वा० भा० पुं० मग्न, १ डूबा, लवलीन, प्रसन्न, खुश
मघवा, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
मघवान, ना० वा० सं० पुं० इन्द्र
मज्जहिं, क्रि० वा० नहाते हैं
मज्जा, ना० वा० सं० स्त्री० चरबी
मझारी, अ०वा० मध्य,भीतर, मांझ
मत, ना० वा० सं० पुं० सलाह
मति, ना० वा० सं० स्त्री० बुद्धि
मत्सर, ना० वा० सं० पुं० ईर्षा, डाह
मद, ना० वा० सं० पुं० १ अभिमान २ मदिरा, शराब
मदन, ना० वा० सं० पुं० कामदेव
मधु, ना०वा०सं० पुं० १ चैत महीना २ मकरन्द, फूलका रस ३ सहद ४जल ५बसन्त ६ एक दैत्यकानाम
मधुकर, ना०वा० सं० पुं० भौंरा,भ्रमर
मधुप, ना० वा० सं० पुं० भ्रमर,भौंरा
मधुपर्क, ना० वा०सं० नपुं० दही शहद घी मिलाहुआ कांसेके पात्रमें
मधुर, गु० वा० सं० पुं० मीठा, सुंदर
मध्यगति,ना०वा०सं० पुं० उदासीन
मध्यदिवस,ना० वा०सं०पुं० दोपहर
मध्यम, ना० वा० सं० नपुं० उदासीन, बिचवैत
मनजात, ना० वा०सं० पुं० मनोजात, कामदेव
मनमथ ना० वा० सं० पुं० मनमथ, कामदेव

मनमारे, ना०व्रा० भा० पुं०क्रि० वि० उदास
मनसहिं, ना० वा० अधि०वा० भा० पुं० मनमें
मनसा, ना० वा० भा० स्त्री० इच्छा मन
मनसिज, ना० वा० सं० नपुं० कामदेव
मनाक, अव्य० मनाक, थोड़ासा
मनि, ना० वा० भा० पुं० मणि, सर्प के शिरमेंकी मणि, शिरोमणि
मनियारा, ना० वा० वि० भा० पुं० मणियुत
मनुज, ना० वा० सं० पुं० मनुष्य, आदमी
मनुजाद, ना० वा० सं० पुं० राक्षस
मनुसाई, भा० वा० पुं० भा० पुरुषारथ
मनोज, ना० वा० सं० नपुं० कामदेव
मनोभव, ना० वा० सं० पुं० कामदेव
मनोभूत, ना० वा० सं० पुं० कामदेव
मनोरथ, ना० वा० सं० पुं० अभिलाष, इच्छा
मनोरम, ना० वा० सं० पुं० सुन्दर
मम, सम्बन्ध० वा० सं० ना० मेरा, ममता
मय, ना० वा० सं० पुं० १ कारज २ बहुत प्राचुर्य ३ प्रधान ४ रूप ५ असुरविशेष
मयत्री, ना० वा० भा० स्त्री० मैत्री, मित्रता
मयन, ना० वा० भा० पुं० कामदेव
मयूष, ना० वा० सं० पुं० किरण
मयंक, ना० वा० सं० पुं० चन्द्रमा
मरकत, ना०वा० सं०पुं० नीलमणि
मरकट, ना०वा०सं०पुं० मर्कट, वानर
मरजाद, ना०वा० भा० पुं०१मर्याद, हद २ रीति
मरम, ना० वा० भा० पुं० १ भेद २ हृदय आदि अंग
मराल, ना० वा० सं० पुं० हंस
मरु, ना० वा० सं० पुं० निर्जलदेश
मर्दिन, ना० वा० वि० सं०भा० पुं० नाश करनेवाला
मर्दि, क्रि० वि० मल करके
मर्मी, ना० वा० वि० पुं० भेदी
मल, ना० वा० सं०नपुं०१पाप२मैल
मलय, ना० वा० सं० पुं० चन्दन
मलान, ना० वा० भा० पुं० म्लान, मैला, उदास
मलिन, ना०वा० भा० पुं०मैला, उदास
मष्ट, ना० वा० सं० पुं० चुप
मसक, ना० वा० भा० पुं० १ मच्छर, २ बिलार
मसि, ना० वा० सं० स्त्री० स्याही, रोशनाई
महति, ना० वा० भा० स्त्री० महती बड़ी
महा, गु० वा० सं० पुं० बड़ा
महागद, ना० वा० सं० पुं० बड़ारोग
महान, ना० वा० सं० पुं० बड़ा, महत्तत्त्व
महामनि, ना० वा० भा० पुं० जहरमोहरा आदि
महामोह, ना० वा० सं० पुं० अज्ञान
महिदेव, ना० वा० सं० पुं० महीदेव, ब्राह्मण
महिपाल, ना० वा० सं० पुं० महीपाल, राजा
महिषी, ना० वा० सं० स्त्री० १ भैंस २ पटरानी
महिषेस, ना० वा० पुं० भा० महिषेश, १ महिषासुर २ यमराज
महीधर, ना० वा० सं० पुं० पहाड़
महीसुर, ना० वा० सं० पुं० ब्राह्मण
महेस, ना० वा० भा० पुं० महेश, महादेव
महोत्सव, ना० वा० सं० नपुं० बड़ा उत्सव, महोच्छो
महोष, ना० वा० सं० पुं० एकप्रकार का पक्षी
माजा, ना० वा० सं० पुं० नये वर्षा के जलका फेन
माझ, मध्य, बीच
मातलि, ना० वा० सं० पुं० इन्द्रका सारथी
मातहि, वि० मतवारा
मात्र, अव्य० वहीभर, उतनाही,

रद्पट, ना० वा० सं० पुं० होठ, ओठ
रन, ना० वा० भा० पुं० रण, युद्ध
रनिवास, ना० वा० भा० पुं० १ रानी आदि २ जनाना स्थान
रबि, ना० वा० सं० पुं० रबि, सूरज
रबिनंदिनि, ना० वा० सं० स्त्री० रविनंदिनी, यमुनानदी
रमन, ना० वा० सं० पुं० रमण, पति २ व्यापक ३ क्रीड़ा
रमा, ना० वा० सं० स्त्री० लक्ष्मी
रम्य, ना० वा० सं० पुं० सुन्दर
रय, ना वा० सं० पुं० वेग, जलदी
रये, वि० व० व० रंगे
रवनी, ना० वा० भा० स्त्री० रमणी, स्त्री
रवन, ना० वा० भा० पुं० रमण, पति
रविमनि, ना० वा० भा० पुं० सूर्यकांत मणि
रस, ना० वा० सं० पुं० १ विषय २ सार ३ बल ४ मधुरआदि ५ शृंगार आदि ६ प्रेम ७ धीरे
रसना, ना० वा० सं० स्त्री० जीभ
रसा, ना० वा० सं स्त्री० पृथ्वी
रसाल, गु० वा० सं० पुं० १ मीठा, आमका पेड़, रसालय
रसिक, वि० सं० पुं० रसका जानने वाला
रहसि, ना० वा० अधि० सं० पुं० १ हर्ष २ एकांत

रहस्य, ना० वा० सं० पुं० गुप्ततत्त्व, भेद
राउत, ना० वा० भा० पुं० सरदार
राउर, ना० वा० भा० पुं० १ आपका २ राजमंदिर
राऊ, ना० वा० भा० पुं० राजा
राका, ना० वा० सं० स्त्री० पूर्णमासी
राकेस, ना० वा० भा० पुं० राकेश, पूर्णचन्द्र
राचा, वि० भा० पुं० लगा, राचना, लगना
राजत, ना० वा० भा० पुं० सोहता, शोभता, राजना, सोहना
राजति, क्रि० वा० सोहती है
राजनय, ना० वा० सं० पुं० राजनीति
राजी, ना० वा० वि० भा० स्त्री० १ राजि, पंगति २ प्रसंग ३ शोभित
राजीव, ना० वा० सं० पुं० कमल
राजे, ना० वा० वि० ब० व० प्रसन्न
राता, ना० वा० वि० पुं० सं० रत, प्रीतियुत
रामायुध, ना० वा० सं० पुं० धनुष, बाण
राय, ना० वा० सं० पुं० १ राजा २ धन
रायमुनि, ना० वा० सं० पुं० लाल नाम पक्षी
रार, ना० वा० सं० पुं० झगड़ा
रासभ, ना० वा० सं० पुं० गधा
रासि, ना० वा० भा० पुं० राशि, ढेरी, समूह
राहु, ना० वा० सं० पुं० ग्रहविशेष
रिच्छेस, ना० वा० भा० पुं० जामवन्त
ऋतुराज, ना० वा० सं० पुं० ऋतुराज, वसन्त
रिपु, ना० वा० सं० पुं० वैरी
रिपुसूदन, ना० वा० सं० पुं० शत्रुघ्न
रिषि, ना० वा० सं० पुं० ऋषि, सूक्ष्मदर्शी
रिष्ट, गु० वा० सं० पुं० हर्षित, खुश
रिषिनायक, भा० वा० सं० पुं० ऋषिनायक, अत्रिऋषि
रिसानी, ना० वा० भा० पुं० क्रोध, क्रुद्धभई, रिसाना
रीते, ना० वा० भा० पुं० खाली
रुख, ना० वा० भा० स्त्री० १ सन्मुख २ क्रोध ३ दयादृष्टि
रुज, ना० वा० सं० पुं० रोग
रुह, ना० वा० सं० कृ० पुं० उत्पन्न
रुण्ड, ना० वा० सं० पुं० धड़
रूंधहु, वि० क्रि० कांटाका खांचा
रूरी, ना० वा० भा० स्त्री० सुन्दर
रेख, ना० वा० भा० स्त्री० १ रेखा, लकीर २ गिनती
रेता, ना० वा० भा० स्त्री० रेत, बालू
रेनु, ना० वा० भा० स्त्री० रेणु, धूर
रेसू, ना० वा० भा० स्त्री० ईर्षा
रेंगाई, भा० वा० भा० स्त्री० चलाई, रेंगाना, चलाना

रोचन, ना० वा० सं० पुं० १ गोरोचन २ हरदी

रोदन, ना० वा० सं० नपुं० रोना

रोदिति, क्रि० वा० रोता है

रोमपाट, ना० वा० भा० पुं० ऊनी कपड़ा

रोष, ना० वा० सं० पुं० क्रोध

रोहिनि, ना० वा० स्त्री० भा० रोहिणी, चन्द्रमा की स्त्री

रोहु, क्रि० वा० रोकना

रौताई, भा० वा० स्त्री० भा० सरदारी

रंक, ना० वा० सं० पुं० निर्धन

रंगभूमि, ना० वा० सं० स्त्री० धनुषयज्ञ की भूमि, रणभूमि

रंजनि ना० वा० भा० स्त्री० रञ्जिनी, हर्ष देनेवाली

रन्तिदेव, ना० वा ० सं० पुं० एक राजाका नाम

रंध्र, ना० वा० सं० पुं० छेद

ल

लकुट, ना० वा० सं० पुं० लकड़ी

लगि, क्रि० वि० १ वास्ते २ तक ३ अवलम्ब

लघु, ना० वा० सं० पुं० १ हलुका २ थोड़ा ३ छोटा

लघुता, भा० वा० स्त्री० भा० हलुकई

लघुनाथम, ना० वा० सं० पुं० लछिमन

लछ, ना० वा० भा० पुं० १ निशान, लच्छन २ ब्रह्म

लच्छा, ना० वा० भा० पुं० लक्ष, लाख, १०००००

लछि, ना० वा० भा० स्त्री० लक्ष्मी

लटत, क्रि० वा० मरताहै, लटना

लय, ना० वा० सं० पुं० १ चित्तवृत्ति २ नाश

ललना, ना० वा० स्त्री० सं० स्त्री

ललाट, ना० वा० सं० पुं० माथा

ललाम, ना० वा० सं० पुं० १ श्रेष्ठ २ रतन

ललित, ना० वा० सं० पुं० सुन्दर

लव, ना० वा० सं० पुं० १ अंश २ अल्प ३ काल

लवन, ना० वा० भा० पुं० लवण, नोन

लवनसिंधु, ना० वा० पुं० भा० लवणसिंधु खारा समुद्र

लवा, ना० वा भा० पुं० पक्षीविशेष

लवाई, क्रि० वि० १ नई बिआई गौ २ लिवा करके

लषन, ना० वा० भा० पुं० १ लक्ष्मण २ देखना

लषहीं, क्रि० वा० देखते हैं, लखना, देखना

लषाऊ, ना० वा० भा० पुं० १ चिह्न २ जानना

लसत, क्रि० वा० सोहत, लसना, सोहना

लाई, संप्रदान कारक-वास्ते, लिये

लागू, ना० वा० भा० पुं० आधार, लाग

लाघव, ना० वा० सं० पुं० १ शीघ्र २ हलका

लाजा, ना० वा० सं० स्त्री० १ लावा २ लज्जा

लाटी, ना० वा० भा० पुं० तारू आदि सूखे

लालसा, ना० वा० सं० स्त्री० इच्छा

लाली, ना० वा० सं० स्त्री० दुलारी, लालना, दुलारना

लावक, ना० वा० सं० पुं० लवा

लावन्य, ना० वा० भा० पुं० लावण्य, शोभा

लाहू, ना० वा० भा० पुं० लाभ

लांघे, ना० वा० वि० ब० व० पाये

लिलहिं, करण कारक लीला से, विनाश्रम

लिलार, ना० वा० भा० पुं० ललाट, माथा

लीका, ना० वा० सं० स्त्री० १ लीक, मर्यादा, २ रेखा ३ गिनती

लुठन, क्रि० वा० लोटना, लुठन

लुबुध, ना० वा० भा० पुं० लुब्ध, लोभी

लूक, ना० वा० सं० पुं० तारा, लुक

लेखई, क्रि० वा० लखतीहै, देखती है

लेखति, क्रि० वा० खोदती है

लेखा, ना० वा० सं० स्त्री० १ रेखा २ देवता, ३ लखा, देखा ४ हिसाब

लेस, ना० वा० भा० पुं० लेश, थोड़ासा

लोई, ना० वा० भा० पुं० लोग

लोक, ना० वा० सं० पुं० १ जगत् २ संतानिक आदि
लोकप, ना०वा० सं०पुं० लोकपाल इन्द्रादि
लोगाई, जा० वा० स्त्री० भा० स्त्री, मेहरारू
लोना, गु० वा० भा० पुं० सुन्दर
लोनाई, भा०वा०भा० स्त्री० सुंदरता
लोयनि, ना० वा० भा० पुं० आंख
लोला, ना०वा०सं०पुं०लोल,चंचल
लोलुप, ना० वा० सं० पुं० लंपट
लोवा, ना० वा० भा० स्त्री० लोमड़ी
लोह, ना० वा०सं० पुं० लोहा,शस्त्र

स

सई, ना० वा०भा०स्त्री० एकनदीका नाम
सक, ना० वा० भा० पुं० १ संदेह २ समर्थ
सकरून, वि० सं० पुं० सकरुण,करुनाकेसाथ, दीनताकेसाथ
सकल, ना०वा०नपुं० सं० १ सब २ कलाकेसाथ, विद्यायुत ३सावयव
सकाना, वि० भा० पुं० डरा, डरना
सकाली, ना० वा० वि० स्त्री० भा० सकुचानी, सकालना, सकुचाना
सकिलि, क्रि० वि० बटुरकरके,इकट्ठा होकरके,सकिलना,बटुरना
सकुनि, ना०वा०भा० स्त्री० शकुनि, पक्षी, चिड़िया

सकृत, अव्य० १ एक २ एकबार
सकेलि, क्रि० वि० बटोरकरके, सकेलना, बटोरना
सक्की, ना० वा० भा० स्त्री०१ शक्ति, बल २ स्त्री ३ बरछी
सक्क, ना० वा० स्त्री० भा० शक्र,इन्द्र
सखर, ना० वा० वि० पुं० खरसमेत राक्षस
सगरे, ना० वा० वि०ब० व०पुं०भा० सब, सकल
सगर्भ, वि० सं० पुं० तात्पर्ययुत
सगलानि, ना० वा० भा० पुं० १ सग्लानि, निरादर से २ ग्लानि के साथ, हर्षबिना
सगाई, ना० वा० भा० स्त्री० नाता
सचान, ना० वा० पुं० भा० सिकरा, पक्षीविशेष
सचिव, ना० वा० सं० पुं० मंत्री
सची, ना० वा० स्त्री० भा० इंद्राणी
सचु, ना० वा० भा० पुं० सुख, आनंद
सचेता, ना० वा० भा० पुं० सचेत, सावधान
सजग, ना० वा० वि० भा० पुं० सावधान, खबरदार
सजनी, ना० वा० सं० स्त्री० सखी
सजाई, ना० वा० भा० स्त्री० १ दंड, सजा, २ साजकरके, साजना
सजिव, ना० वा० भा० पुं० सजीव १ सुखसे जीना २ प्राणसहित

सजोवन, ना० वा० भा० पुं० तयारी
सठ, ना० वा० भा० पुं० शठ, मूर्ख
सडसिन्ह,ना० वा० भा० स्त्री०सनसि
सत, ना० वा० सं० पुं० १ साधु २ अविनाशी ३ शत, सौ ४ अच्छा
सतपंच, ना० वा० सं० पुं० सातपांच
सतरूपा, ना० वा० सं० पुं० स्त्री० मनुकी स्त्रीका नाम
सतानन्द, ना० वा० सं० पुं० जनकजीके पुरोहित का नाम
सति, ना० वा० सं० स्त्री० सूधा,सीधा
सती, ना० वा० सं० स्त्री० १ पतिव्रता २ दक्षकी बेटी
सत्यलोक, ना०वा०भा०पुं०ब्रह्मलोक
सद, ना० वा० सं० पुं० श्रेष्ठ, बैठने वाला
सदन, ना० वा० सं० नपुं० घर
सदय, ना० वा०वि० सं०पुं० दयासहित
सदाचार, ना० वा० वि० सं० पुं० श्रेष्ठ आचार, अच्छाआचरण है जिसका
सदैव, अव्य० सदाही, सदा,हमेशा
सद्य, अव्य० जलदी, उसीकाल से
सन, अव्य० से, साथ
सनकादि, ना० वा० सं० पुं० सनक आदि चार ब्रह्माके बेटे
सनकार, क्रि० वा० इशारा क्रिया सनकारना, इशाराकरना

सनाथ, ना० वा० वि० सं० पुं० १ स्वामीसहित २ कृतार्थ
सनाह, ना० वा० वि० सं०पुं० १ बख्तर २ सनाथ, पतिकेसाथ
सपच्छ, ना० वा० सं० पुं० सपक्ष पंख सहित
सपथ, ना० वा० भा० पुं० शपथ, सौगन्द
सपदि, अव्य० जलदी, तुरन्त
सपरव, ना० वा० वि० सं० पुं० सपर्व गांठके साथ
सपेला, ना० वा० भा० पुं० सांपका बच्चा
सप्त, सं० वा० सं० पुं० सात
सप्तावरन, ना० वा० भा० पुं० प्रकृति आदि सात आवरण
सभीत, ना० वा० वि० सं० पुं० डरके साथ
सम, ना० वा० सं० पुं० १ बरोबर २ वासनाकात्याग ३ रागद्वेषरहित
समदरसी, ना० वा० भा० पुं० समदर्शी, बरोबर देखनेवाला
समदि, क्रि० वि० पूजा करके
समन, ना० वा० भा० पुं० १ शमन, नाश २ यमराज
समय, ना० वा० सं० पुं० १ काल २ अच्छेदिन
समरग्स, ना० वा० सं० पुं० वीररस
समंपे, क्रि० वि० सौंपे, समर्पना

समस्त, ना० वा० सं० नपुं० सब
सम्यक, अव्य० अच्छीभांति
समागत, ना० वा० सं० पुं० सभा
समाज, ना० वा० सं० पुं० १ सभा २ समूह
समाधि ना० वा० सं० स्त्री० १ सुख २ स्थिरता
समान, ना० वा० सं० नपुं० १ बरोबर २ प्रवेश, समाना
समिध, ना० वा० सं० स्त्री० लकड़ी
समास, ना० वा० सं० पुं० संक्षेप, थोड़ा
समीती, ना० वा० भा० स्त्री० मिताई, दोस्ती
समीप, ना० वा० सं० नपुं० निकट, नियरे
समीर, ना० वा० सं० पुं० पवन, हवा
समीहा, ना० वा० सं० पुं० कायादिक तीनका व्यवहार
समुदाई, ना० वा० भा० पुं० समुदाय, समूह
समुहानी, ना० वा० भा० पुं० सन्मुख भई, समुहाना, सन्मुखहोना
सय, सं० वा० भा० पुं० सौ १००
सयन, ना० वा० भा० पुं० १ सेवना २ शय्या ३ इशारा
सर, ना० वा० सं० पुं० १ तालाब २ बाण ३ चिन्ता
सरद, ना० वा० भा० पुं० शरद, एकऋतु का नाम

सरपि, ना० वा० भा० पुं० घी
सरल ना० वा० सं० पुं० १ सीधा २ सड़ा
सरवरि, ना० वा० भा० पुं० बराबरी
सरवरी, ना० वा० भा० स्त्री० रात्रि, रात
सरस, ना० वा० सं० पुं० १ प्रेम सहित २ मकरन्दसमेत
सरसई, ना० वा० सं० स्त्री० सरस्वती नदी
सरसीरुह, ना० वा० सं० पुं० कमल (तलाव में जो पैदाहो)
सरासन, ना० वा० भा० पुं० धनुष
सरासुर, ना० वा० भा० पुं० बाणासुर
सरि, ना० वा० सं० स्त्री० नदी
सरित, ना० वा० सं० स्त्री० नदी
सरिस, ना० वा० भा० पुं० समान, बराबर
सरुज, ना० वा० सं० पुं० रोगी, बिमरिहा, रोगयुक्त
सरुष, ना० वा० सं० पुं० क्रुद्ध, क्रोध सहित
सरेन, ना० वा० करण कारक-सरसे, बाण से
सरोज, ना० वा० सं० नपुं० पद्म, कमल
सरोरुह, ना० वा० सं० नपुं० कमल
सरौं, ना० वा० भा० पुं० डरड
सर्व० ना० वा० सं० पुं० १ सब, स-

कल, २ सबरूप
सर्वकाल, ना०वा० सं० पुं० सबदिन
सर्वज्ञ, ना० वा० सं० पुं० सबजाननेवाला
सर्वदा, अव्य० सब दिन, हमेशा
सलभ, ना० वा० सं० पुं० पतंग, फतिंगा
सलिल, ना० वा० सं० नपुं० पानी, जल
सलोक, ना० वा० सं०पुं० यश, जस
सलोने, ना० वा० भा० पुं० सुन्दर
सव, ना० वा० भा० पुं० शव, मुर्दा
सबीज, ना० वा०वि०सं० पुं० बीजाक्षर सहित
सस, ना० वा० सं० पुं० शशा, खरहा खरगोश
ससक, ना० वा० सं० पुं० शशक, खरहा
ससि, ना० वा० भा० स्त्री० १ शशि चंद्रमा २ खेती
ससिरस, ना० वा० सं० पुं० शशिरस, अमृत
सह, अव्य० समेत, सहित
सहगामिनी, ना०वा०सं० स्त्री० सती
सहज, ना० वा० सं० नपुं० स्वाभाविक, स्वभाव से पैदाहुआ
सहनी, ना० वा० भा० पुं० दरोगा
सहम, ना० वा० सं० पुं० १ डर २ बेफिकिर

सहरोसा, ना०वा०भा० पुं०१ उत्साह २ रोषसहना, क्रोधसहना
सहस, सं०वा० भा०पुं० सहस, हज़ार
सहस्रबाहु, ना० वा० भा० पुं० सहस्रबाहु, सहस्रभुज राजा
सहसा, ना० वा० भा० स्त्री० १ जल्दी २ हठ ३ बिना विचारके
सहसाखी, ना० वा० भा० पुं० १ सहस्राक्षि, हजार आंख रखनेवाला, इन्द्र २ गवाहसमेत, साखीसहित
सहसानन, ना० वा० भा० पुं० शेषनाग, हज़ारमुंह रखनेवाला
सहाया, ना० वा० भा० पुं० १ साथ २ मददगार, सहायक
सहित, अव्य० १ हितसमेत, मित्रसमेत २ संगसमेत
सही, अव्य० भा० वा० निश्चय
सहेली, ना० वा० भा० स्त्री० सखी
सहोदर, ना० वा० सं० पुं० एक पेट से जन्मा
साईं, ना०वा० भा० पुं० स्वामी, मालिक
साउज, ना० वा० भा० पुं० मृगा, हरिना
साकवनिक, ना० वा० भा० पुं० १ कुंजड़ा, साग बेचने वाला २ बिसाती
साखामृग, ना० वा० सं० पुं० वानर
साखोच्चार, ना० वा० सं० पुं० वंशावली कहना

सागर, ना० वा० सं० पुं० समुद्र
साज, ना० वा० भा० पुं० १ सामग्री २ सजव
साढ़ेसाती, ना० वा० भा० पुं० शनीचरी दशा
साथरी, ना० वा० भा० स्त्री० आसनी
साखा, ना० वा० भा० स्त्री० १ डार २ बहुतप्रकार से विचार
सादर, ना० वा० सं० पुं० आदरपूर्वक
साधक, ना०वा०वि०सं० पुं० साधनसमेत, उपाययुक्त
साधक, ना० वा० सं० पुं० उपाय, तदबीर
साधा, ना० वा० वि० मिलाया
साधु, ना०वा०सं० पुं० १ सज्जन, भलाआदमी २ अच्छा ३ मोक्ष पाने की इच्छा रखनेवाला
साधुमत, ना०वा० सं० पुं० शिष्टाचार, अच्छाव्यवहार
साध्य, वि० साधने के योग्य
सान, ना० वा०भा० पुं० १ बाढ़, तेज करना २ मिलाना, आदरमान
साती, ना०वा०वि० भा० स्त्री० मिली
सापत, क्रि० वि० शाप देताहुआ
साबर, ना० वा० सं० पुं० किरातके भेप में शिवकृतादि मन्त्र
सामध, ना० वा० सं० पुं० समधियों

का मिलना
सायक, ना० वा० सं० पुं० शायक, बाण, तीर
सायुज्य, ना० वा० सं० नपुं० ब्रह्ममें लीन
सारद, ना० वा० भा० स्त्री० १ सरस्वती २ सार देनेवाला
सारदी, ना० वा० सं० स्त्री० जो वस्तु शरदऋतु में होती है
सारस, ना० वा० सं० पुं० एक चिड़िया
सारा, वि० ना० वा० भा० पुं० १ पाला, पोपा २ किया
सारी, ना० वा० सं० स्त्री० मैना
सारंग, ना० वा० सं० पुं० १ धनुष २ भौंरा
साल, ना० वा० सं० पुं० १ दुःख २ शोभा ३ घर
सालक, ना० वा० सं० पुं० दुःखदायी
साली, ना० वा० सं० पुं० १ धान २ शोभायुक्त ३ संयुत
सावक, ना० वा० सं० पुं० शावक, बच्चा, चिड़िया का बच्चा
सावकरन, ना० वा० भा० पुं० श्यामकर्ण, काले कानवाला घोड़ा
सावकाश, ना० वा० भा० पुं० काम से छुट्टी
सास्वत, ना० वा० सं० पुं० अमर
सिकता, ना० वा० सं० स्त्री० बालू

सिखा, ना० वा० भा० पुं० १ शिक्षा २ शिष्य, चेला
सिख, ना० वा० भा० स्त्री० १ चोटी २ दीया का टेम
सिखिनी, ना० वा० सं० स्त्री० मोरनी
सित, गु० वा० सं० पुं० स्वेत, सफ़ेद
सिथिल, ना० वा० सं० पुं० ढीला
सिद्ध, ना० वा० वि० सं० पुं० कृ० १ अणिमादि सिद्धि २ मुक्त ३ सिधारा
सिधारी, वि० गई, सिधारना, जाना
सिधि, ना० वा० सं० स्त्री० १ अणिमादि आठसिद्धि २ काम होना
सिमटे, वि० ना० वा० पुं० ब० व० इकट्ठे, सिमटना
सिय, ना० वा० भा० स्त्री० सीता
सियन, ना० वा० भा० पुं० सीना
सियरे, वि० जूड़े
सिरस, ना० वा० भा० पुं० सिरसबृक्ष
सिरानी, ना० वा० स्त्री० भा० बीती सिराना
सिरावै, क्रि० वा० ठंढाकरे
सिराहिं, क्रि० वा० बीतते हैं
सिरिजा, वि० रचा, बनाया (सं० सृज)
सिलीमुख, ना० वा० सं० पुं० १ बानर २ भ्रमर
सिल्प, ना० वा० सं० पुं० शिल्प, कारीगरी, राजगीरी
सिव, ना० वा० भा० पुं० १ शिव, महादेव २ कल्यान

सिवसैल, ना० वा० भा० पुं० कैलास पर्वत
सिवा, ना० वा० भा० स्त्री० शिवा, पार्वती
सिवि, ना० वा० भा० पुं० शिवि, राजा
सिविका, ना० वा० भा० पुं० पालकी
सिसिर, ना० वा० भा० पुं० शिशिरऋतु
सिसु, ना० वा० भा० पुं० शिशु, लड़का, बच्चा
सिंसुपा, ना० वा० भा० स्त्री० १ सीसोंका पेड़ २ सरीफ़ाका पेड़
सिस्न, ना० वा० भा० पुं० लिंग
सिहाहीं, ना० वा० भा० पुं० १ देखके संतुष्ट होते हैं २ अभिलाष, डाह, सिहाना
सीकर, ना० वा० भा० पुं० छींटा, बूंद
सीत, ना० वा० भा० पुं० शीत १ पाला २ ठंढा
सीदहिं, क्रि० वा० दुःखी होते हैं
सीपी, ना० वा० भा० स्त्री० सुतुही
सुकाल ना० वा० ना० पुं० शृगाल, सियार
सृष्टि, ना० वा० सं० स्त्री० १ संसार २ उत्पत्ति
सुआर, ना० वा० भा० स्त्री० रसोई
सुअंजन, ना० वा० सं० पुं० अच्छा अंजन सिद्धअंजन
सुक, ना० वा० सं० पुं० १ सुग्गा २

सुखदेवमुनि
सुकर्कश, गु० वा० सं० पुं० अतिकठोर
सुकृत, ना० वा० सं० पुं० पुण्य, अच्छीकरनी
सुकृती ना० वा० सं० पुं० धर्मात्मा, अच्छा कार्य्य करनेवाला
सुकेतु, ना० वा० सं० पुं० यक्षविशेष
सुकंठ, ना० वा० सं० पुं० सुग्रीव
सुखमा, ना० वा० सं० स्त्री० अतिशोभा
सुखासन, ना० वा० सं० नपुं० सुखपाल
सुक्र, ना० वा० सं० पुं० १ वीर्य्य २शुक्राचार्य
सुगाइ क्रि० वि० लगाकरके
सुघटित, ना० वा० वि० सं० कृ० अच्छाबना
सुचाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुधाई
शुचि, गु० वा० भा० पुं० शुचि, पवित्र
सुचिन्तित, ना० वा० वि० सं० कृ० अतिविचारित
सुजन, ना० वा० सं० पुं० साधु, भलाआदमी
सुजान, ना० वा० सं० पुं० चतुर
सुटुकि, ना० वा० वि० कोड़ामारके
सुठि, गु० वा० भा० पुं० अति, बहुत
सुत, ना० वा० सं० पुं० पुत्र, बेटा
सुदेसु, ना० वा० भा० पुं० सुदेश, १ अंग २ सुन्दरदेश
सुदेसे, ना० वा० वि० पुं० अच्छीवस्तु देनेवाला

सुधा, ना० वा० सं० स्त्री० १अमृत २जल
सुधाकर, ना० वा० सं० पुं० चंद्रमा
सुनयना, ना० वा० सं स्त्री० जनक की पत्नी
सुनासीर ना० वा० भा० पुं० इन्द्र
सुपास, ना० वा० भा० पुं० सुख, आराम, सुबिस्ता
सुभ, ना० वा० भा० पुं० सुबट्ट, सड़क
सुभ, गु० वा० भा० पुं० १ अच्छा २ सुन्दर, शोभा
सुभग, गु० वा० सं० पुं० १ सुन्दर २ ऐश्वर्य
सुभगुन, ना० वा० भा० पुं० ज्ञानबैराग्यादि अच्छेगुण
सुभाउ, ना० वा० भा० पुं० १ संस्कार २ अच्छाभाव
सुभुज, ना० वा० सं० पुं० सुबाहुदैत्य
सुभ्र, ना० वा० सं० पुं० सफेद
सुमन ना० वा० सं० पुं० १ फूल २ सुन्दरमन
सुमिरत, क्रि० वि० ध्यानकरताहुआ
सुमृति, ना० वा० भा० पुं० स्मृति ग्रंथ, धर्मशास्त्र
सुमंत्र, ना० वा० सं० पुं० मंत्र, सल्लाह
सुरभि, ना० वा० सं० स्त्री० १ गैया २ सुगन्ध
सुरमुनि, ना० वा० भा० पुं० चिंतामणि
सुररुख, ना० वा० भा० पुं० मंदारआदि पांचबृक्ष

सुरसर, ना० वा० सं० पुं० मानसरोवर
सुरसरि, सुरसरिता } ना० वा० सं० स्त्री० गंगानदी, मंदाकिनी
सुरसेनप, ना० वा० सं० पुं० कार्त्तिकेय
सुरवीथी ना० वा० सं० स्त्री० देवता की राह
सुरा, ना० वा० सं० स्त्री० मदिरा, शराब
सुराई, ना० वा० भा० स्त्री० शूरता, बीरता
सुरुचि, ना० वा० सं० स्त्री० अच्छीरुचि,
सुरंगा, ना० वा० सं० पुं० १ पीतरंग २ लालरंग ३ अच्छारंग
सुलभ, ना० वा० सं० पुं० सुगम
सुवन, ना० वा० सं० पुं० सूनु, पुत्र
सुवसा, ना० वा० सं० पुं० १सुगंध २यश
सुवसिनी, ना० वा० सं० स्त्री० सुहागिनी
सुवेल, ना० वा० सं० पुं० १ समुद्रका किनारा २ पर्वत ३ सुंदरसमय
सुहाई, भा० वा० भा० स्त्री० सुन्दर
सूकरखेत, ना० वा० भा० पुं० वाराहक्षेत्र
सूच, सूचक, सूचत } क्रि० वि० जनाताहुआ
सूत, ना० वा० सं० पुं० १ सारथी २पुराण से स्तुति करनेवाला
सूत्रधार, ना० वा० सं० पुं० पुतरी नचानेवाला

सूनु, ना० वा० सं० पुं० पुत्र
सूप, ना० वा० सं० पुं० १दाल२ब्याज
सूपकारक, ना०वा०सं०पुं० रसोइया, रसोई करनेवाला
सूल, ना०वा०भा० पुं० शूल, १दुःख, त्रिशूल
सेतु, ना० वा० सं० पुं० १ पुल,बांध २ मर्य्यादा
सेनप, ना० वा० सं० पुं० सेनापति
सेला, ना०वा०भा०पुं० बरछी,भाला
सेवी, ना० वा० सं० पुं० सेवक,सेवा करनेवाला
सेष, ना० वा० भा० पुं० १ शेषनाग २ थोड़ा, बाकी
सैल, ना० वा० भा० पुं० पर्वत
सैलजा, ना० वा० भा० स्त्री०पार्वती, गिरिजा
सैलराज, ना०वा०भा०पुं० हिमालय
सोचनीय, ना० वा० भा० पुं० सोचने के योग्य
सोधा, ना० वा० वि० पुं० भा० शुद्ध किया
सोधेउ, ना० वा० वि० भा० पुं० खोजा, तलाश किया
सोन, ना० वा० भा० पुं० १ सोनभद्र नदी २ लाल ३ सोना
सोनित, ना०वा० भा० पुं० लोहू,रक्त
सोपान, ना० वा० सं० स्त्री० सीढ़ी
सोपि, सर्व ना० अव्य० भूठ, भी

सोपी, सर्वनाम, अव्य० वह भी
सोम, ना० वा० सं० पुं० चंद्रमा
सोरा, ना० वा० भा० पुं० आवाज़
सोवत, वि० पुं० भा० सोता हुआ
सोह, ना० वा० भा० स्त्री० शोभा
सोहमस्मि, वाक्य, वही मैं हूं
सौधाई, ना० वा० भा० स्त्री० अच्छा समय
सौच, ना० वा० सं० पुं० १ शुद्धता २ दंडकवन आदि
सौध, ना० वा० सं० पुं० मंदिर
सौमित्रि, ना० वा० सं० पुं० सुमित्रा का बेटा लक्ष्मण
सौरभ, ना० वा०सं०पुं० आमकापेड़
सौरज, ना० वा० सं० पुं० शूरता
सं० अव्यय शं० कल्याण, भला
संकट, ना० वा० सं० पुं० १ मूर्च्छा २ विपत्ति
संकर, ना० वा० पुं० भा० १ शिव २ महादेव, मिला हुआ
सकाश, ना० वा० सं० पुं० तुल्य, बराबर
संकुल, ना० वा० सं० पुं० पूर्ण, भरा, बिलकुल
संगा, ना०वा०भा०पुं० १संबन्ध२राग
संग्रह, ना०वा०सं०पुं०अंगीकार,लेना
संघट, ना० वा० सं० पुं० संयोग
संवर्पन, ना० वा० सं० पुं० रगर
संघात, ना० वा० सं० पुं० १ समूह

२ संबंध
संयम, ना० वा० सं० पुं० नियम
संजात, वि०सं०क्रु०उत्पन्न, पैदाहुआ
संयुग, ना० वा० सं० पुं० युद्ध,लड़ाई
संयोग, ना० वा० सं० पुं० उपाय, तदवीर
संतत, अव्य०निरंतर,सर्वदा,सब दिन
संदोह, ना० वा० सं० पुं० समूह
संधाने, ना० वा० भा० पुं० जोड़ा
संपन्न, वि० सं० क्रु० १ युक्त २ धनी
संपुट, ना० वा० सं० पुं० १ हाथ जोर के २ डब्बा
संभव, ना० वा० सं० पुं० जन्म, उत्पत्ति
संभावति, वि० सं० क्रु० अतिआदर व मान किया गया
संभूत, वि०सं०क्रि०उत्पन्न, पैदाहुआ
संभ्रम, ना० वा० सं० पुं० १ वेग, जल्दी, २ भ्रम, धोखा, ३ उत्साह
संमत, ना०वा०वि०सं० पुं० सलाहसे
संबल, ना०वा०सं० पुं०राहका खरचा
संबुक, ना० वा० सं० पुं० घोंघा
संसर्ग, ना० वा० सं० पुं० संगति
संसृति, ना०वा०सं०पुं०संसार,दुनिया
सांति, ना०वा भा० पुं० शांति,शमन
सांसत, ना०वा०पुं०भा० १दंड२पीड़ा
सिंगरौर, ना० वा०भा० पुं०शृंगबेरपुर
सिंघल, ना० वा० पुं० भा० उपद्वीप विशेष